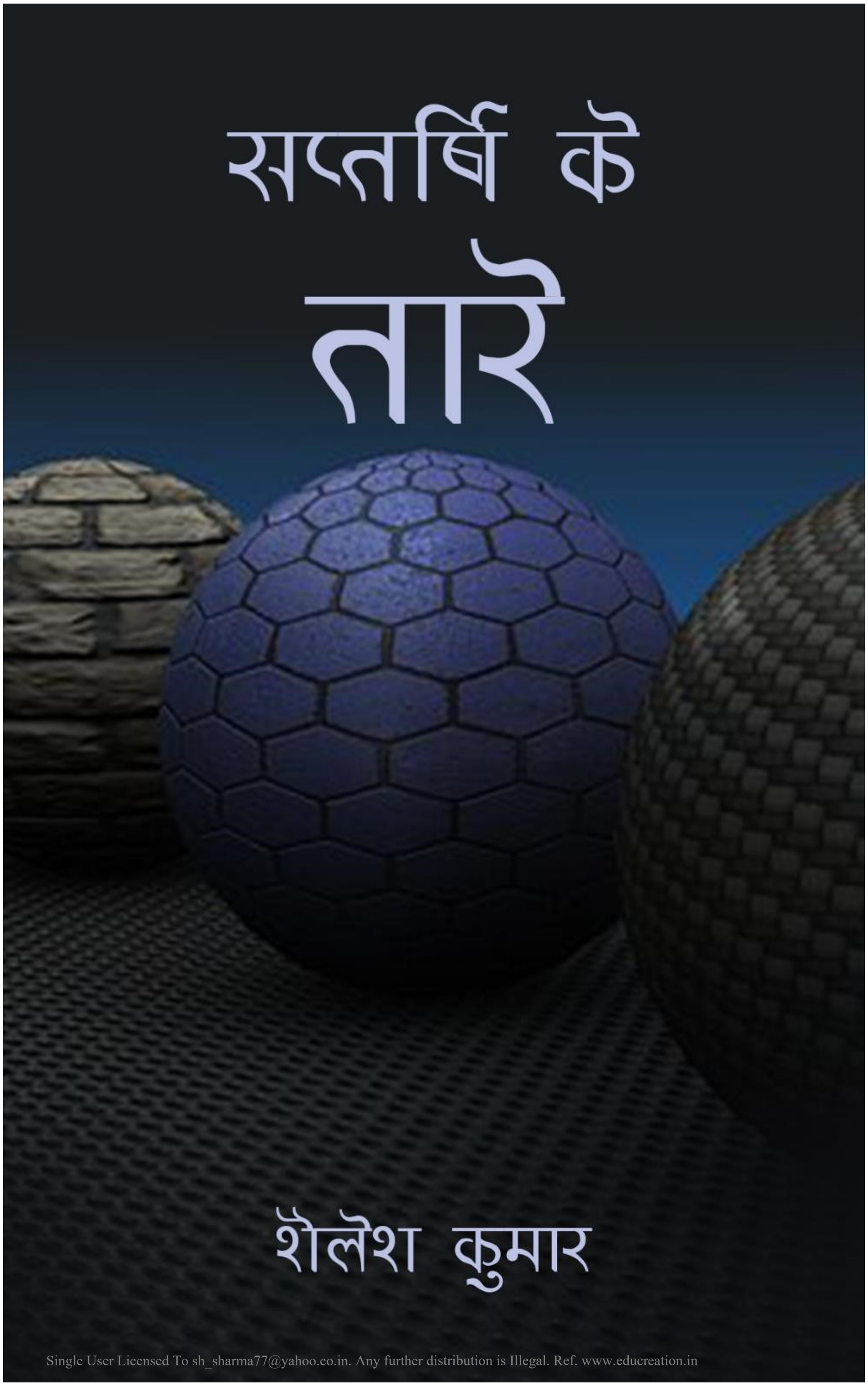

Single User Licensed To sh_sharma77@yahoo.co.in. Any further distribution is Illegal. Ref. www.educreation.in

सप्तर्षि के तारे

Single User Licensed To sh_sharma77@yahoo.co.in. Any further distribution is Illegal. Ref. www.educreation.in

Publishing-in-support-of,

EDUCREATION PUBLISHING

RZ 94, Sector - 6, Dwarka, New Delhi - 110075
Shubham Vihar, Mangla, Bilaspur, Chhattisgarh - 495001

Website: *www.educreation.in*

© Copyright,2018, Shailesh kumar

All rights reserved. No part of this book may be reproduced, stored in a retrieval system, or transmitted, in any form by any means, electronic, mechanical, magnetic, optical, chemical, manual, photocopying, recording or otherwise, without the prior written consent of its writer.

ISBN: 978-93-88719-36-0

Price: ₹ 215.00

The opinions/ contents expressed in this book are solely of the author and do not represent the opinions/ standings/ thoughts of Educreation.

Printed in India

Single User Licensed To sh_sharma77@yahoo.co.in. Any further distribution is Illegal. Ref. www.educreation.in

सप्तर्षि के तारे

शैलेश कुमार

EDUCREATION PUBLISHING
(Since 2011)
www.educreation.in

Single User Licensed To sh_sharma77@yahoo.co.in. Any further distribution is Illegal. Ref. www.educreation.in

Single User Licensed To sh_sharma77@yahoo.co.in. Any further distribution is Illegal. Ref. www.educreation.in

सप्तर्षि के तारे
लघु कथा संकलन

शैलेश कुमार

Single User Licensed To sh_sharma77@yahoo.co.in. Any further distribution is Illegal. Ref. www.educreation.in

पूज्य पिता जी श्री अरुण जी शर्मा और भारत माता को गुलामी के बंधन से आजाद कराने के लिए अपने प्राणो के आहुति देने वाले उन सभी क्रांतिकारियों को समर्पित है,जिन्हे हम भूल गए

Single User Licensed To sh_sharma77@yahoo.co.in. Any further distribution is Illegal. Ref. www.educreation.in

भूमिका

पटना से प्रकाशित हिन्दी साप्ताहिक "तरुण भारत " के संपादक स्वर्गीय पंडित नागेश्वर प्रसाद शर्मा पर अंग्रेजी हुकूमत के खिलाफ साज़िश और क्रांतिकारी गतिविधियों में शामिल होने के कारण राजद्रोह का मुकदमा चलाया गया |21 जून 1924 को इसका फैसला आया और उन्हें मौत की सजा सुनाई गई |परन्तु अंग्रेजो के इन दमनकारी फैसलों से न आजादी के दीवाने कम हुए और न लोगो में आजादी की दीवानगी|

देश के प्रति वही अमर योगदान और पत्रकारिता का जजबा सूक्ष्म गुणसूत्रों के माध्यम से पीढ़ी दर पीढ़ी भ्रमण करता हुआ लेखक की लेखनी के अंदर ज्यादा दिनों तक सुषुप्तावस्था में न रह सका और सूचना तंत्र (आईटी)की पढाई व इस व्यवसाय में व्यस्तता के बावजूद भी राष्ट्रवादी लेखन के प्रति इनका रुझान बना रहा | लेखक व क्रान्तिकारी, स्वर्गीय पंडित नागेश्वर प्रसाद शर्मा के व्यक्तित्व और आदर्शो का लेखक(उनके पर-पौत्र) की लेखनी पर स्पष्ट प्रभाव परिलक्षित होता है |

मानव आज जहा है वहाँ प्रारम्भ में ही नहीं पहुँच गया था इसके लिए उसे बड़े-बड़े संघर्षो से गुजरना पड़ा और उन्ही संघर्षो के अंशो का समूह है ये पुस्तक "सप्तर्षि के तारे"|मानव ने जिस दिन से भाषा द्वारा अपने भावों की अभिव्यक्ति आरम्भ की होगी, संभवतः उसी दिन से उसने कहानी कहना और सुनना भी आरम्भ कर दिया होगा |कहानी विधा की परंपरा दस हजार सालो से कम पुरानी नहीं है बल्कि इससे भी अधिक हो सकती है |ऋग वेद में संकलित पुरुर्वा और उर्वशी की कहानी भी इसी यात्रा का प्रारंभिक पड़ाव है | "सप्तर्षि के तारे" पुस्तक के अधिकांश कहानियों का आधार मानव जीवन के सुख ,दुःख ,पीरा और वेदना

Single User Licensed To sh_sharma77@yahoo.co.in. Any further distribution is Illegal. Ref. www.educreation.in

है साथ ही जीवन को झकझोर देने वाली मार्मिकता है | इन कहानियों में लेखक का सामाजिक सरोकार , जीवन के प्रति घोर आस्था और सृजनशीलता की अपार क्षमता में विश्वास दिखाई देता है |इस पुस्तक की कहानियाँ जीवन की विध्वंसात्मक शक्तिओ पर बार -बार कुठाराघात करती है |

योगेश कुमार शर्मा

Single User Licensed To sh_sharma77@yahoo.co.in. Any further distribution is Illegal. Ref. www.educreation.in

क्रम

क.	अनुक्रम	पृष्ट
1	बारिश की बुँदे	1
2	तीन कप चाय	10
3	अपरचित -परचित	26
4	अधूरी शाम	38
5	चांदी की छड़ी	52
6	छोटा भालू	68
7	सप्तर्षि के तारे	80

Single User Licensed To sh_sharma77@yahoo.co.in. Any further distribution is Illegal. Ref. www.educreation.in

Single User Licensed To sh_sharma77@yahoo.co.in. Any further distribution is Illegal. Ref. www.educreation.in

बारिश की बुँदे

बड़े शहरो में नहीं दिखती है परन्तु छोटे शहरो और गाँव में आज भी आटे की चक्की देखने को मिल जाती है |चक्की के एक सिरे से साबुत और हिश्ट् -पुष्ट गेहू के दानो को डाल दिया जाता है और कुछ समय बाद एक चक्र से गुजरते हुए चक्की के दूसरे सिरे से वो गेहू निकल जाता है |अब उसका कोई आकर नहीं है लम्बाई ,चौड़ाई ,मोटाई कुछ भी नहीं ,रंग भी बदल गया है |इंसान ने बहुत मेहनत की इस चक्की को बनाने में ,पर मेरे विचार से इंसान की क़ाबलियत उस दिन सिद्ध होगी, जिस दिन वो इसका उल्टा भी बना दे |उस चक्की के द्वारा इंसान को अपने वास्तविक रूप में वापस लाया जा सकता हो ,जिसे वो जीवन के चक्र से गुजरने के बाद खो दिया है।

प्रति दिन हजारो लोग गावों और छोटे शहरों से महानगरों की तरफ भाग रहे है, कुछ अपनी महत्वाकांक्षा के लिए ,कुछ रोजी -रोटी के लिए, कुछ कर्ज उतारने के लिए, कुछ नेता बनने के लिए ,कुछ अभिनेता बनने के लिए और कुछ घर में अपने माता -पिता या पत्नी से लड़कर शांति के खोज में महानगर की तरफ निकल जाते है |इन्ही हजारों लोगो में एक आदमी है रामू ,सारे गाँव वाले और जान पहचान वाले उसे इसी नाम से बुलाते है परन्तु इसकी माँ ने बहुत प्यार से इसका नाम रामप्रसाद रखा था ।किसी महान लेखक ने कहा था की "नाम में क्या रखा है "पर मेरे ख्याल से नाम में बहुत कुछ रखा है अमीर और दबंग लोगो के नाम भी लम्बे चौड़े और बहुत भारी होते है जैसे वीरेंद्र प्रताप सिंह ,जगदीश्वर प्रताप यादव ,इत्यादि ।गरीबो के नाम भी उनकी तरह छोटे-मोठे और हलके फुल्के होते है जैसे जग्गू,कल्लू, रामू , श्यामू इत्यादि ।

Single User Licensed To sh_sharma77@yahoo.co.in. Any further distribution is Illegal. Ref. www.educreation.in

एक साल पहले गाँव में ऐसी बाढ़ आयी की पूरा गाँव तबाह हो गया ।इस बाढ़ ने छोटे- मोटे किसान और मजदूरों की कमर तोड़ दी | रामू के पास ज़मीन नहीं थी वो दुसरो के ज़मीन पर मजदूरी कर के अपनी पत्नी और चार बच्चो का गुज़ारा करता था ।खानदानी संपत्ति के नाम पर उसके पास एक छप्पर का घर था जो इस साल बाढ़ में गंगा मैया के भेंट चढ़ गयी ।रामु की उम्र 35-40 की होगी , मध्यम कद , गठा हुआ शरीर और रंग सावला ,चेहरे पर काली उजली दाढ़ियों का जमावड़ा और ललाट पर लम्बी लम्बी रेखाएं ,35-40 के उम्र में ही वो एक वरिष्ठ नागरिक की तरह दिखता है रामू की पत्नी जमुना सुबह से शाम तक या तो घर के काम में लगी रहती है या फिर बच्चो के देखभाल में । एक दिन जमुना ने बड़े चिंतित मुद्रा में रामू से बोला ,यहाँ गुजारा होना अब मुश्किल है खेतो में काम नहीं है रहा सहा एक घर था वो भी बाढ़ में बर्बाद हो गया ,शुक्र है भाई का जो विपत्ति में हमारा साथ दे रहा है पर कब तक | रामू ने कहा तुम सही कह रही हो पर मै क्या करुँ,जमुना ने कहा सुना है शहर में खूब काम मिलते है और अच्छे पैसे भी ,कहो तो भाई से बात करुँ ,उसके कुछ जानने वाले शहर में रहते है , रामू ने कहा करो अब वैसे भी यहाँ क्या रखा है कुछ दिनों के बाद ही रामू अपने परिवार के साथ शहर चला गया और वहाँ बहुमंजिल इमारतों में मजदूरी का काम करने लगा | महानगरों के बहुमंजिल इमारते और आँखों को चकाचौंध कर देने वाली रौशनी के बीच कुछ तंग गालियां और बस्तिया भी है जहा रामु जैसे हज़ारो परिवार रहते है और अपना गुज़र बसर करते है| इन तंग गलियों में जिंदगी बहुत सिमट कर रहती है यहाँ पीने के पानी के लिए लम्बी लम्बी लाइने लगती है छोटे से एक ही कमरे में अनाज के बोरियों की तरह कई लोग रहते है ।इन बस्तियों में आये दिन नालियों के कचरे और पानी सड़क पर धरना देते रहते है ।सुबह- सुबह इन बस्तियों में खूब चहल पहल रहती है हजारो की संख्या में लोग घर से काम पर जाने की लिए निकलते है दिन

Single User Licensed To sh_sharma77@yahoo.co.in. Any further distribution is Illegal. Ref. www.educreation.in

भर सन्नाटा छाया रहता है और शाम को यहाँ फिर रौनक आ जाती है जब हजारो की संख्या में लोग घर वापस आते है |आज कई महीनो के बाद जमुना के हाथ रामू ने पैसे लाकर दिए है जमुना बहुत खुश है उसकी ख़ुशी के सामने बहुमंजिल इमारतों की चमकती हुई रोशनी फीकी पर गई है ।बच्चे भी खुश है बहुत दिनों बाद आज रामू उनके लिए बाजार से चॉकलेट और मिठाइयां लेकर आया है ।किसी ने अच्छे दिन का वादा किया था और वो रामू के लिए सही हो गया | रामू कमाता था जमुना उन्ही पैसो से घर चलाती थी और थोड़ा बहुत बचा भी लेती थी कहती थी गांव जाकर फिर से उस घर को बनवाएगी जो बाढ़ में बह गया था | ये सिलसिला दो- तीन वर्षो तक चलता रहा ,जमुना के दो बच्चे पास के सरकारी स्कूल में पढ़ने जाते थे बाकि के दो छोटे थे सो घर पर ही रहते थे ।एक दिन अचानक किसानो का आंदोलन शुरू हो गया ।जिन जमीनों पर बहुमंजिल इमारते बन रही थी किसान उनका घेराव करने लगे , तोड़ -फोड़ करने लगे आगजनी होने लगी ।किसानो की मांग थी की उन्हें उनके जमीन का पूरा मुआवजा दिया जाये ।

रामू खाना-खा रहा था और जमुना उसके पास बैठी थी । रामू ने कहा कि लगता है समय फिर से बदलने वाला है ।जमुना ने पूछा क्या हुआ सब ठीक तो है , रामू ने दबे आवाज़ में कहा है किसानो ने मुआवज़े के लिए आंदोलन कर दिया है सारे काम बंद हो रहे है लगता है हमारा काम भी बंद हो जायेगा ।जमुना का चेहरा मुरझा गया ,फिर क्या होगा और एक प्रश्नो की फ़ौज लाकर उसने रामू के सामने खड़ी कर दी ।इतनी बड़ी फौज का सामना वो अकेले नहीं कर सकता था सो उसने आत्मसमर्पण कर दिया और खाना छोड़ कर उठ गया ।

बारिश के बाद की हरियाली आँखों को सुकून देती है और आत्मा को प्रसन्नता, पर थोड़ी देर के लिए ,जैसे ही सूरज की प्रखर किरणे धरती पर परती है, ये हरियाली समाप्त हो जाती है ।हमारे जीवन

Single User Licensed To sh_sharma77@yahoo.co.in. Any further distribution is Illegal. Ref. www.educreation.in

को पूर्ण करने के लिए सूरज की प्रखर किरणों की उतनी ही आवशयकता है जितनी बारिश के बाद के हरियाली की |रात का अँधेरा उतना ही आवशयक है जितना दिन का उजाला | जहाँ तक समय सीमा की बात है तो वो विधाता के हाँथ में है जिस तरह रात और दिन के समय सीमा का निर्धारण हम नहीं कर सकते है उसी प्रकार अच्छे दिन और बुरे दिन के समय सीमा का निर्धारण भी हम नहीं कर सकते है इसका निर्धारण सिर्फ विधाता ही कर सकता है।

आज रामू अपने खाने का डब्बा लेकर दोपहर में ही घर आ गया ।कमरे में जमुना अपने छोटे- मोटे सामानो को व्यवस्थित करने में व्यस्त है ।गंगू और बल्लू अभी स्कूल से नहीं आये है बाकि दो ,छोटू और पल्लू बाहर खेलने में व्यस्त है । जमुना रामू को देख कर बिना बोले सबकुछ समझ गई और उसे पीने के लिए पानी दिया ।जब भी रामू शाम को घर लौटता था तो उसे देख कर जमुना का चेहरा खिल जाता था वो खुश हो जाती थी पर आज रामू अपने साथ हजारो सवाल लेकर आया है जिसका जवाब दोनों में से किसी के पास नहीं है शायद इसलिए वो दोनों ही आज खामोश है ।थोड़ी देर में गंगू और पल्लू स्कूल से आ गए और उनके साथ छोटू और मल्लू भी | रामू को देख कर बच्चे खुश हो गए और उनसे बाते करने लगे | रामू हर दिन घर आते समय बच्चो के लिए 2 -4 रुपये की चॉकलेट ले लेता था आज भी वो लाया है बच्चे चॉकलेट लेकर खेलने चले गए ,रामु चेहरे पर गमछा रख कर सो गया और जमुना अपने काम धाम में व्यस्त हो गई |जब हिरन को ये पूर्ण विश्वास हो जाता है की अब वो शेर से नहीं बच सकती है अब उसे शेर का भोजन बनाना ही पड़ेगा तो वो अपने चेहरे को पेड़ के झाड़ी में छिपा लेती है, इस लिए नहीं की शेर उसे नहीं देख सके, बल्कि इसलिए की वो शेर को न देख सके | रामू और जमुना की हालत अभी उसी हिरन जैसी थी |

Single User Licensed To sh_sharma77@yahoo.co.in. Any further distribution is Illegal. Ref. www.educreation.in

हर दिन उस एक छोटे से कमरे में रहने वाले छः लोगो की खट्टी मीठी बाते दीवारे कान लगाकर सुनती थी पर आज यहाँ सन्नाटा है| अब हर सुबह एक निराशा के साथ आती है की आज भी रामू घर पे है कोई काम नहीं मिला और हर शाम एक आशा के साथ आती है कि शायद कल कोई काम मिल जायेगा |आज भी भारत के करोड़ो लोगो की जिंदगी रोज कामना और रोज खाने वाले अर्थशास्त्र के नियम पे चलती है | रोजगार का कद इतना बढ़ गया है की हर इंसान के लिए इसे पाना ईश्वर के प्राप्ति जैसी बात हो गई है|

रामू आज 10 दिनों से घर पे बैठा है जमुना ने जो कुछ पैसे बचा कर रखे थे अब वो भी ख़त्म होने वाले है | रामू बहुत परेशान स्वर में जमुना से कहता है यहाँ काम तो कुछ मिल नहीं रहा है ऊपर से रोज का खर्च ,सोंचता हु वापस गाँव चला जाऊ |जमुना ने झुंझलाते हुए कहा, गाँव में कौन सी तुम्हारी हवेली है एक छोटा सा घर था वो भी बाढ़ में बह गया |खेती के लिए कोई ज़मीन नहीं है दूसरे के खेतो में कभी काम मिलता है कभी नहीं | रामू झल्लाते हुए बोला तो क्या करूँ ,कोई काम नहीं है उसपर से चार -चार बच्चों का बोझ ।जमुना सब कुछ बर्दास्त कर सकती है पर उसके बच्चे को कोई बोझ कहे ये बर्दास्त नहीं कर सकती है ।उसने अपने पुरे अस्त्र- शस्त्र के साथ रामू पे हमला कर दिया, फिर तू - तू मै-मै का दौर शुरू हुआ ,खूब जोरों की आंधी चली , बादल गरजे ,बिजली चमकी और अंत में मूसलाधार बारिश के साथ वातावरण बिलकुल शांत हो गया ।एक माँ के लिए तीन- चार बच्चो का वजन फूल के सामान होता है पर तीन चार बच्चो के लिए एक माँ का वजन पहाड़ से भी जयादा भारी होता है जिसे बच्चे अक्सर उठाने में असमर्थ हो जाते है ।जमुना ने बड़े शांत स्वर में कहा घर में बैठने से बात नहीं बनेगी , घर से बाहर निकलो,लोगो से मिलो ऊपर वाले ने हमारे लिए भी जरूर कुछ सोंचा होगा । रामू ने हामी भरते हुए सर हिलाया । रामू के बगल

Single User Licensed To sh_sharma77@yahoo.co.in. Any further distribution is Illegal. Ref. www.educreation.in

के गाँव का भीमा है जो फल और सब्जी की रेडी लगता है रामू को भी फलों की रेडी लगाने का सुझाव देता है जिसमे शुरू की लागत करीब 15 -20 हजार की है जमुना ने कहा इतने पैसे कहा से लाओगे ,रामू ने कहा भीमा सूद पे पैसे भी दिलवा देगा ।जमुना ने कर्ज लेने से इंकार कर दिया ,रामु ने अपने बहन की शादी में कर्ज लिया था ,जिसे चुकाने में उसकी आधी जिंदगी गुजर गई ,तब से जमुना कर्ज के नाम से ही डरती है|

जमुना ने कहा मेरे पास 8 -10 हजार रुपये है बहुत मुश्किल से बचाया है इसमें कुछ करना चाहते हो तो करो, पर धयान रखना की इन पैसो के अलावा मेरे पास कुछ नहीं है रामु ने कहा इतने पैसे में क्या होगा ,एक छोटी सी फलो की रेडी भी लगाने का खर्च कम से कम 15 हजार रुपये है जमुना ने कहा मुझे नहीं पता पर इससे ज्यादा पैसे मेरे पास नहीं है ।कुछ सोंचते हुए जमुना ने कहा ,मेरे दादा जी की हलवाई की दुकान थी और उनके दुकान के समोसे गाँव में बहुत प्रसिद्ध थी बचपन में मैं दुकान में उनके साथ रहती थी और मिठाईया बनाने में उनकी मदद भी करती थी एक काम करो ,तुम कोई जगह देखो जहा बैठ कर तुम समोसे बेच सको ,मैं 30 -40 समोसे रोज बनाकर तुम्हे दूंगी ,तुम उसे बेचना ,कम से कम घर का किराया और खाना पीना तो चल ही जायेगा । रामू ने इसपर हामी भरी और बहुत उत्साहित होकर घर से बाहर निकला|

आज बहुत दिनों बाद दोनों थोड़े खुश थे अँधेरे कमरे में थोड़ी - थोड़ी प्रकाश की किरण दिख रही थी ।जमुना वो सामग्री याद कर रही थी जो उसके दादा जी समोसा बनाने में इस्तेमाल करते थे कुछ समय के बाद रामू भी आ गया , बोला एक जगह देखी है जहाँ हम अपनी दुकान लगा सकते है भीमा के कहा है महीने का 2 -3 सौ रुपये पुलिस वाले को देनी होगी ।अगले दिन सुबह से ही जमुना समोसे बनाने की तैयारी में लग गई , रामू और बच्चे भी उसकी मदद कर रहे थे घर का माहौल खुशनुमा था जैसे कोई

Single User Licensed To sh_sharma77@yahoo.co.in. Any further distribution is Illegal. Ref. www.educreation.in

शादी ब्याह हो रही हो ।तीन बजे के बाद जमुना समोसे छानने लगी और उसे घेर कर चारो बच्चे बैठ गए, इस इंतजार में की माँ कुछ अच्छी चीज बनाएगी फिर खाने को हमे भी देगी ,पर आज ऐसा नहीं हुआ ,पहला समोसा भगवान को प्रसाद लगा कर बाकी समोसे बांस की बनी एक अच्छी सी टोकरी में रख दी और साथ में एक चटनी का डब्बा रामू के हाँथ में दे दिया ।

आम तौर पे गर्म समोसे स्वादिस्ट होते है पर जमुना द्वारा बनाई हुई समोसे की ये खासियत थी की ये गर्म में तो स्वादिष्ट थे ही पर ठंढे होने पर इसकी स्वाद दुगनी हो जाती थी और साथ में अद्‌भुद तरीके से बनायीं हुई चटनी जो इसकी स्वाद को चौगुनी कर देती थी ।ये कला जमुना ने अपने दादा जी से सीखी थी । रामू के साथ रामू का बड़ा लड़का जिसकी उम्र 13 -14 वर्ष की होगी, एक लालटेन लेकर घर से निकल पड़ा। 15 -20 मिनट तंग गलियों से गुजरने के बाद बहु-मजिल इमारतों का एक जंगल शुरू हो जाता है ।इसी सड़क पे एक पेड़ के नीचे रामू अपने समोसे की टोकरी लेकर बैठ गया ,उसका लड़का गंगू आस -पास की जगह की सफाई करने लगा ,सूरज डूबने से पहले गंगू ने सारी तैयारी कर ली और लालटेन जला लिया ताकि अँधेरे में कोई परेशानी नहीं हो ।यहाँ के बहुमंजिल इमारतों में 24 घंटे काम चलता रहता है हजारो लोग यहाँ दिन रात काम करते है ।रात के 10 बजते - बजते रामू के सारे समोसे बिक गए उसने लालटेन बुझाई और खाली टोकरी लेकर गंगू के साथ घर आ गया । जमुना बहुत बेसब्री से रामू का इंतजार कर रही थी रामू ने कहा तुम्हारे समोसे लोगो को बहुत पसंद आये,सारे समोसे बिक गए ,ये लो पैसे कल थोड़ा ज्यादा बना देना ।

इन सारी प्रक्रिया में बच्चे थोड़े नाराज थे, घर में समोसे बने और उन्हें नहीं मिले ।ये कार्यक्रम महीनो चलता रहा ।रोज समोसे बनते थे बच्चे जी भर के इसकी खुशबू लेते थे पर जी भर के समोसे

Single User Licensed To sh_sharma77@yahoo.co.in. Any further distribution is Illegal. Ref. www.educreation.in

खाने को नहीं मिलता था । समोसे का स्वाद उनके मन में रहता था ,समोसे कुरकुरे होंगे ,समोसे का आलू थोड़ा तीखा होगा ,समोसे के आलू में और क्या -क्या मिला होगा इत्यादि -इत्यादि ,परन्तु समोसे का स्वाद उनके जिह्वा तक नहीं पहुँच पाती थी | माँ बहुत प्रसन्न होती थी तो एक समोसा दे देती थी और कहती थी आपस में बाँट कर खा लो ।पेट तो रोज रोटी और भात से ही भरता था| मुनाफा कम था पर आमदनी इतनी होने लगी थी की घर का खर्च चल जाता था ।हर दिन की तरह आज भी रामू चार बजे के आस पास घर से निकल गया ।आज मौसम खुशनुमा है, हवा में थोड़ी ठंडक है स्वेत बादलो ने आकाश में तरह तरह की आकृतिया बनाई हुई है| रोज की तुलना में आज सड़कों और गलियों में जयादा चहल -पहल दिख रही है । रोज की तरह रामू अपनी दुकान लगा कर बैठ गया|अभी रामू के आधे समोसे ही बिके थे की अचानक अँधेरा सा छाने लगा । रामू ने गंगू से कहा लगता है बारिश आने वाली है जल्दी से समोसे को किसी प्लास्टिक के पन्नी से ढक दो ।गंगू इधर -उधर प्लास्टिक की पन्नी ढूंढने लगा और जब तक वो समोसे को ढकता धनुष की बाण की तरह बारिश की बुँदे आसमान से जमींन पर गिरने लगी ।लाख कोशिश करने के बावजूद पूरी तरह से तो नहीं पर समोसे भींग गए ।थोड़ी ही देर में बारिश थम गई पर थमते थमते रामू के आज का धंधा चौपट कर गई ।रामु ने गंगू से कहा बचे हुए समोसे लेकर घर चलो अब ये नहीं बिकेंगे थोड़े से गीले हो गए है । रामू बहुत उदास था सोंच रहा था आज तो लागत भी नहीं निकली ,जमुना भी बचे हुए समोसे को देख कर थोड़ा उदास हो गई फिर उसे एक उपाए सुझा उसने रात का खाना नहीं पकाया ,अपने बच्चो को बुलाया और साथ में उनके दोस्तों को भी ।समोसे को आग पर थोड़ी सेक लगाई और बच्चो के आगे एक -एक कर परोसने लगी ।बच्चे गपा-गप समोसे खाते जा रहे थे और जमुना एक -एक कर के समोसे परोस रही थी ।बच्चों ने भर-भर पेट समोसे खाये उनके

Single User Licensed To sh_sharma77@yahoo.co.in. Any further distribution is Illegal. Ref. www.educreation.in

चेहरे पे मुस्कान थी ,प्रसनता थी जैसे बरसो की अभिलाषा पूरी हो गई हो ।रामू और जमुना बच्चों के खिलखिलाते चेहरे और अद्‌भुत ख़ुशी देख रहे थे उन्हें पता नहीं था की ख़ुशी उन बेकार चीज़ से भी मिलती है जिसकी बाजार में कोई कीमत नहीं होती है जो बेकार होते है ।थोड़ी देर पहले तक रामू जिस बारिश की बूंदो को कोस रहा था की उसकी आज की कमाई ख़राब कर दी अब उन्ही बारिश के बूंदो का शुक्रिया अदा कर रहा है एक ऐसी ख़ुशी देने के लिए जो उसे पहले कब मिली थी याद नहीं।

****

Single User Licensed To sh_sharma77@yahoo.co.in. Any further distribution is Illegal. Ref. www.educreation.in

तीन कप चाय

तेज बारिश में मै छतरी लिए खड़ा हूँ और भींग रहा हूँ ,सर से लेकर पाव तक मैं गिला हो गया हूँ आते-जाते अनजान लोग मुझे देख रहे है और मुस्कुराते हुए चले जा रहे है | मैं हैरान और परेशान नज़रो से कभी उनकी तरफ देख रहा हूँ कभी अपनी तरफ देख रहा हूँ |अचानक एक तेज आवाज मेरे कानो में आने लगी और मेरी नींद खुल गई ,सुबह के सात बज गए थे और मेरे घड़ी का अलार्म बज रहा था |मै उठकर बिस्तर पर बैठ गया ,कभी छत,कभी अपने हाथ और कभी अपने कपड़ो को देखने लगा ,मै भींगा तो नहीं हूँ |स्वपन और यथार्थ में कोई सम्बन्ध नहीं होता है वो एक स्वपन था पर मैं सोंचने लगा की वो अनजान लोग मुझे देख कर हंस और मुस्कुरा क्यों रहे थे बारिश में भींगना कोई आश्चर्यजनक बात तो नहीं है मैं सोंचने लगा वो लोग कौन थे क्या मैं उन्हें जानता था या फिर वो मुझे पहचानते थे |इसी उधेर-बुन में मै बैठा था की अचानक मुझे याद आया की सपने वाली बारिश में मैं अपने छाते को बंद किये बारिश में खरा भींग रहा था मेरी इस बेवकूफी को देख कर शायद लोग मुस्कुरा रहे थे | कदाचित् अमित स्वभाव से एक निराशावादी व्यक्ति है परन्तु हठी और अत्यंत ही जुझारू |जब मैं उसके व्यक्तित्व के दूसरे पहलु को देखता हूँ तो वह अत्यंत बेफिक्र और लापरवाह इंसान है |इसे मैं हास्यपद कहना अनुचित नहीं समझूंगा की मनुष्य जैसा बुद्धिजीवी प्राणी जिसे खुद ही अपने प्रवृति के बारे में पूरी जानकारी नहीं होती है वो दुसरो के प्रवृति को जानने में उलझा रहता है |

अब बिस्तर का मोह त्याग दो नहीं तो ऑफिस में लेट हो जाओगे फिर मुझे मत कहना मेरे कारण लेट हो गए |अमित की पत्नी भावना अपने दोनों बच्चे मिहिर और महिमा जिनकी उम्र पांच

Single User Licensed To sh_sharma77@yahoo.co.in. Any further distribution is Illegal. Ref. www.educreation.in

वर्ष और आठ वर्ष है को स्कूल भेज कर ,अपने पति को ऑफिस भेजने की तैयारी में लगी है |ऑफिस के लिए तैयार होते हुए अमित ने कहा ,आज मैं ऑफिस से थोड़ा लेट आऊंगा ,अभिनव के शादी की सालगिरह है उसने बुलाया है ,तुम्हे भी चलना है तो चलो ,बच्चो को भी ले लेंगे इसी बहाने थोड़ा घूमना भी हो जायेगा ,बच्चे भी कह रहे थे बहुत दिनों से कही बाहर घूमने नहीं गए है |भावना ने कहा बच्चों का होमवर्क करना है और घर में भी बहुत काम है ,तुम ही चले जाओ ,वैसे अभिनव कौन है ,आपके ऑफिस में काम करता है ? अमित ने कहा नहीं मेरे साथ स्कूल और कॉलेज में था बहुत अच्छा और पुराना मित्र है |

इस भाग दौर के शहर में लोगो की जिंदगी बस के कंडक्टर के तरह हो गई है रोज का सफर पर जाना कही नहीं |हजारो के भीड़ में मैं भी चल रहा हूँ मुझे क्या चाहिए ,मुझे क्या मिला इसका अब यथार्त से कोई खास सम्बन्ध नहीं है |हर इंसान की इच्छा होती है उसकी कोई महत्वाकांक्षा होती है ये बात और है की परिस्थितिया ,इच्छा और महत्वाकांक्षा को बदलते वक्त या किस्मत का सहारा लेकर दबा देती है |अमित अपने जीवन के वसंत ऋतू में सपने देखने वाला और बहुत ही महत्वाकांक्षी लड़का था पर अब जो उसके पास है वो बिकुल अलग है उसके जीवन में हर चीज आम है खास चीज ये है की वो अब अपनी आम जिंदगी में अपनी सारी इच्छा और महत्वाकांक्षा को भूल चूका है |

अपना रोज का काम खत्म कर अमित ऑफिस से थोड़ा पहले निकला ,सोंच रहा था अभिनव के लिए गिफ्ट में क्या ले जाऊ की पैसे भी ज्यादा खर्च न हो और अभिनव को गिफ्ट अच्छा भी लगे उसने भावना को फोन लगा कर पूछा गिफ्ट में क्या ले लू कुछ बताओ |भावना ने कहा आपका मित्र है आप उसकी पसंद नापसंद जानते होंगे मैं क्या बताऊँ |अमित बोला कुछ बताओ ,फूल तो सब ले जाते है ,कपड़ो में साइज का चक्कर है सोंचता हूँ एक घड़ी ले लू ,पर पांच -छह हजार से कम में हाँथ की घड़ी आएगी नहीं और इतना मेरा बजट नहीं है भावना ने थोड़ी देर

Single User Licensed To sh_sharma77@yahoo.co.in. Any further distribution is Illegal. Ref. www.educreation.in

सोंचा फिर बोली घड़ी ही ले लो पर हाँथ की नहीं दिवार की ,आपके बजट में भी आ जाएगी और आपके मित्र को भी अच्छा लगेगा |भावना की राय सही थी एक अच्छी सी दिवार घड़ी लेकर मैं मैरेज पार्टी के लिए निकल गया |

आकर्षण एक ऐसी मानसिक अवस्था है जो जीवन भर इंसान के साथ रहती है उम्र का कोई भी पराओ हो पर इंसान अपनी पसंद और ना पसंद के साथ ही जीवन जीता है और यही पसंद और ना पसंद उसे जीवन में कुछ हासिल करने के लिए प्रेरित करता रहता है |मुझे उम्मीद नहीं थी की तुम आओगे, भाभी जी और बच्चो को क्यों नहीं लाये, अभिनव ने पुरे गर्मजोशी से अमित को अपने साथ घर के अंदर ले जाते हुए कहा |सीधा ऑफिस से आ रहा हूँ कभी और ले आऊंगा अमित ने अति संक्षिप्त में जवाब दिया |थोड़ी देर मेरे साथ वक्त गुजारने के बाद अभिनव मेहमानो के आवो-भगत में लग गया ,उस पार्टी में आये हुए करीब सभी लोग मेरे लिए अनजान ही थे इसलिए मैंने हाथ में एक कोल्ड ड्रिंक की गिलास लेकर एक कोने में खड़ा हो गया और उस अनजान भीड़ में कोई जान -पहचान वाला ढूंढने लगा | अचानक किसी ने पीछे से मेरी पीठ को छुआ मैंने पीछे मुड़कर देखा तो थोड़ी देर देखता रह गया , मेरे सामने प्रतिभा खड़ी थी उसने मुस्कुराते हुए और व्यंग के भाव में पूछा, कैसे हो अमित बाबू ?मैंने बोला अच्छा हु, तुम बताओ कैसी हो |और फिर हम दोने के बात-चित का सिलसिला शुरू हो गया |मैं काफी खुश था और अच्छा अनुभव कर रहा था क्यों की वहा अब कोई था जिससे मैं बात -चित कर सकता था |

प्रतिदिन हम उन्ही लोगो से मिलते -जुलते है जो हमारे दैनिक जीवन में उपस्थित होते है चाहे वो ऑफिस हो ,आस - पड़ोस हो या फिर घर -परिवार हो ,पर जब आप किसी ऐसे व्यक्ति से मिलते है , जिसकी आपने आशा नहीं की थी तो वो मुलाकात आपको एक अलग ही आनंद देता है |शायद प्रतिभा से मिलकर मुझे कुछ ऐसे ही आनंद की अनुभूति हो रही थी |कुछ समय बाद अभिनव अपनी पत्नी कंचन के साथ आया और हमे डीनर के लिए चलने को कहा |हमलोगो ने साथ में डीनर किया ,उस दौरान पुरानी और बीते हुए बातो का दौर चला जो बड़ा की रोमांचक

Single User Licensed To sh_sharma77@yahoo.co.in. Any further distribution is Illegal. Ref. www.educreation.in

और मजेदार था |डीनर के थोड़ी देर बाद मैं वहा से घर के लिए निकल गया |

रात के करीब बारह -एक बज रहे होंगे ,शहर सोया नहीं था पर ऊँघ जरूर रहा था ,सुनसान सड़कों के किनार बिजली के खम्भे मुस्कुराते हुए सभी आने -जाने वालो को गुड नाईट कह रही थी |कुछ रिक्शेवाले और ठेलेवाले अपने विशाल ड्राइंग रूम में जिसे फुटपात भी कहते है पर बड़े आराम से बैठे है और बीड़ी जला कर मुसीबतो को ठेंगा दिखा रहे थे |कुछ ज़मीन पर लेट कर अपने घर के खटिये को याद कर रहे है जहां वो पेड़ या खुले आसमान के निचे खटिये पर आराम से सोते थे , धीरे -धीरे गांव का शहरीकरण होना शुरू हो गया , लोगो ने घरों में AC और कूलर लगाने शुरू कर दिए और जिनके पास इन उपकरणों को खरीदने के लिए पैसे नहीं थे वो धन कमाने के लिए गाँव छोड़ कर चले गए |

अचानक एक बहुत तेज आवाज़ हुई ,मेरे आँखों के सामने चका -चौंध कर देने वाली रौशनी तेजी से आने लगी |मैंने देखा एक ट्रक पूरी रफ़्तार में डिवाईडर को तोड़ता हुआ मेरी तरफ आ रहा है मैंने अपनी कार को उससे बचाने की कोशिश की पर असफल रहा |खून से लहू- लुहान मेरे आँखों के सामने किसी की धुंधली तस्वीर दिख रही थी पता नहीं वो इंसान था या यमराज |धीरे -धीरे मेरी आंखे बंद होने लगी ,मस्तिष्क में बस यही सवाल आ रहा था ये क्या हो रहा है |

मिहिर और महिमा काफी देर तक अमित का इंतज़ार कर के सो गए ,बच्चो को सुलाने में भावना की भी आंख लग गई |जब आंख खुली तो रात के २.३० बज रहे थे अमित अभी तक घर नहीं आया था भावना ने फ़ोन लगाया पर फ़ोन ऑफ था भावना थोड़ी चिंतित हो गई उसने अमित के दोस्तों को फ़ोन लगाया जिनका कभी कभार घर पे आना जाना होता था पर किसी से कोई जानकारी नहीं मिली |सुरेश जो अमित के ऑफिस में काम करता

Single User Licensed To sh_sharma77@yahoo.co.in. Any further distribution is Illegal. Ref. www.educreation.in

था, कहा भाभी जी परेशान मत होइए रात को दोस्त के घर ही रुक गया होगा सुबह तक आ जायेगा, वैसे अभिनव है कौन पहले इसका कभी नाम नहीं सुना ,भावना ने कहा अमित के बचपन का मित्र है कुछ दिन पहले ही यहाँ आया है सुरेश ने मुस्कुराते हुए कहा बचपन का दोस्त ,तब तो भाभी आप चिंता मत करो आराम से जाकर सो जाओ वो सुबह ही आएगा |

भावना के मन में तरह -तरह की आशंकाए उठ रही थी उसकी शादी को 8 -9 वर्ष हो गए, इन वर्षो में जीवन ने कई रंग दिखाए,कई मौसम दिखाए पर आज पहली बार उसका मन इतना घबराया हुआ और विचलित है अमित छोटी -छोटी खुशियों को बांटने वाला इंसान था उसकी हमेशा इच्छा रहती थी की उसके कारण कोई परेशान न हो ,शायद इसलिए भी भावना ज्यादा परेशान थी अगर अमित अपने दोस्त के यहाँ रुकता तो उसे जरूर फ़ोन कर के बता देता |

पति और पत्नी के सम्बन्ध में कितनी विविधताएं हो सकती है इसका आकलन करना बहुत मुश्किल है यह एक ऐसी गिनती है जो शुन्य से शुरू होकर अनंत तक जाती है इस सम्बन्ध की शुरुआत भले ही आकर्षण से हो परन्तु अंत यक़ीनन समर्पण से होता है |टेढ़ी -मेढ़ी ,ऊपर -निचे पहाड़ी नदी की तरह अपने जीवन के सफर से गुजरती हुई ये सम्बन्ध एक शांत झील में परिवर्तित हो जाती है जहा शांति है ठहराव है |आज शायद बहुत दिनों बाद भावना ने अमित और अपने सम्बन्ध के बारे में इतनी गहराई से सोंच रही थी |सोंचते -सोंचते कब सुबह हो गई पता भी नहीं चला |भावना बहुत परेशान थी अब वो क्या करे कुछ समझ में नहीं आ रहा था |बच्चे उठते ही अमित को ढूंढने लगे और न मिलने पर भावना से पूछा ,माँ क्या पापा कल रात घर नहीं आये थे भावना बिना उनके सवाल का जवाब दिए हुए उन्हें स्कूल के लिए तैयार करने लगी |बच्चों को स्कूल छोर कर भावना जैसे ही घर पे पहुंची उसके मोबाइल की घंटी बजी ,उसने फ़ोन उठाया 'हेलो

Single User Licensed To sh_sharma77@yahoo.co.in. Any further distribution is Illegal. Ref. www.educreation.in

आप भावना जी बोल रही है ' जी हाँ बोल रही हूँ आप कौन,मैं प्रतिभा बोल रही हूँ आप जीतनी जल्दी हो सके सुपर हॉस्पिटल आ जाइये ,हॉस्पिटल का नाम सुनकर भावना के पैरो के निचे से जमीन खिसक गई ,उसके आँखों के सामने अँधेरा छाने लगा, लडख़ड़ाते आवाज में उसने पूछा क्या हुआ ?प्रतिभा ने बोला कल रात अमित का एक्सीडेंट हो गया था फ्रैक्चर और काफी ब्लीडिंग हो गई है | मैं और अभिनव उसके साथ में है खतरे वाली कोई बात नहीं है है बस आप आ जाइये |एक बेचैनी जो कल रात से भावना को न जीने दे रही थी न मरने ,प्रतिभा से बात कर के शांत हो गई ,या कह सकते है की एक ऐसी जोर की आंधी जिसकी मंशा पुरे जंगल को उखाड़ फेकने की थी अचानक शांत हो गई | कुछ ही समय के बाद भावना हॉस्पिटल पहुँच गई |अमित के रूम के बाहर प्रतिभा बैठी थी भावना को देख कर वो खड़ी हो गई और पास आकर बोली आप भावना जी है भावना ने कहा हाँ अमित कैसा है ,प्रतिभा ने कहा पैर टूट गया है शरीर पर चोट है और खून काफी बह गया है |एक छोटी सी सर्जरी हुई है अभी थोड़ी देर में होश आ जायेगा |उसी वक्त अभिनव भी वहा आ गया भावना ने आश्चर्य वयक्त करते हुए पूछा ये कैसे हो गया |अभिनव ने कहा भाभी जी आप परेशान मत होइए ,सब ठीक हो जायेगा कल रात मेरे घर से निकलने के थोड़ी देर बाद ही एक ट्रक अमित के कार से टकरा गई , थोड़ी देर बाद प्रतिभा भी उसी रास्ते से गुजर रही थी तो उसने हमे सूचित किया और हमलोग इसे हॉस्पिटल लेकर आ गए |अमित का मोबाइल बुरी तरह से टूट गया था इसलिए उस वक्त हमलोग आपको घटना की जानकारी नहीं दे पाए |अमित के पैर का ऑपरेशन हुआ है ,दो -तीन घंटे में उसे होश आ जायेगा |भावना ने सर हिलाकर हामी भरी और उन लोगो को बहुत-बहुत धन्यवाद् दिया |उसी वक्त अभिनव की पत्नी कंचन भी आ गई और अमित का हाल चाल पूछने लगी |अभिनव ने कंचन का परिचय भावना से कराया

Single User Licensed To sh_sharma77@yahoo.co.in. Any further distribution is Illegal. Ref. www.educreation.in

|कंचन ने भावना को नमस्ते करते हुए कहा ,आप परेशान मत होइए हम सब लोग आपके साथ है सब कुछ ठीक हो जायेगा |थोड़ी देर बातचीत के बाद अभिनव और कंचन डॉक्टर से मिलने और कुछ दवाइयाँ लेने चले गए |भावना ने प्रतिभा से पूछा की आपने अपना परिचय नहीं दिया |प्रतिभा ने मुस्कुराते हुए कहा मैं,अभिनव ,अमित बहुत पुराने मित्र है हम स्कूल के दिनों से एक दूसरे को जानते है एक समय था जब हम लोग एक ही रेलवे कॉलोनी में रहते थे हमारे साथ- साथ हमारे मम्मी पापा भी एक दूसरे के बहुत अच्छे मित्र थे अक्सर हम लोगो का एक दूसरे के घर आना जाना होता था |भावना ने मुस्कुराकर हामी भरी |प्रतिभा अतीत में विचरण करने लगी और बोली , अमित अपने स्कूल के समय में बहुत अच्छी कविताये लिखता था जब भी हम लोग उसके घर जाते थे तो आंटी कहती थी अमित , अंकल -आंटी को अपने नई कविता सुनाओ और अमित अपनी कविता हमे सुनाता था |उस वक्त मुझे लगता था की अमित भविष्य में कोई लेखक बनेगा ,मेरे पापा अमित के कविताओं के दीवाने थे जब भी हम लोग उसके घर जाते थे पापा अमित के तारीफ की पुल बांध देते थे |इस बच्चे के हाँथ में जादू है इसकी कविताओं में शब्द अपना परिचय खुद देती है और पता नहीं क्या क्या .....लेकिन धीरे -धीरे शब्दों में उसकी रूचि कम होने लगी और अंको में बढ़ने लगी ,उसने कॉलेज में अपना विषय एकाउंट्स रखा |भावना बड़े गौर से प्रतिभा की बातें सुन रही थी |प्रतिभा थोड़ा मुस्कुरा कर बोली उस वक्त मैं अमित से बहुत जलती थी खास कर के उस वक्त जब पापा उसकी तारीफ करते थे |मेरी भी बहुत इच्छा होती थी की मै भी अमित के जैसा लिखूँ और पापा मेरी तारीफ करे |धीरे -धीरे मैंने लिखना शुरू किया जो आज तक चल रहा है |मेरी कुछ पुस्तके भी प्रकाशित हो चुकी है अभी कुछ दिनों पहले इस शहर में आई हूँ, यहाँ पे एक प्रेस ज्वाइन किया है |

Single User Licensed To sh_sharma77@yahoo.co.in. Any further distribution is Illegal. Ref. www.educreation.in

थोड़ी ही देर में अभिनव और कंचन वापस आ गए और कहा ही डॉक्टर ने कहा है की होश आने के बाद बताएँगे की हॉस्पिटल में कितने दिन और रहना पड़ेगा |वैसे रिपोर्ट ठीक है चिंता वाली कोई बात नहीं है भावना ने अपनी घड़ी देखते हुए बोली , बच्चो के स्कूल से आने का वक्त हो गया है मै जाकर उनको ले आती हूँ अभिनव ने तुरंत कहा हां भाभी जी आप जाइये हमलोग यहाँ पे है कंचन ने कहा प्रतिभा तुम क्यों नहीं भाभी जी के साथ चली जाती हो ,बच्चो को लेकर साथ में गाड़ी से चली आना ,नहीं -नहीं मै चली जाउंगी भावना ने संकोच जताते हुए कहा ,पर सभी लोगो के जिद करने पर प्रतिभा भावना के साथ गई |

भावना और प्रतिभा सीधे स्कूल गए और स्कूल के गेट पे बच्चो का इंतज़ार करने लगे |स्कूल की छुट्टी हुई तो बच्चे गेट की तरफ ऐसे भागे जैसे पिंजरे का दरवाजा खुलने पे चिड़िया खुले आकाश में छलांग लगाती है |मिहिर और महिमा को लेकर भावना गाड़ी की तरफ जाने लगी ,इस पांच मिनट के सफर में बच्चो ने पचास सवाल पूछ डाले पर जवाब में भावना सिर्फ हा या ना बोलती रही |बच्चो ये प्रतिभा आंटी है इन्हे नमस्ते करो ,आज हम घर इनके साथ जायेंगे और थोड़ी देर में सभी घर पहुँच गए |भावना ने प्रतिभा को चाय देते हुए कहा,आप चाय पीजिये तब -तक मै बच्चो को कुछ खिला देती हूँ |प्रतिभा चाय पीते हुए कभी दीवारों पे टंगी तस्वीरें तो कभी आलमीरा में रखी छोटी छोटी मूर्तियों को देख रही थी इसी दौरान उसकी नजर टेबल के निचे वाले खाने में रखी एक कॉपी पर परी प्रतिभा ने कॉपी उठा ली और उसके पन्ने पलटने लगी |कुछ पन्नो के उलटने के बाद एक कविता लिखी हुई थी वो उसे पढ़ने लगी |

Single User Licensed To sh_sharma77@yahoo.co.in. Any further distribution is Illegal. Ref. www.educreation.in

खुद को किस्से सुनाता हूँ, कभी हंसी सी आती है कभी सहम सा जाता हूँ

ना राजा है ना रानी है ना परियो की कहानी है
बस बहता हुआ पानी है जिसने ना रुकने की ठानी है
मै कभी इसमें डूब जाता हूँ तो कभी किनारा पाता हूँ
ना रानी जिसकी सुन्दर रूप, ना बुढ़िया जिसकी जादुई सूप
जीवन के बस दो है रूप, कही है छाँवों तो कही है धुप
मै कभी धुप में जल जाता हूँ, तो कभी छाया पाता हूँ

खुद को किस्से सुनाता हूँ, कभी हंसी सी आती है कभी सहम सा जाता हूँ

प्रतिभा को समझते देर ना लगी की ये कविता अमित ने लिखी है |काफी वक्त हो गए थे पर वो अब भी अमित के शब्दों को पहचानती थी |आज उसे अपने पापा की याद आ गई ,वो अमित के कविताओं को सुन कर कितना खुश होते थे और जी भर कर उसकी तारीफ करते थे और मुझे जलाते थे |शायद उन्हें पता था की वो जलन मेरे जीवन के जीने का सहारा बनेगी |जब भी मुझे ऐसा लगता है की मैंने कुछ अच्छा लिखा है उस दिन पापा जरूर आते है मेरे सर पे हाँथ फेरते है और मेरी खूब तारीफ करते है| भावना बच्चो को लेकर कमरे में आ गई, मैंने कॉपी बंद करते हुए कहा चले |थोड़ी देर बाद बच्चों के साथ हम हॉस्पिटल पहुँच गए, अमित को होश आ गया था अभिनव और उसकी पत्नी उसके पास बैठे हुए थे बच्चे अमित को देखते ही उसकी तरफ दौड़े, पापा आपको क्या हो गया, आप यहाँ क्यों हो ,आप घर क्यों नहीं आये ? अमित बच्चो से बात करने लगा |अभिनव ने कहा भाभी अभी डॉक्टर से बात हुई थी कहा है सब कुछ ठीक है एक सप्ताह तक अमित को यही रहना पड़ेगा उसके बाद ही यहा से घर जा पायेगा |भाभी आप परेशान मत होइए अमित यहाँ से बिलकुल ठीक होकर जायेगा |भावना उधेड़ -बुन में लगी हुई थी की घर में बच्चे और हॉस्पिटल में अमित को अकेले कैसे संभालेगी |प्रतिभा

Single User Licensed To sh_sharma77@yahoo.co.in. Any further distribution is Illegal. Ref. www.educreation.in

भावना की उलझन समझ रही थी उसने भावना के पास आकर कहा ,मैं सुबह शाम हॉस्पिटल आ जाउंगी आप बच्चो को स्कूल छोड़ देना और ले आना ,एक सप्ताह की ही तो बात है अभिनव और कंचन भी तो आते जाते रहेंगे |प्रतिभा का रोज 3 -4 घंटे हॉस्पिटल में गुजरने लगा |खूब सारी पुरानी बातें होती थी रेलवे कॉलोनी की ,पुराने शहर की ,दोस्तों की | एक दिन प्रतिभा ने पूछा ,पहले तो बहुत कविताये लिखते थे ,अभी भी लिखते हो या बिलकुल छोड़ दिया , अमित ने कहा ,अब कहा, जिंदगी ने अपने आंकड़ों में ऐसा फसाया है की शब्द के लिए अब वक्त नहीं है |कभी कभार लिख लेता हूँ पर कुछ खास नहीं |तुम्हारी पुस्तक पढ़ी ,अच्छा लिखने लगी हो |अपनी कलम में स्याही थोड़ा और डालो, तब शब्दों के रंग और वज़न थोड़े और बढ़ जायेंगे |
वक्त पहाड़ी नदी की तरह छोटी बड़ी पत्थरो से होकर गुजर रही थी कभी पानी का बहाव तेज तो कभी धीमी |पक्षियों के कलरव के साथ पानी के कल -कल बहने की आवाज दृश्य को मनोरम बना देती थी तो कभी सन्नाटे में पानी के बहने की आवाज दृश्य को भयानक बना रही थी |फिर वो वक्त आया जब नदी ने हजारो फिट की ऊँची पहाड़ से जमीन पर छलांग लगा दी|अमित ने प्रतिभा से पूछा तुमने मेरे प्रस्ताव को ठुकराया क्यों था ?प्रतिभा को इतने अरसे के बाद अमित से इस प्रश्न की उम्मीद नहीं थी |वो मुस्कुराई और बोली जवाब जानना चाहते हो पर मेरी एक शर्त है क्या अमित ने आश्चर्य चकित होकर पूछा |मैं जवाब तुम्हारे पत्नी के सामने दूंगी |जब हिम्मत की टोकरी भर जाये तो मुझे बुला लेना |
एक सप्ताह गुजरते देर न लगी ,अमित हॉस्पिटल से घर चला गया |डॉक्टर ने कहा एक महीने तक घर पर ही आराम करना पड़ेगा उसके बाद वो कही भी आ जा सकता है |अमित के घर पे अभिनव और कंचन का आना जाना बढ़ गया था सप्ताह में एक-दो बार प्रतिभा भी आ जाती थी |धीरे धीरे एक महीना भी निकल गया ,अमित ने ऑफिस भी जाना शुरू कर दिया |भावना के लिए

Single User Licensed To sh_sharma77@yahoo.co.in. Any further distribution is Illegal. Ref. www.educreation.in

बीते 2 महीना काली रात से कम नहीं थी जिसे याद कर के उसके रोंगटे खड़े हो जाते है |पर अब वो काफी खुश है | समय ने अपनी रफ़्तार पकड़ ली ,सभी अपने अपने काम में व्यस्त हो गए |एक दिन शाम को अमित ने भावना से कहा ,कल प्रतिभा आएगी ,कह रही थी सुबह की चाय हमलोगो के साथ पीयेगी |भावना ने कहा अच्छा है बहुत दिन हो गए थे उससे मिले हुए ,बहुत मदद की थी उसने हमारी|शायद अमित के हिम्मत की टोकरी भर गई थी और उसे प्रतिभा को बुलाया था |अमित सोंच रहा था पता नहीं मैंने सही किया या गलत ,ऐसा न हो की इस प्रश्न का उत्तर मुझे महंगा पड़े ,पर उसे भावना पर पूरा विश्वास था वो बहुत ही समझदार और सूझ -बुझ वाली स्त्री थी |अमित के निमंत्रण को पाकर प्रतिभा बहुत खुश थी शायद उसके दिल पर का कोई बोझ हल्का होने वाला था |देर रात तक वो अतीत के चलचित्र में खोई रही, पापा की बातें ,कॉलोनी का दुर्गा पूजा ,दोस्तों के साथ मस्ती ,और वो सारी बातें जिसका अब उसके जीवन या दिनचर्या से कोई लेना -देना नहीं था| वो पल भी याद आया जब अमित ने बहुत मेहनत से अपनी हिम्मत की टोकरी को भर के उसके सामने प्रेम का प्रस्ताव रखा था और वो मुस्कुराते हुए ये कह कर चली गई थी की लडकिया जल्दबाजी में कोई फैसला नहीं करती है कल बताउंगी |प्रतिभा की बड़ी बहन साधना , जिसकी कुछ महीने पहले शादी हुई थी आज अचानक घर आई थी , प्रतिभा उसे देख कर बहुत खुश थी और उससे बहुत सारी बातें करना चाहती थी पर साधना के चेहरे पर एक निराशा थी प्रतिभा ने कारण पूछा पर उसने कोई जवाब नहीं दिया ।रात में साधना माँ से कुछ बातें कर रही थी और सिसक -सिसक कर रो रही थी ,मैंने ध्यान से उसकी बात सुनी, वो कह रही थी की उसका पति कुंदन उसके साथ नहीं रहना चाहता है वो किसी और से प्रेम करता है और उसके साथ ही अपना जीवन बिताना चाहता है ।माँ का परेशान चेहरा और साधना के बहते हुए आंसू को देख कर मेरे सामने प्रेम का बहुत

Single User Licensed To sh_sharma77@yahoo.co.in. Any further distribution is Illegal. Ref. www.educreation.in

गन्दा और वीभत्स रूप सामने आया ,कुछ समय पहले ,जिस प्रेम से हजारो पुष्पों की खुशबु आ रही थी ,अचानक उससे दुर्गन्ध आने लगी |जिस प्रेम के कल्पना मात्र से ,मस्तिष्क खुशियों और उमंगो से भर जाती थी ,आज बहन के आँखों में आंसू देख कर निराशा के सागर में गोते खा रही थी, मुझे प्रेम से घृणा होने लगी थी ।
कल सुबह अमित मिलने आता है और वो उसके प्रस्ताव को ठुकरा देती है |कुछ समय बाद मेरे पिता जी का ट्रांसफर हो जाता है और हमलोग रेलवे कॉलोनी से चले जाते है |धीरे -धीरे प्रतिभा की आंखे भारी होने लगती है और वो गहरी नींद में सो गई आज सुबह थोड़ी पहले हो गई थी प्रतिभा अमित के यहाँ जाने के लिए तैयार होने लगी, उसके मस्तिष्क में हजारो बातें चल रही थी तर्क-वितर्क चल रहा था |आज उसे अपनी बहन साधना की बहुत याद आ रही थी |उसकी बहन ने आज तक शादी नहीं की, उसका पति कुंदन उसे छोड़ कर अपनी प्रेमिका के साथ चला गया ,वो वापस पिताजी के पास आ गई |इस घटना ने चार लोगो की जिंदगी बर्बाद कर दी ,साधना ,मैं,माँ और पिता जी |माँ अपनी बेटी की जिंदगी बर्बाद होते हुए नहीं देख सकी,और कुछ ही महीनो में उसे सभी दुखों और सुखों से छुटकारा मिल गया |पिताजी जब तक जीवित रहे साधना को परिस्थितिओ से लड़ने और जीवन जीने की हिम्मत देते रहे ,परन्तु अपनी बेटी का दुःख उन्हें अंदर ही अंदर दीमक की तरह खाता रहा और एक दिन वो हमदोनो को छोड़ कर इस दुनिया से चले गए |ईश्वर ने हमारे परिवार को किस अपराध की सजा दी ,मुझे आज तक पता नहीं चला |मैं जहां भी जाती हूँ मेरी नजरें साधना को ढूंढती है ,अगर वो जीवित है और मुझसे कभी मिली तो मेरा पहला प्रश्न यही होगा की ,समाज के डर से वो क्यों मुझे छोड़ कर चली गई ,जो पाप उसने किया ही नहीं ,उसकी सजा उसने अपने आप को क्यों दी |
अमित के दुर्घटना के दौरान जब प्रतिभा भावना से मिली और उसके घर पे गई थी, तो वहाँ उसने कुंदन की तस्वीर देखी, जब

Single User Licensed To sh_sharma77@yahoo.co.in. Any further distribution is Illegal. Ref. www.educreation.in

उसने भावना से पूछा ,तो भावना ने कहा ये उसका बड़ा भाई है, उस वक्त न जाने क्यों प्रतिभा को भावना के चेहरे में कुंदन की परछाई दिखने लगी थी |प्रतिभा की सारी पुरानी यादें ताज़ा होने लगी, आँखोँ के सामने माँ, पिता जी और साधना का चेहरा आने लगा, उसे याद आने लगा की किस तरह माँ और पिता जी के जीवन का सूर्यास्त, दोपहर में ही हो गया और साधना समाज के तिरस्कार के डर से घर छोड़ कर चली गई |

क्रोध से उसका चेहरा और आंखे लाल हो गई थी |इसी उधेड़- बुन में वो कब घर से निकली और अमित के घर पहुँच गई पता ही नहीं चला| गाड़ी के हॉर्न की आवाज सुन कर बच्चे घर से बाहर आ गए और प्रतिभा को देख कर अपनी तोतली आवाज में बोले, मम्मी देखो ऑन्टी आई है |भावना मुस्कुराते हुए प्रतिभा का स्वागत किया और उसे घर के अंदर ले आई |कल अमित ने बताया था की आप आने वाली है बहुत ख़ुशी हुई जानकर ,आपने जो हमारी मदद की है वो मैं कभी नहीं भूल सकती हूँ ,आपका एहसान मैं पूरे जीवन में नहीं उतार पाऊँगी | प्रतिभा भावना के चेहरे को देख रही थी उसके चेहरे पर गजब की चमक थी उसकी आँखों में विनम्रता थी और वो बहुत खुश थी प्रतिभा मन ही मन सोंच रही थी की ये इतनी खुश क्यों है क्या अमित ने इसे बताया नहीं है की मैं यहाँ क्यों आई हूँ| अब इसे अपने भाई के पापो का पश्चाताप करना पड़ेगा ,आज मैं इसके पति को इसकी नजरो से इतना गिरा दूंगी की ये जीवन भर उसे हृदये से अपना नहीं पायेगी |जब इसके जीवन में तबाही आएगी तब कुंदन को ये एहसास होगा की उसने मेरी बहन के साथ क्या किया था |

नए मेहमान को देख कर बच्चे उसके पास आ गए उससे बाते करने लगे ,अफ़सोस जताते हुए प्रतिभा बोली मैं आप लोगे लिए चॉकलेट लाना भूल गई |भावना ने तुरंत कहा कोई बात नहीं है आप आ गई यही ख़ुशी की बात है |अमित कही बाहर गए है अभी थोड़ी देर में आ जायेंगे फिर हम सबलोग साथ में चाय पियेंगे

Single User Licensed To sh_sharma77@yahoo.co.in. Any further distribution is Illegal. Ref. www.educreation.in

|प्रतिभा ने इसपर तुरंत हामी भर दी और फिर दोनों में बाते होने लगी |भावना खुले विचार और निश्छल ह्रदय की महिला थी |
कमरे की हर वस्तु गौर से उनकी बाते सुन रहे थे और सोंच रहे थे की आज क्या होगा |सूरज की रौशनी धीरे से खिड़की के परदे को हटा कर अंदर आने और उनकी बातों को सुनने की कोशिश कर रही थी गमले के फूल अपने भवो को सिकोरे हुए कुछ सोंच रहे थे तभी अमित घर के अंदर आता है| इस बार ठंढ नवंबर से ही शुरू हो गई है अच्छी ठण्ड है बाहर |प्रतिभा को देख कर अमित थोड़ा सहम गया ,तुम कब आई |भावना ने कहा थोड़ी देर हो गई,आपका ही इंतज़ार कर रहे थे हमलोग ,आप बैठिये मैं चाय बनाकर लाती हूँ |बच्चे इतवार के छुट्टी का पूरा मज़ा ले रहे थे और खेलने में वयस्त थे अमित इंतज़ार कर रहा था की प्रतिभा कुछ बोलेगी पर वह अचानक सोफे से उठ कर रसोई में चली गई और भावना से बाते करने लगी |थोड़ी ही देर में गरमा -गरम तीन कप चाय टेबल पे आ गई|प्रतिभा ,अमित और भावना तीनो बाते करने में वयस्त हो गए ,बातो -बातो में पता ही नहीं चला की २-३ घंटे कैसे गुजर गए |प्रतिभा अपना पर्स लेकर उठती हुई बोली अब चलना चाहिए ,भावना ने उसे रोकते हुए कहा थोड़ी देर और रुक जाइये दोपहर का खाना खाकर जाइएगा |प्रतिभा ने कहा आज नहीं फिर कभी और वो दरवाजे से बाहर निकल गई, अमित उसके साथ साथ उसे गाड़ी तक छोड़ने गया |मुझे पता है तुम मेरे जवाब का इंतज़ार कर रहे होंगे ,इतना कहते हुए उसने एक कागज़ का लिफाफा अमित को दिया और गाड़ी में बैठ गई
|अमित दिन भर एकांत का इंतजार करता रहा ताकि वो लिफाफे को खोल कर देख सके, पर एकांत नहीं मिली अब सिर्फ रात का ही सहारा था |बच्चे और भावना के सो जाने के बाद अमित छत पे चला गया, लिफाफा खोला उसमे एक पत्र था |

Single User Licensed To sh_sharma77@yahoo.co.in. Any further distribution is Illegal. Ref. www.educreation.in

प्रिये अमित

मैं बिलकुल अकेली हूँ ये मेरी विशेषता है की मैं बिलकुल अकेली हूँ | मेरे पिता ने मेरे जीवन पर सबसे बड़ा प्रभाव डाला है यो तो वो अब बहुत दूर है परन्तु मेरे जीवन में उनकी उपस्थिति आज भी व्याप्त है प्रारम्भ के दिनों में मैं कुछ बहुत निकट और घनिष्ट साथियो से घिरी हुई थी जिसमे तुम्हारा स्थान प्रथम था किन्तु वो एक प्रेम भरी सहचरी थी जो सदा ही मेरे साथ रही और सदैव ही मेरे सामने किसी नए सौंदर्य का स्पस्टीकरण करती रही |

ओस की बूँदे बड़ी-बड़ी चट्टानों को भिगो देती है विशाल वृक्षों को धो डालती है पर किसी प्यासे की प्यास नहीं बुझा पाती है | वृक्षों का लगाओ फलो से तबतक होता है जब तक वो कच्चे और खट्टे होते है ,जब फल पक जाती है और उसमे मिठास आ जाती है वृक्ष उसे अपने से दूर कर देता है नदिया अपने मीठे जल को खारा करने के लिए हजारो मिलो का सफर तय कर सागर में मिलती है |परिंदे जानते है की जिस दिन उनके बच्चे उड़ना सिख जायेंगे वापस उसके घोसले में नहीं आएंगे ,फिर भी उन्हें उड़ना सिखाती है |इस तरह के कई सवाल है जिसका सही जवाब आजतक किसी को नहीं मिला |शायद तुम्हारा सवाल भी कुछ ऐसा ही था |हर पल को जीवंत करना ही जीवन है |गर्मी में सूरज की किरणे बदन को जलाती तो है पर वही किरण फलो को पकाती भी है मीठा भी करती है | |तमिलियन मूवमेंट पर शोध कर रही एक कंपनी में मुझे लिखने का काम मिला है और कल शाम की फ्लाइट से मैं श्रीलंका जा रही हूँ |मेरे जीवन में दो लोगो का बहुत महत्व है जिसे मैं हमेशा याद करती हूँ और करती रहूंगी, एक मेरे पापा जिन्होंने मुझे जन्म दिया और दूसरे तुम जिसने मेरी लेखनी को जन्म दिया |अपने जीवन के धुविले नीलाकाश में और शांत हरियाली में तुम्हे खोने की कल्पना कर मुझे दुःख होता है परन्तु मुझे प्रसन्ता है की मेरे जाने के पूर्व हम परस्पर वार्तालाप कर सके |

Single User Licensed To sh_sharma77@yahoo.co.in. Any further distribution is Illegal. Ref. www.educreation.in

प्रतिभा चाहती तो अपने परिवार और बहन का प्रतिशोध ले सकती थी और वो शायद ये करना भी चाहती थी, परन्तु जो असहनीय दर्द उसने और उसके परिवार ने झेला था उसे याद करके उसके रूह कांप जाते है |प्रतिभा ईश्वर से बस यही प्रार्थना करती है की ये दुःख किसी को झेलना न पड़े, ये भी एक प्रेम है जिसका कोई नाम नहीं ,कोई आकर नहीं , नीले आसमान की तरह ,जो सबसे प्रेम करता है सब को छाया देता है |

चाँद अपनी दोशाला ओढ़ कर ठंढ में ठिठुर रही थी और एक टक लगा कर मुझे देख रही थी |हर तरफ सन्नाटा सोर मचा रही थी गली में कुछ कुत्ते बैठ कर दिन भर के लूट का हिसाब किताब कर रहे थे |मैंने अपनी घड़ी देखी रात के १.३० हो रहे थे मै छत से निचे उतरा, भावना और बच्चे सो रहे थे |मै भी जाकर अपने बिस्तर पर लेट गया |अचानक मेरे कानो में कोई आवाज़ गूंजने लगी ,मेरी नींद खुल गई ,देखा तो सुबह के 7 बज रहे थे और मेरे घड़ी का अलार्म बज रहा था |भावना बच्चो को स्कूल के लिए तैयार कर थी और मुझे चेतावनी दे रही थी उठ जाओ नहीं तो ऑफिस में लेट हो जाओगे और इलज़ाम मुझ पे डालोगे |

****

Single User Licensed To sh_sharma77@yahoo.co.in. Any further distribution is Illegal. Ref. www.educreation.in

अपरचित परचित

घर में खुशियों का माहौल है एक छत के नीचे तीन पीढ़ियाँ रह रही है |प्रभुनाथ दुबे और उनकी पत्नी ,इनके दो पुत्र आशीष दुबे और रामाशीष दुबे और इनदोनो का परिवार |इस घर में सबसे ज्यादा वक्त प्रभुनाथ दुबे ने गुजारे है और उनकी उम्र करीब 80 85 की है |इस घर में सबसे छोटी उम्र रामाशीष दुबे की बेटी प्राची की है करीब 12 वर्ष |आशीष दुबे के छोटे बेटे के साथ दादा जी (प्रभुनाथ दुबे) की बहुत अच्छी बनती है |सुबह -शाम दोनों साथ -साथ घर से बाहर निकलते है और घंटो पार्क में टहलते है |जब मदन छोटा था तो सुबह -सुबह जूते-मौजे पहन कर ,बरामदे में बैठ जाता था और दादा जी के आने का इंतज़ार करता था की कब वो आएंगे और वो उनके साथ घर से बाहर सैर पर जायेगा |अब वक्त बदल चूका है बढ़ती उम्र ने प्रभुनाथ दुबे को कमजोर और थोड़ा डरपोक बना दिया है अब वो घर से बाहर अकेले जाना पसंद नहीं करते है |सुबह -सुबह जूता मोजा पहन कर बरामदे में बैठ जाते है और अपने पोते मदन के आने का इंतजार करते है की वो कब आएगा और वो उसके साथ घर से बाहर सैर के लिए जायेंगे |इस कहानी का नायक न आशीष दुबे है ना रामाशीष दुबे है और ना ही उनकी पत्निया और बच्चे,क्यों की ये सब लोग कनाडा में रहते है और पुरे वर्ष में सिर्फ एक महीने के लिए भारत आते है और एक महीने पूरा होने पर वो वापस कनाडा चले जायेंगे ।इस कहानी के तीन मुख्य पात्र है प्रभुनाथ दुबे ,उनकी पत्नी शारदा दुबे और एक अपरचित जिसका अभी तक आगमन नहीं हुआ है ।इस परिवार में धन संपत्ति की कोई कमी नहीं ,परस्पर प्रेम की भी कोई कमी नहीं ,कमी है तो सिर्फ वक्त की , इस परिवार के पास सिर्फ 30 दिन होते है एक साथ रहने के लिए

Single User Licensed To sh_sharma77@yahoo.co.in. Any further distribution is Illegal. Ref. www.educreation.in

इस 30 दिन का इंतजार प्रभुनाथ दुबे 330 दिन करते है ।आशीष और रामाशीष पुरे साल काम में व्यस्त रहते है परन्तु अपने माता -पिता से मिलने और घर जाने की ख़ुशी उन्हें भी कम नहीं होती है एक महीना पूरा हो गया है आज पूरा घर खाली है सभी लोग वापस कनाडा चले गए ,घर में सिर्फ दो लोग रह गए है ।ये कोई नई बात नहीं है कई सालो से ऐसा ही चलता आ रहा है ,परन्तु आज भी प्रभु नाथ दुबे और उनकी पत्नी कई दिनों तक उदास रहते है निराश और दुखी वो नहीं होते है क्यों की उनके बच्चो की ख़ुशी में ही उनकी ख़ुशी है ।आशीष और रामाशीष ने बहुत धन जुटाए पर इतनी हिम्मत नहीं जुटा पाए की अपने बूढ़े माँ -बाप के साथ में रहे ,उन्हें अकेला छोड़ कर सात समंदर दूर नहीं जाये| प्रभुनाथ जी के परिवार के सदस्य , अब कुर्सी है ,टेबल है पलंग है सोफा है किताबो से भरी अलमारियाँ है और सबसे प्रिये उनकी पत्नी शारदा दुबे ,ये दोनों वृद्ध दंपत्ति मिलकर अपने पुरे घर और परिवार के सदस्यो की देख भाल करते है ।घर का मुख्य दरवाजा कभी -कभी ही खुलता है मिलने जुलने वाले लोग ना के बराबर आते है ।प्रभुनाथ दुबे भी घर से बाहर नहीं जाते है ,बढ़ती उम्र के साथ -साथ उनके शारीरिक शक्ति घटती गई ,अकेले घर से बाहर जाने में वो डरते है ।सारा दिन घर में अपनी पत्नी शारदा दुबे के साथ तू -तू ,मैं-मैं करना ,कभी अपनी या अपने बच्चो के पुरानी यादो को दुहराना ,कभी परिवार या पुराने पड़ोसियों के बारे में बाते करना ,कभी पिछले और अगले जन्म के बारे में बाते करना ,जिसमे इन्हे एक दूसरे का साथ कतई पसंद नहीं है ,इन्ही सब बातो में इनका सारा दिन निकल जाता है ।रात को गहरी नींद में भी हलकी सी आहट पर इनकी नींद खुल जाती है और एक दूसरे के मदद के लिए तैयार हो जाते है ।

आज का मौसम बहुत सुहावना है ठंढ जाने की तैयारी कर रहा है और और गर्मी पुरे साजो- सामान के साथ आने की तैयारी ।प्रभुनाथ जी खिड़की से झाक कर बाहर देखते है बाहर

Single User Licensed To sh_sharma77@yahoo.co.in. Any further distribution is Illegal. Ref. www.educreation.in

खिलखिलाती धुप है, वृक्षों की पत्तिया झूम -झूम के इसका आनंद ले रही है ।गली में चहल -पहल आज कुछ ज्यादा है ।इन सब को देख कर प्रभुनाथ जी प्रफुल्लित हो गए ,उनके बूढ़े शरीर में एक नई ऊर्जा का संचार होने लगा |उन्होंने अपने घर का मुख्य दरवाजा खोल दिया और सूरज के किरणों का स्वागत करने लगे |शारदा दुबे के लाख मना करने पर भी वो घर के बाहर रखी कुर्सी पर बैठ गए और स्वछंद नीले आकाश को देखने लगे |ठंढी हवाओ का स्पर्श प्रभुनाथ जी के मस्तिष्क में कई आकृतिया बना रही थी जिसमे उनके बचपन ,माता -पिता ,जवानी और न जाने कितने रंग भरे थे , हर रंग की एक विशेषता थी हर रंग की एक अपनी कहानी थी |आस -पास के लोग उन्हें बहुत गौर से देख रहे थे क्यों की कई लोगो ने इस वृद्ध दंपत्ति को आज से पहले कभी घर से बाहर नहीं देखा था |शारदा दुबे ,प्रभुनाथ जी के घर से बाहर इस तरह बेफिक्र होकर बैठने से थोड़ा नाराज थी क्यों की उन्हें डर है की सीढ़ियों पर चढ़ने-उतरने के क्रम में कही वो गिर न जाये ,उन्हें कही चोट न लग जाये ,वो बार -बार उन्हें अंदर आने के लिए कह रही थी पर प्रभुनाथ जी एक हठी बच्चे की तरह घर के अंदर आने को तैयार नहीं थे ,हार कर शारदा जी भी वही पास में बैठ गई और इधर -उधर की बाते करने लगी |इस वृद्ध दम्पत्ति के हांथो और चेहरों की झुर्रिया सूरज की रौशनी में चमक रही थी ,आज उनकी चेहरे पे ख़ुशी ज्यादा और आवाज में लरखराहट कम थी |कहते है प्रकृति भी माँ की तरह होती है जो अन्नंत जीवो को अपनी गोद में पालती-पोसती है आज ये माता अपने इस बूढ़े संतान को देख कर आह्लादित हो रही थी |बात - चीत में 2 -3 घंटे कैसे गुजर गए पता ही नहीं चला |अचानक रौशनी कुछ कम होने लगी और हवा में ठंढ़क बढ़ गई |जब प्रभुनाथ जी ने अपनी आँखों को मीचते हुए आसमान की तरफ देखा , श्वेत बादलो का एक झुण्ड सूरज को घेरने की कोशिश कर रहा था |सूरज की रौशनी कम हो रही थी चारो तरफ अँधेरा छा रहा था|प्रभुनाथ जी और

Single User Licensed To sh_sharma77@yahoo.co.in. Any further distribution is Illegal. Ref. www.educreation.in

उनकी पत्नी कुछ समझ पाती इससे पहले बारिश की बुँदे उनके शरीर को स्पर्श करने लगी ,वो धीरे -धीरे कुर्सी से उठ कर घर के अंदर जाने लगे ,परन्तु कुछ ही पल में बारिश के बूंदो का आकर बढ़ गया और रफ़्तार तेज हो गई |किसी तरह बचते - बचाते वो घर के अंदर तो पहुँच गए परन्तु पूरी तरह बारिश में भींग गए थे | इस छोटी सी सफर ने उन दोनों को पूरी तरह थका दिया था |प्रभुनाथ जी आराम करने लगे और शारदा जी घर के छोटे -मोटे काम में व्यस्त हो गई |शाम ढलने के साथ -साथ बारिश भी तेज होने लगी , चारो तरफ सन्नाटा छा गया ,बादलो का गर्जना और रह -रह कर बिजली का चमकना वातावरण को भयानक बना रहा था |शारदा जी प्रभुनाथ जी को खाना परोसते हुए कह रही है ऐसी मूसलाधार बारिश बहुत दिनों बाद हुई है अभी ज्यादा रात भी नहीं हुई है और चारो तरफ सन्नाटा छा गया है |प्रभुनाथ जी ने सर हिलाते कुए कहा इस बारिश में कौन बाहर निकलेगा ,सभी अपने अपने घर में आराम कर रहे होंगे |थोड़ी देर बाद वृद्ध दंपत्ति सोने चले गए |रात के 11 -12 बज रहे होंगे ,शारदा जी गहरी नींद में सो रही थी और प्रभुनाथ जी हलकी नींद में लेटे हुए थे ,उनके कानो में निरंतर बारिश के बूंदो की टप-टप आवाज आ रही थी |अचानक उनके कानो में कुछ अजीब सी आवाज आई,जैसे कोई सामान गिरी हो या अपनी स्थान से विस्थापित हुई हो , तुरंत कानो ने मस्तिष्क को जागने का आदेश दिया |प्रभुनाथ जी ने शारदा जी को जगाया और इस अंदेशे के बारे में बताया |शारदा जी बाहर से आने वाली आवाज को ध्यान से सुनने लगी ,परन्तु बहुत देर तक जब कोई आवाज नहीं आई तो ,प्रभुनाथ जी के अंदेशे को कल्पना बता कर सो जाने को बोली |प्रभुनाथ जी को भी ये एहसास हुआ की ये उनके कानो का भ्रम था और कुछ भी नहीं |

अभी प्रभुनाथ गहरी नींद में जाने ही वाले थे की अचानक मस्तिष्क ने उन्हें एक सन्देश दिया और यो उठ कर बैठ गए |धीरे -धीरे चल कर वो कमरे से बाहर निकले और घर के मुख्य द्वार की तरफ

Single User Licensed To sh_sharma77@yahoo.co.in. Any further distribution is Illegal. Ref. www.educreation.in

जाने लगे ,वहाँ पहुँच कर उन्होंने देखा की घर का मुख्य दरवाजा खुला परा है , कारण याद करने पे उन्हें याद आया की दोपहर में तेज बारिश में भींगने से बचने के क्रम में वो दरवाजा बंद करना भूल गए थे |उन्होंने घर का दरवाजा बंद किया और वापस कमरे में आकर सोने की कोशिश करने लगे ,परन्तु नींद नहीं आ रही थी |मष्तिष्क में तरह -तरह की तरंगे उत्पन्न हो रही थी ,अचानक उनकी नजर कमरे के अंदर आ रही एक छाया पर पड़ी,पूरी शक्ति से उन्होंने कौन है की आवाज लगाई और वो छाया स्थिर हो गई |शारदा जी की भी नींद खुल गई थी और उन्होंने कमरे की बत्ती जला दी ,सामने एक नाटा कद का ,मजबूत शरीर वाला अधेड़ उम्र का आदमी खड़ा था | उसने अपने चेहरे को एक कपड़े से लपेट रखा था सिर्फ उसकी बरी -बरी आँखे दिख रही थी |उसके पैंट का निचला हिस्सा बारिश में भीगा हुआ था इसलिए उसने उसे मोर कर घुटने पे चढ़ा रखा था |एक अपरचित और अनजान व्यक्ति को अपने कमरे में देख कर प्रभुनाथ जी उसकी तरफ लपके परन्तु उनकी बूढी हड्डी और कमजोर शरीर अपरचित के एक झटके को भी बर्दाश्त नहीं कर पाई और जमीं पर धराशायी हो गई |शारदा जी ने मदद के लिए जोर की आवाज लगाई परन्तु बंद कमरे और मूसलाधार बारिश में उनकी आवाज कमरे से बाहर नहीं जा पाई ,और अगर जाती भी तो शायद ही कोई सुनता क्यों की रात अधिक हो गई थी और आस पास के सभी लोग सो रहे थे |शारदा जी के तेज आवाज से वो अपरचित डर गया और तुरंत अपनी कमर से एक तेज धार वाली चाकू निकाल ली |चाकू देख कर प्रभुनाथ जी का पूरा शरीर डर से काँपने लगा और शारदा जी रोने लगी |प्रभुनाथ जी धीरे -धीरे जमीं से उठ कर शारदा जी के पास पलंग पर जा कर बैठ गए | अपरचित उन दोनों को बहुत गौर से देख रहा था जैसे बिल्ली चूहे को घेर लेती है और उसे खेलने के लिए छोड़ देती है पर इस बात का ध्यान रखती है की वो उनके कब्जे वाले क्षेत्र से बाहर न जाये |

Single User Licensed To sh_sharma77@yahoo.co.in. Any further distribution is Illegal. Ref. www.educreation.in

प्रभुनाथ जी और उनकी पत्नी के मष्तिस्क में बस यही बात घूम रही थी की उनका अंत कुछ ही वर्ष में हो जायेगा ,परन्तु इस प्रकार से होगा,उन्होंने कभी नहीं सोंचा था |प्रभुनाथ जी ने लडख़ड़ाते हुए आवाज में बोला,बेटा तुम्हे मुझसे क्या चाहिए अपरचित थोड़ी देर उन्हें देखता रहा फिर बोला ,रूपये ,पैसे ,सोना चाँदी जो कुछ भी है सब निकाल कर रख दो नहीं तो 2 -3 वर्ष जो भी तुम्हारी आयु बची है वो आज ही ख़त्म हो जाएगी | शारदा जी ने प्रभुनाथ जी के तरफ देखा और बोला हमारे पास सोना चाँदी कुछ भी नहीं है कुछ रुपये है जिससे हमारा खाना -पीना चलता है वो लेना चाहते हो तो ले लो |अपरचित ने गुस्से से बोला झूठ मत बोलो ,तुम्हारा सारा परिवार विदेशो में रहता है और कहते हो की कुछ भी नहीं है |इस वर्ष प्रभुनाथ जी के बच्चे अपने साथ शारदा जी के जेवर भी ले गए ,कह रहे थे यहाँ सुरक्षित नहीं है |प्रभुनाथ जी सोंच रहे थे की काश वो आभूषण उनके पास होते तो उसे देकर वो इस बला से मुक्ति पा लेते |शारदा जी ने बोला हमारे पास अभी इन थोड़े -बहुत पैसे के अलावा कुछ भी नहीं है बच्चे साल में एक बार आते है और अपने हिसाब से साल भर का खर्चा दे जाते है |प्रभुनाथ जी उस अपरचित को देख रहे थे और सोंच रहे थे ये कौन है ,यहाँ कैसे आया और मेरे बारे में ये कैसे जानता है की मेरे बच्चे विदेश में रहते है ,वो अपने धुंधली नजरो से उसके चेहरे को पहचानने की कोशिश कर रहे थे |घड़ी में रात के 1 बज रहे थे बाहर मूसलाधार बारिश हो रही थी और बिजली चमक रही थी दूर -दूर तक सन्नाटा था न आदमी न जानवर सिर्फ पानी ही पानी |कमरे के अंदर प्रभुनाथ जी और उनकी पत्नी डरे सहमे बैठे है अपरचित कभी उनपर चिल्लाता है कभी सामान को इधर -उधर हटा कर कीमती सामान ढूंढने की कोशिश करता है |उसका मकसद है की उसे यहाँ से सोने, चांदी,हीरे जवाहरात मिल जाये ,जिसे बेच कर वो अपने और अपने परिवार को ढेर सारी खुशिया दे सके |बहुत देर कोशिश करने के बाद भी जब

Single User Licensed To sh_sharma77@yahoo.co.in. Any further distribution is Illegal. Ref. www.educreation.in

उसे कुछ नहीं मिला तो उसका गुस्सा सातवे आसमान पे पहुँच गया ,वो प्रभुनाथ जी पर जोर -जोर से चिल्लाने लगा और कहने लगा ,आज यहाँ से मैं तुम्हारा धन लेकर जाऊंगा या फिर तुम्हारे प्राण,फैसला तुम्हे करना है |प्रभुनाथ जी और उनकी पत्नी एक दूसरे को देख रहे थे उन्हें ये एहसास होने लगा था की आज की रात उनके जीवन की अंतिम रात है |वो अपरचित उनके लिए यमराज बनकर आया है और उनके प्राण लेकर जायेगा |कुछ हाथ नहीं लगने पर वो झल्ला गया था और प्रभुनाथ जी को धिक्कार रहा था ,बताओ सारा धन कहा रखा है तुम्हारे बेटे विदेशो में रहते है और तुम यहाँ फकीरो की तरह रह रहे हो ,धिक्कार है तुमपे |घर में जो 10 -20 हजार रुपये थे वो उस अपरचित के सामने रखे थे पर वो इससे संतुष्ट नहीं था उसने इस घर से बहुत ज्यादा धन की कल्पना की थी ,उसने सोंचा था ,आज की रात उसके जीवन की दिशा बदल देगी ,उसकी गरीबी दूर हो जाएगी ,उसकी पत्नी उससे प्रेम करने लगेगी और पता नहीं क्या -क्या ,परन्तु यहाँ तो सिर्फ थोड़े से पैसे हाथ लगे थे जो पुराने कर्जदारों को देने में ही ख़त्म हो जायेंगे |उसने एक बार फिर उस वृद्ध दंपत्ति से धन निकलवाने की कोशिश की और अपने तेज धार वाले चाकू से प्रभुनाथ जी पर प्रहार किया, ताकि वो डर जाये और सारा धन निकाल कर उसके सामने रख दे|इस प्रहार से ज्यादा चोट तो नहीं आई परन्तु प्रभुनाथ जी के हाँथ पे चाकू से खरोच आई और खून बहने लगा |खून देख कर शारदा जी जोर -जोर से रोने लगी और उस अपरचित के पैरो पे जा गिरी और कहने लगी अगर मेरे पास इन रुपयों के अलावा कुछ होता तो मैं तुम्हे पहले ही दे देती ,मेरा विश्वास करो हमारे पास इन रुपयों के अलावा कुछ भी नहीं है ,फिर भी अगर तुम्हे मेरी बातो पे विश्वास नहीं है तो जो करना चाहते हो करो, परन्तु मेरी एक विनती है अगर हत्या करनी है तो हम दोनों की करना ,दोनों में से किसी एक को जिन्दा नहीं छोड़ना|जैसे जीवन जीने के लिए तुम्हे धन -संपत्ति की जरूरत है

Single User Licensed To sh_sharma77@yahoo.co.in. Any further distribution is Illegal. Ref. www.educreation.in

वैसे ही हमे जीवन जीने के लिए एक दूसरे की आवश्यकता है एक दूसरे के आलावा यहाँ हमसे कोई बात करने वाला भी नहीं है |शारदा जी की बातें सुनकर अपरचित का क्रोध शांत हो गया ,वो सोंचने लगा ये कैसी स्त्री है जिसे धन -दौलत से कोई मोह नहीं है यहाँ तक की अपनी प्राण का भी कोई मोह नहीं है |

वह अपने पुराने दिनों को याद करने लगा ,जब उसकी नई-नई शादी हुई थी ,वो खेतो में काम करता था जो कुछ भी कमाता था अपनी पत्नी को देता था, कुछ दिनों तक सब कुछ ठीक चला परन्तु कुछ दिनों के बाद पैसो के कारण उन दोनों में कहा -सुनी होने लगी ,मनोहर (अपरचित)एक संतोषी व्यक्ति था परन्तु उसकी पत्नी ठीक उसके विपरीत थी ,उसकी इच्छा अनंत थी जिसकी पूर्ति शायद कुबेर भी न कर पाये|मनोहर उसे कितने भी पैसे देता पर वो उसके लिए कम थे धन की बढ़ोतरी उसकी इच्छाओं को चौगनी कर देती थी |कुछ ही वर्षो में उसका परिवार बढ़ गया ,खर्चे बढ़ गए और बढ़ गए रोज -रोज के झगड़े |लाख कोशिश करने के बाद भी जब मनोहर इतना धन नहीं कमा पाया की वो अपनी पत्नी को खुश रख सके तो उसने शहर जाकर पैसे कमाने की सोंची ,जिसका उसकी पत्नी ने ह्रदय से स्वागत किया ,और खूब सारे सलाह भी दे डाले,शहर जाकर इधर -उधर घूमना नहीं ,खूब पैसे कमाना,सुना है गांव के कई लोग तो शहर जाकर इतने पैसे कमाए है की आज उनके पास कोठिया और मोटर कार है |मनोहर अपनी पत्नी और बच्चो को छोड़ कर नहीं जाना चाहता था ,अगर उसकी पत्नी उसे एक बार भी रुकने को कहती तो वो रुक जाता ,परन्तु ऐसा हुआ नहीं ,उसकी पत्नी ने उसे मुस्कुराते हुए घर से विदा किया और वो भी ह्रदय की वेदना को छुपाते हुए वहाँ से चला गया |शहर आकर कई राते फुटपातो पर गुजारी ,कई रात भूखे पेट सोया ,कभी काम होता था कभी नहीं ,कई बार बच्चो की याद आती थी और घर वापस जाने का दिल करता था परन्तु पत्नी की याद आते ही कदम रुक जाते थे ,क्या दूंगा मैं उसे

Single User Licensed To sh_sharma77@yahoo.co.in. Any further distribution is Illegal. Ref. www.educreation.in

वापस जाकर ,अगर मैं खाली हाथ गया तो उसे बहुत दुःख होगा और बहुत गुस्सा भी करेगी और बहुत खरी -खोटी सुनाएगी |
प्रभुनाथ जी ने अपने हाथ में लगे घाव पे एक कपड़ा लपेट लिया था शायद दर्द ज्यादा हो रही थी इसलिए अपने बायें हाथ से उसे दबा रखा था |प्रभुनाथ जी ईश्वर को याद कर बार -बार यही कह रहे थे, हे प्रभु अगर अनजाने में मुझसे कोई गलती हो गई हो तो मुझे क्षमा करना ,मैं उस दीपक के समान हु जो दिन में जल रहा हु ,अगर ये दीपक बुझ भी जाये तो किसी को कोई फर्क नहीं पड़ता है और सच तो ये है की मुझे भी कोई फर्क नहीं पड़ता है मैं अपने जीवन के 80 बसंत देख चूका हूँ,सात रंगो के जितने भी मेल हो सकते है करीब -करीब सब देख चूका हूँ ,सात सुरो की जितनी भी प्रतिध्वनिया हो सकती है सब सुन चूका हूँ अगर ये अजनबी मेरी हत्या कर भी देता है तो मुझे तनिक भी दुःख नहीं होगा परन्तु मेरी पत्नी का जीवन बहुत दुखदाई हो जायेगा,क्यों की सूर्य के प्रकाश में भी उसे मेरे जीवन रूपी दिये की आवश्यकता है अगर ये दिया बुझ गया तो वो सूर्य के प्रकाश में भी एक कदम नहीं चल पायेगी |मेरी तुमसे यही प्रार्थना है की अगर ये अपरचित यमराज बन कर आया है तो हम दोनों को साथ -साथ ले जाये |
अंगुलिमाल और बुद्ध मस्तिष्क की दो विचारधाराएं है ये दोनों हर इंसान में उपस्थित होती है जागृत या शुशुप्त अवस्था में |प्रभुनाथ जी और शारदा जी की बातो को सुन कर अपरचित के अंदर बुद्ध की विचारधारा जागृत होने लगी |वो इस वृद्ध जोड़े के प्रेम को देख कर आश्चर्यचकित था |शायद वो अपनी पत्नी से भी उतना ही प्रेम करता है जितना प्रभुनाथ जी अपनी पत्नी से |शारदा जी को देख कर उसके मन में ये लालसा उत्पन्न होने लगी की काश उसकी पत्नी भी उससे इसी प्रकार निःस्वार्थ प्रेम करती |
अपरचित सोंचने लगा ,महीना गुजर जाने के बाद भी जब उसे कोई ढंग का काम नहीं मिला तो वो एक किराने के दुकान में काम करने लगा ,पगार इतनी थी की हाथ और मुँह के बिच सिमट

Single User Licensed To sh_sharma77@yahoo.co.in. Any further distribution is Illegal. Ref. www.educreation.in

कर रह जाती थी | सारा दिन ऐसे गुजरता था जैसे एक मजदुर कुआँ खोदता है| कुआँ के अंदर उसका सिर्फ एक ही लक्ष्य होता है धरती के निचे से पानी निकालना, उस वक्त वो नहीं सोचता है की वो कितना कमायेगा ,कितना बचाएगा ,क्या खायेगा और अपने परिवार को क्या खिलायेगा ,उसे तो बस पानी का स्पर्श चाहिए और जब धरती के निचे से पानी निकलती है तो वो प्रफुल्लित हो जाता है उसके ख़ुशी का ठिकाना नहीं होता है |शाम को जब वो कुएँ से बाहर आता है और अपने दिन भर की दिहाड़ी पाता है तो दुखी हो जाता है क्यों की ये पिछले दिन के उधार चुकाने में चले जायेंगे और जो बचेंगे वो आज के राशन में खत्म हो जायेंगे या फिर कम पड़ेंगे |मनोहर की पगार इतनी नहीं थी की वो उसमे से कुछ भी अपने परिवार के लिए बचा सके |लाख कोशिश करने के बाद भी उसके आर्थिक स्थिति में कोई परिवर्तन नहीं आई ,बच्चे और पत्नी से मिले हुए महीनो गुजर गए थे मस्तिष्क में तरह -तरह के विचार आ रहे थे |मनोहर अब ये समझ चूका था की मेहनत-मजदूरी कर के वो कभी इतना धन नहीं कमा पायेगा की वापस अपने घर जा सके | अगर उसे अपने घर जाना है अपनी पत्नी और बच्चो का प्यार पाना है तो उसे कोई और रास्ता अपनाना पड़ेगा |उसी दिन से उसके मस्तिष्क में अंगुलिमाल की विचारधारा उत्पन्न हो गई ,अब उसकी नजरें ज्यादा पारखी हो गई थी ,हर वक्त धन कमाने के तरह तरह के विचार आने लगे |उसकी ये इच्छा प्रबल तब हो गई जब उसकी पत्नी ने ये सन्देश भिजवाया की, वापस आ जाओ ,मैंने अपने किस्मत से समझौता कर लिया है धन और यश कमाना तुम्हारे बस की बात नहीं है |पुरुष सब कुछ बर्दाश्त कर सकता है परन्तु जब उसकी पत्नी उसके पुरुषार्थ पर प्रहार करती है तो वो जल से निकाली हुई मछली के तरह तड़पने लगता है |इसी उधेर-बुन में वो गली से गुजर रहा था की उसकी नजर इस बुजुर्ग दंपत्ति पर पड़ी जो घर के बाहर बैठ कर ठंडी हवाओ का आनंद ले रहे थे|

Single User Licensed To sh_sharma77@yahoo.co.in. Any further distribution is Illegal. Ref. www.educreation.in

इस बुजुर्ग दंपत्ति के घर का सामान उसी किराने के दुकान से जाता था जहा वो काम करता था और वो ये भी जानता था की ये अकेले रहते है इनके सभी बच्चे विदेशो में रहते है |वो सही वक्त का इंतज़ार करने लगा की घर के अंदर कैसे पहुंचा जाये और अंततः उसे इसमें कामयाबी मिल भी गई |

रात के 2 -3 बज रहे होंगे बारिश थम गई थी परन्तु रह -रह कर टिप -टिप की आवाज आ रही थी ,कमरे की बत्ती जली हुई थी ,पलंग पर प्रभुनाथ जी और उनकी पत्नी बैठी थी और सामने एक टेबल पर अपरचित बैठा था| पलंग के एक कोने में 15 -20 हजार रुपये रखे है जो शारदा जी ने अपरचित को देने के लिए निकाले थे और उसने ये कह कर लेने से इंकार कर दिया था की सारे पैसे और सोने चांदी के आभूषण भी निकालो |रात भर के तू -तू ,मै-मै से सब थक गए थे ,सब के चहरे पर निराशा थी |प्रभुनाथ जी और उनकी पत्नी इस लिए परेशान थे की अपरचित उनके साथ क्या करने वाला था उन्हें पता नहीं था और अपरचित इस लिए परेशान था की मेहनत से तो वो धन कमा नहीं पाया ,जिस रास्ते से उसने धन कमानी की कोशिश की उसमे भी उसे असफलता मिली |उसके मस्तिष्क में अपने बच्चे और पत्नी की छाया उभर रही थी ,वो एक टक से छत की तरफ देख रहा था , उसकी आँखे आंसुओ से भरे थे |जब उसने अपनी नजर निचे की तो प्रभुनाथ जी और उनकी पत्नी पर पड़ी,उनकी आंखे बंद थी शारदा जी ने प्रभुनाथ जी का हाँथ पकड़ रखा था उनके चेहरे और हांथो की झुरिया पहले से ज़्यदा मुरझा गई थी ,वो पलंग के सिरहाने पर सर टिकाये इतने आराम से सोये थे जैसे उन्हें एक अनंत यात्रा पे निकलना हो |उनका चेहरा निष्काम , निष्पक्ष,बिना किसी छल-कपट के एक मासूम बच्चे की तरह दिख रहा था |

बारिश के बाद सूरज की किरणे तेज और प्रखर हो गई है |सूरज की किरणे जब प्रभुनाथ जी पर पड़ी तो उनकी आँख खुली ,वो कमरे के चारो तरफ नजरें घुमा कर देखने लगे,वहां शारदा जी के

Single User Licensed To sh_sharma77@yahoo.co.in. Any further distribution is Illegal. Ref. www.educreation.in

अलावा कोई नहीं था ,बिस्तर पर वैसे ही रुपये परे थे |प्रभुनाथ जी कमरे से बाहर निकले ,दरवाजा खुला था सीढ़ियों के निचे कल रात के बारिश का पानी जमा था |सूरज की किरणे साफ़ और धुले पत्तो पर गिर कर उनकी चमक को चौगुनी बढ़ा रही थी |प्रभुनाथ जी की नजरें आस -पास किसी को ढूंढ रही थी पर वहां कोई नहीं था ,उन्हें कल रात की घटना एक स्वप्न की तरह प्रतीत हो रही थी परन्तु जब उनकी नजर हांथो पे लगी जख़्म पर पड़ी तो उन्हें कल रात की सारी बातें याद आ गई ,वो स्वप्न नहीं हकीकत थी |

अपरचित कब गया ,क्यों गया ,वह क्यों उन पैसो को भी छोड़ गया ,जो उसके सामने रखे थे ,जिससे उसकी थोड़ी सी जरूरत पूरी हो सकती थी ,क्या सही में वो एक चोर था ,वह कौन सी विचारधारा उसके मस्तिष्क में उत्पन हो गई जो उसे वहां से खाली हाथ जाने पर मज़बूर कर दिया |लाखो ऐसे प्रश्न उत्पन होते है परन्तु सही उत्तर पाना मुश्किल है |समय के साथ ये घटना प्रभुनाथ जी और शारदा जी के मष्तिस्क पर से धूमिल हो गई |अपरचित अभी भी इस शहर में है या अपने पत्नी और बच्चो के पास गाँव चला गया ,यह पता नहीं ,परन्तु उस रात उस वृद्ध दंपत्ति के निःस्वार्थ प्रेम को देख कर उसे यकीन हो गया था की अगर उसे पैसे ,आभूषण मिल भी जाते तो जिस ख़ुशी के लिए वो ये पाप करने जा रहा था वो उसे नहीं मिलता और अगर मिल भी जाता तो थोड़े समय के लिए , क्षणीक |

****

Single User Licensed To sh_sharma77@yahoo.co.in. Any further distribution is Illegal. Ref. www.educreation.in

अधूरी शाम

मनुष्य के बढ़ती जनसँख्या से सम्पूर्ण विश्व परेशान है ।इंसान की तेजी से बढ़ती हुई आबादी को रोकने के लिए तरह -तरह की तरकीबे खोजी जा रही है ।लोगो को बढ़ती जनसँख्या से होने वाले दुष्परिणाम से अवगत कराया जा रहा है और कम जनसंख्या होने के फायदे बताये जा रहे है । कुछ बुद्धिजीवी वर्ग तेजी से बढ़ती जनसंख्या का कारण अशिक्षा को बताते है और शायद ये सही भी है ।आज के मशीन युग में शिक्षित लोग अपने दांपत्य जीवन की शुरुआत ही 35 -40 वर्षो में करते है ।35 -40 वसंत गुजारने के बाद इस बूढ़े वृक्ष में एकाद फल आ गया तो ठीक है नहीं तो अपने ऊपर शिक्षित और आधुनिक होने का तमका लगा कर जीवन का सफर तय करते है और अपनी शिक्षा और आधुनिकता की पोटली को सर पर रख कर बैकुंठ की यात्रा पर निकल पड़ते है ।मै आप लोगो को इन शिक्षित और आधुनिक सोंच वाले लोगो से दूर अशिक्षित और देहाती विचारधारा वाले लोगो के पास ले चलता हूँ।

रामेश्वर सिंह अपने इलाके के दबंग लोगो में से एक है ।उनकी मूंछे स्त्रीलिंग होने के बावजूद पुरुष की तरह हिस्ट-पुस्ट और अकड़ वाली है ।रामेश्वर सिंह के परिवार में सिर्फ तीन लोग है आन, बान और शान. घर के बाकी लोग इनके सेवक है जो इन तीनो की सेवा में लगे रहते है ।धन संपत्ति, जमीं, जायदाद की कोई कमी नहीं है बस कमी है इन सब के वारिश की ।पुत्र प्राप्ति की इच्छा में रामेश्वर जी की पत्नी ने पांच कन्या को जन्म दिया परन्तु पुत्र की इच्छा अभी तक पूरी नहीं हो पायी है ।पृथवी पर एक जैसी घटना एक ही समय में कई जगह घटती है पर हम सभी को देख नहीं सकते क्यों की हमारे दृष्टि की सीमा निर्धारित है

Single User Licensed To sh_sharma77@yahoo.co.in. Any further distribution is Illegal. Ref. www.educreation.in

।इसी समय के सामानांतर कही दूसरी जगह भी कुछ ऐसी ही घटना घट रही है ।धीरज श्रीवास्तव के यहाँ की स्थिति भी एक जैसी ही है ।धीरेज श्रीवास्तव एक साधारण व्यक्ति है और एक कंपनी में कारर्यत है कंपनी के दिए हुए मकान में रहते है और एक साधारण से वेतन में अपने और अपने परिवार का गुजारा करते है । रामेश्वर सिंह की तरह उनके पास धन -संपत्ति नहीं है पर जो भी है उसके लिए वारिश की प्रबल इच्छा उनमे भी है ।अपनी इस इच्छा को पूरी करेने के प्रयास में उन्होंने पांच कन्याओ को सहर्ष स्वीकार किया है ।

पूस का महीना चल रहा है दिन सुहावना है पर रात में कड़ाके की ठंढ पर रही है ।रामेश्वर सिंह और धीरज श्रीवास्तव दोनों अपने -अपने शहर के अस्पताल में बैठे है और अपनी इच्छा को पूर्ण कर देने वाले समाचार का इंतज़ार कर रहे है ।मन बेचैन है दिल और दिमाग में द्वन्द चल रहा है और आज ईश्वर के ऊपर आस्था अपने चरम सीमा पर है|दिल कहता है इस बार पुत्र की प्राप्ति होगी और मस्तिष्क कहता है जो किस्मत में है उसे कोई बदल नहीं सकता है ।इसी उधेड़ -बुन में दोनों अस्पताल के बरामदे में बैठे है ,अचानक एक नर्स आई और आवाज़ लगाई " रामेश्वर सिंह कौन है "रामेश्वर जी बिजली की फुर्ती के साथ उठे और नर्स के तरफ बढ़े और बोले मैं हु बताइये ,नर्स ने कहा बधाई हो आपकी पत्नी को लड़का हुआ है ।यह सुनते ही उनके सीने की चौड़ाई ठंढ में भी 2 -4 इंच बढ़ गई ।उन्होंने अपने कुर्ते के जेब से बटुआ निकला और 2 -4 सौ रुपये नर्स को दे दिया ।विश्वविजय होने के बाद इंसान जिस ख़ुशी का अनुभव करता है वही ख़ुशी का अनुभव रामेश्वर सिंह भी कर रहे थे वही दूसरी ओर जब नर्स ने धीरज श्रीवास्तव के लिए आवाज लगाई और वो वहां पहुंचे, तो नर्स ने मुस्कुराते हुए कहा बधाई हो आपकी पत्नी को लड़की हुई है ।ये समाचार सुन कर उनका मस्तिष्क ये निर्णय नहीं कर पा रहा था की वो ख़ुश हो या दुखी हो ,फिर भी उन्होंने नए मेहमान

Single User Licensed To sh_sharma77@yahoo.co.in. Any further distribution is Illegal. Ref. www.educreation.in

का गर्म जोश से स्वागत किया और नर्स को उपहार स्वरुप कुछ पैसे दिए ।रामेश्वर सिंह अपने बेटे को देख रहे है और बच्चे के बगल में लेटी उनकी पत्नी रामेश्वर सिंह को ,दोनों के चहरे पर एक जीत की ख़ुशी है ।वही दूसरी तरफ धीरज श्रीवास्तव की नजर अपनी बेटी पर है और उनकी पत्नी इस नन्ही सी परी के चेहरे को देख कर मुस्कुरा रही है ।धीरज श्रीवास्तव और उनकी पत्नी के चेहरे से ख़ुशी नहीं आनंद झलक रही है ।ख़ुशी की सीमा हार और जीत निर्धारित करती है परन्तु आनंद इन सब से परे है ।
वसंत ऋतू गुजरने के साथ -साथ वक्त भी गुजरता गया ।पक्षियों के कलरव सुनते -सुनते बच्चे बोलना सीख गए ,हवा में पेड़ों को झूमता देख कर, मस्ती और शैतानी करना सिख गए , चूहों और बिल्लियों के साथ खेलते -खेलते चलना और दौड़ना सिख गए ।अश्वनी की उम्र बढ़ने की साथ -साथ रामेश्वर सिंह भी अपने जीवन के अंतिम पड़ाव तक पहुंचने लगे ,उनके परिवार के तीन सबसे प्रिये सदस्य आन ,बान और शान करीब करीब उन्हें छोड़ कर जा चुकी थी |धन के कमी होने के बावजूद अश्वनी के पालन पोषण में उन्होंने किसी प्रकार की कमी नहीं की ,उसे हर तरह की सुख सुविधा और अच्छे संस्कार दिए |रामेश्वर जी को बस इतना अफसोश था की उनके तीन सबसे प्रिये सदस्य से उनका पुत्र कभी मिल नहीं पाया |पांच बहनो के बिच एक भाई अश्वनी, वैसा ही दीखता था जैसे स्वछंद आकाश में अकेला चाँद |बहने उसे अपनी हथेलियों पर रखती थी और माँ बाप के आँखों का वो तारा था |घर मोहल्ले के लोग यही कहते थे की अश्वनी जैसा खुश मिजाज लड़का कभी नहीं देखा परन्तु,रामेश्वर बाबू तो अब बूढ़े हो चले है उसी के ऊपर अपने बहनो का बोझ है लोगो की बातें अश्वनी तक भी पहुँचने लगी और समय से पहले वो परिपक्क हो गया । धन संपत्ति जाती रही पर अभी भी रामेश्वर सिंह के लिए उनकी इज्जत और प्रतिष्ठा सर्वोपरि थी ।

Single User Licensed To sh_sharma77@yahoo.co.in. Any further distribution is Illegal. Ref. www.educreation.in

धीरज श्रीवास्तव का घर कहे या फिर फूलो से भरा फुलवारी ,छः छः बेटियों की मुस्कान उन्हें किसी भी कमी का अहसास नहीं होने देती थी ।बेटियों की लोट - पोट वाली हंसी उनकी हर मानसिक तनाव को पल भर में दूर कर देती थी ।धीरज जी अपनी बेटियों की लिए सुपर मैन से कम नहीं थे |उनकी बेटियाँ निर्णय करती थी की वो कौन से रंग का शर्ट पैंट पहन कर ऑफिस जायेंगे ,कौन सा जूता या चप्पल पहनेंगे ,दोपहर के खाने में क्या खाएंगे इत्यादि इत्यादि ।घर से सम्बंधित ख़रीदारीयो में भी उनकी बेटियों का ही वर्चस्व रहता था ।श्रीवास्रव जी अपनी बेटियों के निर्णय को स्वीकार करते थे और हर छोटी -बरी समस्याओ में उनसे मशवरा भी करते थे ।छोटे से घर की छत में पूरा आकाश समाया था कोई आडम्बर नहीं ,कोई झूठी आन,बान और शान नहीं और न लोगो की बीच सबसे धनी और प्रतिष्ठावान बनने का स्वप्न ।वैसे तो श्रीवास्तव जी को अपने सारी बेटियों से प्रेम है परन्तु सबसे छोटी कुसुम से कुछ ज्यादा है ,कारन पता नहीं ,शायद वो उनकी इच्छाओं की ऐसी हार थी जो उन्हें हमेशा विजय होने का एहसास दिलाती है । एक सिमित आय होने के बावजूद वो कुसुम की शिक्षा में किसी भी तरह की कमी नहीं करते ,वो उसे सफलता की ऊंचाइयों पे देखना चाहते है ।

हवा शहर , गाँव, नदियों , पर्वतो से गुजरती रही पर कभी थकी नहीं ,वृक्षों से पत्ते जमी पर गिरते रहे, पर वृक्ष ने बुरा नहीं माना,नए पत्तियों को अपनी शाखाओ पे सजाती रही ।बिना किसी गिला शिकवा के बारिश के बाद फिर से पंक्षी अपने घोंसलों की मरम्मत में जुट गए ,रास्ते मंजिल की तलाश में बढ़ते गए कभी हार नहीं मानी,कभी रुके नहीं । मौसम के गुजरने के साथ -साथ वक्त भी गुजरता गया और पता ही नहीं चला की 10 -12 वर्ष कैसे निकल गए ,रामेश्वर सिंह ने अपनी बची-खुची ज़मीन बेच कर दो बेटियों की शादी कर दी ,उधर श्रीवास्तव जी ने भी अपने सामर्थ के हिसाब से तीन बेटियों का कन्यादान कर दिया ।इन

Single User Licensed To sh_sharma77@yahoo.co.in. Any further distribution is Illegal. Ref. www.educreation.in

दोनों परिवारों का सबसे छोटा सदस्य अश्वनी और कुसुम अपनी और अपने परिवार की सारी इच्छाओं को पूरा करने के लिए , उच्च शिक्षा के लिए महानगर पहुँच गए ।ये दोनों एक दूसरे से अपरचित थे, परन्तु एक व्यक्ति था जो इन दोनों से परिचित था । प्रोफ़ेसर सारंग रामेश्वर सिंह के मित्र थे और उसी गुरु की शिष्य थे जिसके शिष्य श्रीवास्तव जी थे । गुरु पूर्णिमा के समारोह में श्रीवास्तव जी की मुलाकात प्रोफ़ेसर सारंग से हुई थी ।श्रीवास्तव जी के उदार और स्वछंद व्यक्तित्व के कारण थोड़े समय में ही दोनों में घनिष्टता हो गई थी |रामेश्वर सिंह और श्रीवास्तव जी दोनों ने ही अपने पुत्र और पुत्री के मार्ग दर्शन के लिए प्रोफ़ेसर सारंग को चुना ।प्रोफ़ेसर साहब विद्वान तो थे ही साथ -साथ महानगर के एक कॉलेज में प्रोफ़ेसर के तौर पर कार्यरत भी थे ।अश्वनी साधारण कद का 19 -20 वर्ष का युवा है स्वभाव से शांत ,उदार और थोड़ा संकोची ।अश्वनी बचपन से घर में सबका लाडला रहा ,घर में खाना से लेकर पहनना सब उसकी मर्जी से होता था पर इस शहर में वो बिलकुल अकेला है अपने सभी जरूरतों की जिम्मेदारी उसके खुद की है । परेशानियाँ बहुत है पर अश्वनी को अपने जिम्मेदारियों का एहसास भी है जिसे पूरा करने के लिए हर परेशानी छोटी है |

युवा अवस्था में लोग बादलो की सैर करते है कल्पनाओ के समंदर में गोते लगाते है ,सुंदरता उनकी कमजोरी होती है और चुम्बक की तरह वो उसकी ओर आकर्षित होते है ।वही अश्वनी समतल ज़मीं पे चलने वाला एक गंभीर प्रकृति का लड़का है उसे अपनी जिम्मेदारियों का पूरा एहसास है और वो उसे पूरा करने के लिए हर संभव कोशिश करने को तैयार रहता है ।अपनी शिक्षा के सम्बन्ध में सुझाव लेने के लिए वो कभी -कभी प्रोफ़ेसर सारंग के पास जाता था ।प्रोफ़ेसर सारंग अश्वनी और उनके पिताजी को अच्छी तरह से जानते थे उन्होंने रामेश्वर सिंह के अच्छे दिन भी देखे है और बुरे दिन भी ।उन्हें पता है की अश्वनी ,रामेश्वर सिंह का

Single User Licensed To sh_sharma77@yahoo.co.in. Any further distribution is Illegal. Ref. www.educreation.in

एक मात्र सहारा है इसलिए जितना हो सकता है वो अश्वनी की मदद करते थे ।रविवार के दिन कुसुम और अश्वनी दोनों प्रोफ़ेसर सारंग से मिलने जाया करते थे परन्तु कभी उनकी मुलाकात नहीं हुई ,एक दिन दोनों एक ही वक्त पर वहां पहुंचे ,प्रोफ़ेसर सारंग ने दोनों की एक दूसरे से पहचान कराई।इसके बाद भी अश्वनी और कुसुम कई बार यहाँ आये पर अलग अलग वक्त पे जिसके कारण बहुत दिनों तक फिर उनकी मुलाकात नहीं हो पाई । एक दिन अश्वनी को ये खबर मिली की उसके पिता जी की तबियत ख़राब है ये खबर पाते ही वो घर पहुँच गया ।रामेश्वर सिंह को जैसे अश्वनी का ही इंतजार था ,उसे देखने के कुछ घंटे के बाद ही वो बैकुंठ यात्रा पे निकल गए और छोड़ गए अपनी सारी जिम्मेदारियां जिसे वो पूरा करना चाहते थे परन्तु ईश्वर को कुछ और ही मंजूर था ।सारा परिवार निराशा के घोर अंधकार में डूब गया था| जिम्मेदारियां तो पहले भी थी परन्तु उसका असली भार अश्वनी अब महसूस कर रहा था ।कुछ समय घर पे गुजारने के बाद वो पढ़ाई और कुछ काम के तलाश में शहर आ गया ।
कुछ महीनो के बाद आज फिर एक बार उसकी मुलाकात कुसुम से हुई ,वो प्रोफ़ेसर सारंग से मिल कर जा रही थी और अश्वनी कुछ काम के सिलसिले में प्रोफ़ेसर सारंग से मिलने जा रहा था । अश्वनी को रोकते हुए कुसुम ने कहा , तुम्हारे पिता जी के निधन के विषय में पता चला ,बहुत दुःख हुआ ।उसने कहा प्रोफेसर सारंग कह रहे थे तुम्हारे पिता जी के नहीं रहने के बाद ,तुम्हारी जिम्मेदारी बहुत बढ़ जाएगी ।कुसुम ने अश्वनी की हिम्मत बढ़ाते हुए कहा ,ये तुम्हारे परीक्षा की घड़ी है अपनी माँ और बहनो के सिर्फ तुम ही एक सहारा हो ,अपनी हिम्मत मत हारना और मेरे लायक कुछ काम हो तो बताना ।इतना कह कर कुसुम वहां से चली गई ।कुसुम ने जो बातें कही वो नई नहीं थी ,पिता जी के देहांत के बाद सभी लोग यही बात कह रहे थे परन्तु जब इन्ही बातो को कुसुम ने कहा तो एक अलग सुकून का एहसास हुआ

Single User Licensed To sh_sharma77@yahoo.co.in. Any further distribution is Illegal. Ref. www.educreation.in

।मुझे ऐसा लगा की मै अकेला नहीं हूँ,मेरे कठिन समय में कोई है जो मेरी मदद कर सकता है ।शायद ये भी एक आकर्षण ही था जो घर में पिछले दरवाजे से प्रवेश कर रहा था|

आज बहुत दिनों के बाद अश्वनी थोड़ा अलग और अच्छा महसूस कर रहा था ।अब हर रविवार को अश्वनी कुसुम का इंतज़ार करता और और शायद कुसुम भी ,इसलिए उन दोनों की मुलाकात हो जाती थी ।धीरे -धीरे नदी ने अपना मार्ग बदलना शुरू कर दिया ,अब इस मार्ग में सुगन्धित और खूबसूरत फूलो के पेड़ थे ।जल इतना स्वच्छ था कि अंदर की मछलियाँ साफ़ दिख रही थी| आस -पास के जीव -जंतु इस नदी के पास आकर बैठते और जल पीते है|विशाल आकाश के निचे ये नदी कल -कल करती हुई स्वछंद बहती जा रही थी |एक दिन में कितने घंटे होंगे ये इंसान के मानसिक स्थिति पे निर्भर करता है अगर इंसान खुश हो तो पूरा दिन 2 -4 घंटो में गुजर जाता है और अगर दुखी या निराश हो तो एक दिन गुजरने में कई वर्ष लग जाते है |अश्वनी का एक वर्ष कुछ महीनो में गुजर गया |इन गुजरे हुए वक्त में दोनों का प्रेम सातवे आसमान पे पहुँच गया था ,अब तो साथ जीने मरने की बाते होने लगी थी |

स्त्रियाँ स्वभाव से भावुक होती है परन्तु अपने भावनावो पे पुल बनाना जानती है जिसपर चल कर वो मंजिल को प्राप्त कर लेती है पुरुष इस कला में निपुण नहीं होते है जिसके कारण अक्सर वो भावनाओ में बह जाते है |अश्वनी भी भावनाओ में बह गया था पहले वो अपने परिवार और जिम्मेदारी के सोंच में डूबा रहता था अब उसका ज्यादा समय कुसुम के साथ या फिर उसके दिवास्वप्न में गुजरता है |अब उसके जीवन में माँ और बहन का स्थान कुसुम के बाद आ गया था |पढाई के साथ -साथ अश्वनी ने एक साधारण वेतन की नौकरी शुरू कर ली थी जिससे उसका गुजर -बसर आराम से हो रहा था |दो वर्षो के बाद अश्वनी अपनी माँ से मिलने घर गया |माँ अपने उम्र से ज्यादा वृद्ध दिख रही थी

Single User Licensed To sh_sharma77@yahoo.co.in. Any further distribution is Illegal. Ref. www.educreation.in

और बहने अपने उम्र से ज्यादा युवा |घर की हालत ऐसी थी की किसी तरह से चार लोगो का गुजारा हो पा रहा था |अश्वनी को देखते ही माँ और बहनो में एक ऊर्जा आ गई |बहनो ने उसे खाने में तरह तरह के पकवान परोसे ,जिसे खाये उन्हें महीनो गुजर गए थे |अश्वनी को देख कर कुछ देर के लिए माँ को रामेश्वर सिंह के नहीं रहने का दुःख भी जाता रहा |गांव के बड़े बुजुर्ग अश्वनी को देख कर उसे बिठाया और कहा बेटे अब बहने जवान हो गई है इनके हाँथ पिले कर दो |मेरे आने की खबर सुन कर गांव की औरते माँ के पास आने लगी और कहने लगी की बेटा आया है इस बार एक बेटी की शादी कर दो ,माँ भी हामी भरते हुए कहती थी हां अश्वनी आया है कुछ करेगा ,हमारा तो अब वही सहारा है |छुट्टियां ख़त्म हो गई एक सप्ताह गांव में रहने के बाद वो शहर आने की तैयारी करने लगा|मस्तिष्क में तरह -तरह के विचार आ रहे थे दिल कह रहा था माँ और बहन को छोड़ कर ना जाऊ ,मस्तिष्क कह रहा था अगर यहाँ रहा तो मेरे भविष्य का क्या होगा ,पैसे कहा से आएंगे ,फिर मन में विचार आया की माँ और बहन को साथ ले जाऊ ,पर आर्थिक स्थिति ऐसी नहीं थी की सब का गुजारा हो सके |दिल और दिमाग के इस युद्ध में जीत किसी की हो पर मैं हारा हुआ महसूस कर रहा था | घर से निकलते समय माँ के आँखों से अश्रु धारा बह रही थी ,बहने दरवाजे पे खड़ी होकर एक टक से मुझे देख रही थी |अंदर ही अंदर मैं अपने आप को धिक्कार रहा था |पिता जी और उनकी बातें मुझे याद आ रही थी | याद आ रही थी कि पिता जी को उसपर कितना विश्वास था ,अपनी धन -संपत्ति खो देने के बावजूद भी वो सिर्फ उसे देख कर खुश हो जाते थे | मुझे अपने -आप पर ग्लानि महसूस हो रही थी की पिता जी के अधूरे काम को मैं पूरा नहीं कर पा रहा हूँ | ट्रेन की खिड़की से ,चलती हुई पेड़,खेत ,घर और बिजली के खम्भों में बचपन ,माँ ,पिताजी और बहनो के चलचित्र नजर आ रहे थे |

Single User Licensed To sh_sharma77@yahoo.co.in. Any further distribution is Illegal. Ref. www.educreation.in

शहर आये कई दिन हो गए ,अश्वनी अपने काम में व्यस्त रहा |एक दिन कुसुम आई और बोली ,इतने दिन हो गए मिलने क्यों नहीं आये |अश्वनी ने कहा छुट्टियों से आने के बाद काम थोड़ा ज्यादा था इसलिए व्यस्त था |कुसुम ने कहा मेरे पिता जी आये हुए है मैंने उन्हें तुम्हारे विषय में बताया है वो तुमसे मिलना चाहते है |अश्वनी न चाहते हुए भी हामी भर दी ,क्यों की वो कुसुम को दुखी नहीं करना चाहता था |अगले दिन ऑफिस से निकल कर अश्वनी सीधा कुसुम के घर चला गया |श्रीवास्तव जी बड़े सुलझे हुए और सूझ - बुझ वाले व्यक्ति थे |उन्होंने बात -चीत की शुरुआत महानगर और गावों के जीवन शैली से की ,उन्हें पता था की अश्वनी भी छोटे शहर का रहनेवाला है |अश्वनी शुरुआत में थोड़ा असहज महसूस कर रहा था परन्तु थोड़ी ही देर में वो श्रीवास्तव जी से घुल मिल गया |

श्रीवास्तव जी को अश्वनी के व्यक्तित्व को समझने में ज्यादा वक्त नहीं लगा |कुसुम के जीवन साथी में जिन गुणों की उन्होंने कल्पना की थी करीब -करीब वो सारे गुण अश्वनी में उपस्थित थे |उन्होंने कहा बेटा आज का दिन मेरे लिए बहुत महत्वपूर्ण है ,आज मेरी दो इच्छाएँ पूरी हो गई |अश्वनी थोड़ा आश्चर्य चकित होकर कुसुम की तरफ देखा और मुस्कुराते हुए कहा मुझे भी कुछ बताइये |श्रीवास्तव जी ने कहा ,कुसुम के जन्म के समय से ही मेरी प्रबल इच्छा थी की ये पढ़ -लिख कर एक ऊँचे पद को हांसिल करे ,एक दिन पहले कुसुम का रिजल्ट आया है और इसका चयन भारत सरकार में विदेश सेवा(फॉरेन मिनिस्ट्री) के लिए हुआ है ,दूसरी इच्छा जो हर पिता की होती है की उसके पुत्री को एक योग्य वर मिले ,और तुममे मैं वो सारे गुण देखता हु जो कुसुम को एक सुखी जीवन दे सके |कुसुम के सारी बहनो की शादी हो चुकी है अब मेरी इच्छा है की इसकी शादी कर के अपने उत्तरदायित्व से निवृत्त हो जाऊँ|पांच -छः महीने में कुसुम किसी विदेश के एम्बेसी में चली जाएगी ,मैं चाहता हूँ इससे पहले तुम दोनों की शादी हो

Single User Licensed To sh_sharma77@yahoo.co.in. Any further distribution is Illegal. Ref. www.educreation.in

जाये तुम साथ रहोगे तो विदेश में वो अकेलापन महसूस नहीं करेगी |अश्वनी बहुत खुश था सबलोगो ने साथ खाना खाया ,कुसुम ने प्रेम भरे शब्दों में अश्वनी से माफ़ी मांगी की उसने रिजल्ट के बारे में उसे नहीं बताया ,वो चाहती थी की ये बात उसके पिता जी बताये |ख़ुशी का आकार बहुत बड़ा होता है इतना बड़ा होता है की पुरे हृदय में समा जाता है |अश्वनी के हृदय में भी आज ख़ुशी के सिवाए और कोई स्थान नहीं था |घर से आने के बाद उसके ह्रदय में जो विकार उत्पन्न हो गई थी अब वो जाती रही |अपने आने वाले जीवन और जीवन संगनी के बारे में सोंच कर आह्लादित हो रहा था |अश्वनी और कुसुम का सम्बन्ध अब पहले से भी ज्यादा प्रगाढ़ और मजबूत हो गया था |अब उनका पूरा ध्यान अपने आने वाले कल को सुन्दर और व्यवस्थित बनाने में लग गया था |इन सब कौतुहल और मानसिक शोर गुल में अश्वनी अपनी माँ और बहनो को जैसे भूल ही गया |इधर अश्वनी अपने आने वाले कल की तैयारी में लगा था और उधर उसकी माँ और बहन कई प्रश्नो में घिरे थे और उनके हर प्रश्न का सिर्फ एक ही उत्तर था, अश्वनी |

शरद ऋतू अपने अंतिम चरण पर है और ग्रीष्म ऋतू का आरम्भ हो चूका है |अश्वनी अपने घर के बालकनी में बैठा है और अपने और कुसुम के आने वाले कल के दिवास्वप्न में खोया है |नीला आसमान और ठंढी हवा वातावरण को खुशनुमा बना रही है अश्वनी की नज़र अपने घर से लगे एक पेड़ पर परी जहाँ एक चिड़िया ने घोसला बना रखा था |एक चिड़िया घोसले के पास बैठी है और दूसरी उड़ कर जाती और थोड़ी देर बाद छोटे -छोटे तिनके लेकर वापस चली जाती और घोसले के पास बैठी चिड़िया उन तिनको को घोसले में लगा देती |यही प्रक्रिया काफी देर से चल रही थी |अश्वनी इस क्रियाकलाप को बरे ध्यान से देख रहा था और आनंदित हो रहा था |अचानक डाल पर बैठी चिड़िया चहकने लगी और इस डाल से उस डाल पर फुदकने लगी , गौर से देखा

Single User Licensed To sh_sharma77@yahoo.co.in. Any further distribution is Illegal. Ref. www.educreation.in

तो पाया की बहुत समय गुजर जाने के बाद भी पहली चिड़िया वापस नहीं आयी थी ।मैंने घोसले में झांक कर देखने की कोशिस की तो वहाँ मुझे 2 -3 अंडे दिखे ।डाल पर बैठी चिड़िया की बेचैनी बढ़ रही थी वो आसमान की तरफ देखती हुई चहक रही थी और इस डाल से उस डाल पर कूद रही थी ।अचानक आसमान में काले-काले बादल आ गए और धीरे -धीरे सूरज को घेरने लगे ।डाल पर बैठी चिड़िया की घबराहट बढ़ने लगी वो तेज आवाज में चहचहाने लगी परन्तु पहली चिड़िया का कुछ अता-पता नहीं था ।शायद उन दोनों चिड़ियों को मौसम में होने वाले बदलाव की पहले से आशंका थी, इसलिए वो अपने घोसले को मजबूत बना रहे थे ताकि उनके अंडे सुरक्षित रहे । मेरी भी नजरे पहली चिड़िया को इधर -उधर ढूँढ रही थी पर वो कही नजर नहीं आ रही थी ।अचानक जोर की मूसलाधार बारिश शुरू हो गई ,डाल पर बैठी चिड़िया अपने घोसले के पास आकर बैठ गई ,पानी की तेज धार से अपने घोसले और अंडे को बचाने की कोशिश करने लगी पर शायद घोसले की मरम्मत में थोड़ी कमी रह गई थी थोड़ी ही देर में पानी के तेज धार में घोसला बह गया और अंडे जमीं पर गिर कर फूट गए ।डाल पर की चिड़िया अभी डाल पर ही बैठी है शायद उसे विश्वास है की बारिश ख़त्म होने पर पहली चिड़िया वापस आएगी ।थोड़ी देर में बारिश थम गई ,जमीं पर गिरे अंडो को कुत्ते लूट कर ले गए ।डाल की चिड़िया को अब विश्वास हो चला था की पहली चिड़िया अब नहीं आएगी ,उसने एक जोर की चीख लगाई और खुले आकाश में छलांग लगा दी ,थोड़ी ही देर में वो मेरी नजरो से ओझल हो गई ।मैं मंत्र -मुग्ध होकर इस घटना चक्र को देख रहा था ।एक कराल छाया मेरे मस्तिष्क पर छा रही थी मुझे ऐसा महसूस हो रहा था की मैं महीनो बाद नींद से जागा हूँ।उस चिड़िया की चीख मेरे कानो में गूंज रही थी उसका दर्द और अंडे के फूटने का भयानक दृश्य मेरे हृदय पर भारी हो रहा था ।मेरे दिल से उस चिड़िया के लिए श्राप

Single User Licensed To sh_sharma77@yahoo.co.in. Any further distribution is Illegal. Ref. www.educreation.in

निकल रही थी जो सब को मुसीबत में छोड़ कर भाग गया और वापस नहीं आया ।

अश्वनी और कुसुम का मिलना जुलना चलता रहा ।नवीन पल्लवों के कोमल स्पर्श से उनका जीवन पुलकित हो रहा था ।एक दिन कुसुम ने अश्वनी से कहा अब हम दोनों को शादी कर लेनी चहिये ,एक महीने के बाद मुझे कनाडा जाना पर सकता है मैं चाहती हूँ कि शादी के बाद हम दोनों साथ में जाये ।अश्वनी कुसुम की बातें सुन कर मौन रहा ,कुसुम मुस्कुराते हुए कही ,क्या हुआ किस सोंच में पर गए ,शादी के नाम से डर तो नहीं लग रहा है ।अश्वनी ने गंभीरता से कहा नहीं ऐसी बात नहीं है मैं चाहता हूँ की पहले बहनो की शादी कर दू फिर मैं शादी करू ।कुसुम आश्चर्य प्रकट करते हुए बोली ,क्या मतलब ,अब हमारे पास सिर्फ एक महीना है तुम्हे क्या लगता है ,एक महीने में तुम अपने तीनो बहन की शादी कर लोगे ।अश्वनी के पास इसका कोई जवाब नहीं था ,उसकी चुप्पी कुसुम के क्रोध को और बढ़ा रही थी ।बहुत देर तक सवाल -जवाब का दौर चलता रहा ,दोनों अपनी बात बनवाने की कोशिश करते रहे ,अपनी जीत के लिए तर्क -वितर्क में कोई कमी नहीं छोड़ी।थोड़ी ही देर में उन्हें ये एहसास हो गया की इस समस्या का समाधान अब वो नहीं कर पाएंगे ।दोनों एक दूसरे को पाना चाहते थे पर अपनी शर्तो पर ।कुसुम ने इस समस्या के समाधान और अश्वनी को समझाने के लिए अपने पिता जी को भेजा। श्रीवास्तव जी अपने बेटी का उज्जवल भविष्य चाहते थे ,वो चाहते थे कि कुसुम अश्वनी से शादी कर के सुखी जीवन व्यतित करे , अश्वनी को उन्होंने उज्वल भविष्य के बारे में विस्तार से समझाया ,उन्होंने बताया की पत्थरो के सीने में कील ठोके बिना महत्वाकांक्षा के ऊँचे पहाड़ पर चढ़ना मुश्किल होता है ।जीवन में वही लोग कामयाब होते है जो भावनावो के प्रभाव से ऊपर उठ जाते है ।अश्वनी ने शांत मुद्रा में सारी बातें सुनी और कहा मुझे थोड़ा वक्त चाहिए ,मैं अपने नए जीवन के शुरुआत से पहले अपने

Single User Licensed To sh_sharma77@yahoo.co.in. Any further distribution is Illegal. Ref. www.educreation.in

उत्तरदायित्व को पूरा करना चाहता हूँ ।इंसान का पहला उद्देश्य जीवन है सफलता -असफलता जीवन नहीं ,जीवन के दो पहलु है ,अगर मैं अपने कर्त्तव्य से विमुख को गया तो इस जीवन को जी नहीं पाउँगा ,फिर मैं कुसुम को क्या दे पाउँगा |श्रीवास्तव जी अपनी बेटी के ख़ुशी के लिए थोड़े से स्वार्थी हो गए थे पर उन्हें अश्वनी की बातो में सच्चाई नजर आ रही थी, वो वहाँ से उठ कर चले गए ।फिर कभी कुसुम और अश्वनी की मुलाकात नहीं हुई ।

सही दिशा और ज्ञान की प्राप्ति सिर्फ पेड़ के निचे या पर्वत पर बैठ कर तपस्या करने से नहीं आती है हमारे आस पास कई ऐसी घटनाये घटती है जो हमे जीवन में सही दिशा दिखाती |ये बात और है की हम उन घटनाओ के संकेत को समझ पाते है या नहीं |वो चिड़िया जो बारिश में अपने साथी और अंडे को छोड़ कर चली गई थी कुछ दिनों बाद वापस आई थी ,उसी डाली पर घंटो बैठी रही, गुम-सुम बिलकुल शांत |अश्वनी उसे हर दिन सबेरे उसी डाली पर बैठे , पछताते देखता था ,पर इसका कोई लाभ नहीं था क्यों की उसने अपना सब कुछ खो दिया था |शायद उस चिड़िये के अफ़सोस और पीरा को देख कर अश्वनी ने अपने कर्तव्य को पूरा करने का निर्णय लिया चाहे इसके लिए उसे कोई भी कीमत चुकानी परे |

अश्वनी के सबसे छोटी बहन की शादी ठीक हो गई है उसी के तैयारी के लिए वो घर जा रहा है |शरद ऋतू अपने चरम पर है कुहासे ने अपना पूरा साम्राज्य फैला रखा है |रात के 10 -11 बज रहे होंगे ,बस के इंतजार में कुछ मुसाफिर खड़े है कुछ पास में जल रही आग के पास बैठे है | उन्ही मुसाफिरों में से कोई एक गीत गा रहा है जिसे सुन कर अश्वनी का ह्रदय ,पक्षी की तरह ,एक दिशाहीन आसमान में गोते लगा रहा है |

Single User Licensed To sh_sharma77@yahoo.co.in. Any further distribution is Illegal. Ref. www.educreation.in

साँझ ढ़ले, गगन तले, सब पंछी अपने घर को चले
हम भूल चुके उन राहो को, जिस राह पे हम तुम संग थे चले
अधूरी ये शाम है अधूरा तेरा नाम है |
अधूरी ये रात है अधूरी मेरी बात है ||
अधूरी ये जिंदगी, अधूरी तेरी बंदगी |
अधूरा है ये समां, अधूरा मेरा आसमा||
अधूरा है ये शहर, अधूरा तेरा हमसफ़र |
अधूरी ये सर्द है, अधूरा मेरा दर्द है ||
साँझ ढ़ले, गगन तले, सब पंछी अपने घर को चले
हम भूल चुके उन राहो को, जिस राह पे हम तुम संग थे चले

****

Single User Licensed To sh_sharma77@yahoo.co.in. Any further distribution is Illegal. Ref. www.educreation.in

चांदी की छड़ी

सूरज की किरणे घने पेड़ों को चीरती हुई सीधे ज़मीन को छू रही है |रात भर की गहरी नींद के बाद पक्षी वृक्ष के डालो पर बैठ कर जम्हाई ले रहे है और धीमे -धीमे स्वर में कोई गीत गुन-गुना रहे है |सड़के अभी शांत और रुकी हुई है |थोड़ी देर बाद उसकी दौड़ शुरू हो जाएगी, जो रात तक चलेगी |हरी -हरी घांसो और पत्तियों पर ओस की बूंदो का स्पर्श उसे और भी जीवंत बना रही है | भूखी गायें और भैस एक सुर में आवाज़ लगा कर अपने मालिक को नींद से उठा रहे है । बच्चो की नींद अभी तक खुली नहीं है ,युवा अपनी नींद खोना नहीं चाहते है ,बड़े बुजुर्ग पहले पहर में उठ कर अपने घरो -झोपड़ियो के दरवाजे पे बैठ कर आने वाले सुबह का इंतज़ार कर रहे है|

वैसे तो इस गाँव में बहुत से मकान है पर उनमे से कुछ पक्के के है और इन पक्के मकानों में सबसे पुरानी मकान सीता राम साहू की है। मकान की बाहरी दीवार एक बूढ़े आदमी की तरह झुक गई है ,दीवारों के ऊपरी हिस्से में पीपल और जंगली पौधे उग आये है मकान के अंदर की स्थिति भी कुछ ऐसी ही है ।सीताराम बरामदे पे लगी चौकी पे बैठ कर अपने हुक्के की तैयारी कर रहे है ।लम्बा कद ,गेहुआ रंग और उम्र करीब 60 वर्ष के आस -पास ।घर की बनावट हवेली नुमा है एक बड़ी सी लकड़ी के दरवाजे के अंदर जाने पे एक बड़ा सा आंगन है जिसके फर्श पर पत्थर जरी हुई है ,आँगन के चारो तरफ चौड़ा गलियारा है और इन गलियारे से आगे बड़े-बड़े तीन चार कमरे है ।सीताराम की बैठकी इसी गलियारे में लगती है ।गांवो के लोग कहते है एक समय था जब नर्तकियां इस आँगन में नृत्य किया करती थी, सीताराम साहू के पिताजी और उनके जमींदार मित्र यहाँ बैठ कर नृत्य का आनंद

Single User Licensed To sh_sharma77@yahoo.co.in. Any further distribution is Illegal. Ref. www.educreation.in

लेते थे ।सीताराम ने ये सब कभी देखा नहीं था सिर्फ लोगो से अपने पिताजी के ऐशो आराम के बारे में सुना था । अब इस आँगन में सन्नाटे गीत गाते है तन्हाईया नृत्य करती है और सीताराम गलियारे पे लगी चौकी पे बैठ कर इसका आनंद लेते है ।सीताराम साहू की उम्र जब 4-5 वर्ष की रही होगी ,तभी उनके पिताजी का स्वर्गवास हो गया ,तब से लेकर आज तक उन्होंने उनके बारे में लोगो से प्रशंशा ही सुनी है ।लोग कहते है की हरकिशन बाबू इस इलाके के सबसे बड़े जमींदार थे ,बड़े -बड़े अंग्रेज अफसर और जमींदार उनके दीवानखाने में बैठा करते थे । हाथी -घोड़ो का उन्हें शौक था , वो गरीबो की बहुत मदद करते थे और पता नहीं क्या -क्या ।इन तमाम बड़ी-बड़ी चीजों में अब सीताराम साहू के सामने कुछ भी नहीं है ,सिर्फ एक चीज को छोड़ कर ,वो है अपने पिताजी की छड़ी,बेहद खूबसूरत जिसमे जगह ,जगह पे चांदी की पत्तर लपेटी हुई है और उसपर खूबसूरत नकाशी भी की हुई है ।छड़ी के हत्थे पे कुछ कीमती पत्थर भी जड़े है ।इस छड़ी को देखने के बाद सीताराम गौर्वान्वित महसूस करते है और ये छड़ी उन लोगो की बातों पे यकीन भी दिलाती है कि वास्तव में उनके पिता जी बहुत धनवान और प्रतिष्ठित व्यक्ति थे ।

यथार्त से कोसो दूर सीताराम साहू ने इस छड़ी के सहारे अपनी पूरी जवानी काट दी, शादी ब्याह भी हो गया, तीन बच्चे भी हो गए परन्तु उन्हें कभी भी अपने वास्तविक स्थिति का अहसास नहीं हुआ |जो किस्सा गांव के लोग सीताराम को उनके पिता जी के बारे में सुनाते थे वही किस्सा वो घर में अपनी पत्नी रमावती और बच्चे राम साहू, श्याम शाहू और घनश्याम साहू को सुनाते थे और सबूत के तौर पर वो चाँदी की छड़ी दिखाते थे |

समय का चक्र आगे बढ़ता रहा ,सीताराम साहू गांवो वालो की बातें और पिता जी की छड़ी देख -देख कर गर्वान्वित होते रहे और उनकी आर्थिक स्थिति दिन पर दिन ख़राब होती गई |थोड़ी

Single User Licensed To sh_sharma77@yahoo.co.in. Any further distribution is Illegal. Ref. www.educreation.in

बहुत खेती थी जिसमे आधी बिक गई जो आधी बची थी उसमे घर का गुजारा बहुत मुश्किल से चल पाता था |बच्चे भी अब जवान हो गए थे उनके भी कुछ अपने खर्च थे जो कभी पुरे होते थे कभी नहीं |सीताराम साहू अब पहले जैसे जवान और ऊर्जावान नहीं थे अब उनका ज्यादा वक्त घर पर ही गुजरता था |घर के राशन -पानी ,देख -रेख का सारा काम सबसे बड़ा पुत्र राम साहू किया करता था | गाँव वाले हमेशा की तरह उसे भी उनके दादा जी के किस्से सुनाते और उनके गुण गाते|बस फर्क इतना था की लोगो के जिन बातो को सुनकर सीताराम साहू गर्वान्वित होते थे उन बातों से राम साहू क्रोधित हो जाता था |उसके मन में हजारो प्रश्न उत्पन होने लगते थे ,अगर मेरे पूर्वज इतने धनी सम्पन थे तो आज हमारी स्थिति ऐसी कैसे हो गई ,वो सारी धन सम्पति , ज़मीन,जायदाद कहा चले गए और ये गरीबी और निर्धनता कहा से आ गई |राम साहू के मष्तिष्क में ये बाते घर कर गई थी और एकांत में बैठ कर वो इसके बारे में सोंचता रहता था |एक दिन ये सारी बाते वो सीताराम साहू से पूछ बैठा,सीताराम साहू ने बहुत ही शांत और गंभीर स्वर में बोला,तुम्हे अपने पूर्वजो पर गर्व होना चाहिए न की उनकी वैभव और सम्पन्नता पे शक |आज लोगो के दिलो में जो हमारी इज्जत और सम्मान है वो सब हमारे पूर्वजो की देन है |धन का क्या है बहुत सारे लोगो ने बहुत धन कमाए पर आज भी उनका सर हमारे आगे झुक जाता है और वो हमारे पूर्वजो की प्रशंशा करते नहीं थकते है |राम ने उन्हें रोकते हुए कहा मेरा प्रश्न यह नहीं है, मेरा प्रश्न है की आज हमारे परिवार के इस दयनीय स्थिति का जिम्मेदार कौन है आप या आपके पूर्वज |सीताराम साहू के पास इसका कोई जवाब नहीं था परन्तु पिता थे ,पुत्र के सामने हार या अपनी कमजोरी स्वीकार नहीं कर सके और उठ कर खड़े हो गए और जोर -जोर से राम साहू पे चिल्लाने लगे |तू कौन होता है ये सब पूछने वाला ,अगर तुम्हे इतनी दिक्कत है तो अपनी क़ाबलियत से सब कुछ ठीक कर लो या फिर चुप

Single User Licensed To sh_sharma77@yahoo.co.in. Any further distribution is Illegal. Ref. www.educreation.in

रहो ,बिना हाथ -पैर हिलाये -डुलाये जब पेट में अन्न के दाने भर जाते है तब मस्तिष्क में हजारो सवाल उठते ही है | बाप बेटे के झगड़े को बढ़ता देख रमावती वहाँ आ गई और राम साहू को समझाते हुए घर के अंदर ले कर चली गई |राम एक गंभीर स्वभाव का बहुत ही स्वाभिमानी लड़का है |आज पहली बार उसे एहसास हुआ की सारे सवालो का जवाब सिर्फ उसके पास ही है |पूर्वजो के सम्पनता को उसे ही वापस लानी है |जब तक वो इस कार्य को पूरा नहीं कर लेता है चैन से नहीं बैठेगा |रात भर उसके मस्तिष्क में यही सारी बाते घूमती रही और अंत में वो एक निष्कर्ष पे पहुंचा ,रात के सन्नाटे में वो घर से निकल गया ,कहाँ जाना है किसके पास जाना है कुछ पता नहीं ,बस सर पे एक जुनून सवार था जो उसे एक अनजान और अनदेखी दुनिया के तरफ ले कर चला गया |

अगले दिन सुबह में राम को घर में न देख कर , रमावती थोड़ी परेशान हो गई ,उसने सीताराम से कहाँ पता नहीं सबेरे -सबेरे राम कहाँ चला गया ,सीताराम ने कहाँ कही गया होगा थोड़ी देर में आ जायेगा |वो थोड़ी देर एक सप्ताह में बदल गई लेकिन राम घर नहीं आया |आस -पास के लोग तरह -तरह की बातें करने लगे |सीताराम रोज सुबह -सुबह घर से निकलते और दिन भर आस -पास के गांवों ,नदियों ,रेलवे स्टेशन ,मंदिरो ,मठो में अपने बेटे को ढूंढते, की कही बैठा होगा तो मना कर घर वापस ले आयेंगे |दो -तीन महीने हो गए ,हर दिन शाम में सीताराम अकेले ही घर आते है राम का कुछ पता नहीं चला | रमावती भी अब निराश हो गई थी और बात -बात पर सीताराम को ताने मारती की तुम्हारे कारण राम घर छोड़ कर चला गया |राम के जाने के बाद सीताराम कमजोर और असहाय महसूस करते ,अपने किस्मत को कोसते और जब कभी अकेले में बैठते तो खूब रोते थे|

Single User Licensed To sh_sharma77@yahoo.co.in. Any further distribution is Illegal. Ref. www.educreation.in

समय का चक्र चलता रहता है किसी अच्छे या बुरे परिस्थिति को देख कर रुकता नहीं है | रमावती अब पहले से ज्यादा चिरचिरी हो गई थी और सीताराम पहले से ज्यादा बूढ़े |पैसे की तंगी इस घर को न छोड़ने की कसम खा रखी थी और थोड़े में गुजारा करना इस घर की किस्मत बन गई थी |सीताराम साहू के दूसरे पुत्र श्याम का घर से बाहर आना -जाना अधिक हो गया था |श्याम शाहू हिस्ट-पुस्त शरीर वाला ताकतवर युवा है उसमे अत्यधिक ऊर्जा और शक्ति है |वह स्वभाव में राम की तरह शांत नहीं बल्कि उग्र है | कहते है की युवा शक्ति के समक्ष परमाणु शक्ति भी कमजोर है ,परमाणु शक्ति की तरह युवा शक्ति का इस्तेमाल भी अगर गलत दिशा में की जाये तो विध्वंस पैदा करती है ,और अगर सही दिशा में की जाये तो क्रांति उत्पन होती है ,समाज नई दिशा की ओर अग्रसित होता है और समृद्धि आती है | गंगा नदी के किनारे बसे इस गावों में ज्यादा संख्या इस्लाम धर्म के मानने वालो की है हिन्दू और अन्य धर्मो के मानने वालो की संख्या बहुत कम है |इस गांव की ये खासियत है की यहाँ हर घर में तुलसी के पौधे है और घर -घर में गाये है, कुछ मंदिर और मठ भी है जिसपे किसी की भी बुरी नजर नहीं पड़ती है |गावों में सभी सम्प्रदाय के लोग एक दूसरे को इज्जत और सम्मान देते है |यह एक ऐतिहासिक तथ्य है कि हिन्दू धर्म के लोग जितनी प्रतिस्प्रद्धा इस्लाम से करते है उतनी प्रतिस्प्रद्धा विश्व का कोई दूसरा सम्प्रदाय इस्लाम से नहीं करता है |इसका कारण है की इस्लाम के मानने वालो ने अपने धर्म के प्रचार और प्रसार के क्रम में हिन्दुओ और बौद्धों पर बहुत बर्बरता से प्रहार किया था ,ऐसी बर्बरता विश्व के इतिहास में किसी धर्म ने दूसरे धर्म के साथ नहीं किया है | इस्लामिक ख़लीफ़ो ने गैर इस्लामिक समुदाय के सामने तीन प्रस्ताव रखे " स्वेच्छा से कुरान को अपना लो ",या "जो कर माँगा जाये वो कर दो" या फिर "मेरी तलवार को झेलने के लिए तैयार हो जाओ " | गांवो के बड़े बुजुर्ग कहते है की एक ऐसा ही

Single User Licensed To sh_sharma77@yahoo.co.in. Any further distribution is Illegal. Ref. www.educreation.in

पागल बादशाह यहाँ आया था जिसने यहाँ के सभी लोगो को जबरदस्ती इस्लाम कुबूल करवाया |जिन लोगो ने कठिन से कठिन यातनाओ को सहने के बाद भी अपने धर्म को नहीं छोड़ा वो आज भी हिन्दू है और जो यातनाओं को बर्दास्त नहीं कर सके उन्होंने अपना धर्म बदल लिए |यहाँ के मुस्लिम हिन्दुओ को बहुत इज्जत देते है, कहते है की ये हमारे वही पूर्वज है जिन्होंने कठिन से कठिन यातनाओ को सहने के बाद भी अपने धर्म को नहीं छोड़ा और हिन्दू मुस्लिमो को प्यार और स्नेह की दृष्टि से देखते है और कहते है की ये हमारे पूर्वज है जिनपे इतने जुल्म किये गये की ये बर्दास्त नहीं कर सके और टूट गये |अलग-अलग सम्प्रदाय के लोगो के रहने के बाबजूद यहाँ की जीवन शैली एक जैसी है| इस गांव के सबसे ताकतवर और प्रभावशाली व्यक्ति है सुलेमान मियाँ |गांव के सभी लोग उनकी इज्जत करते है और वो भी किसी के समस्या के समाधान में बढ़ -चढ़ कर हिस्सा लेते है |दो चीजों से उन्हें बड़ा लगाव है पहला तम्बाकू और दूसरा युवा |तम्बाकू उनके सोंचने की क्षमता को बढाती है और युवा उनके बाजुओं के ताकत को |उनके लच्छेदार बातें और दिवास्वप्न दिखाने के क्षमता के कारण, युवाओं का एक समूह हमेशा उनके साथ- साथ रहता है और उनके एक इशारे पे मरने मिटने के लिए तैयार हो जाता है |श्याम साहू का ज्यादा वक्त मित्रो के साथ गांव की गलियों और चौराहो पर गुजरती है | उनके जीवन का न कोई उद्देश्य है न कोई दिशा, बस इधर -उधर भटकना |

एक दिन किसी सभा में श्याम की मुलाकात सुलेमान मियाँ से हो गई |जब सुलेमान मियाँ को ये पता चला की ये सीताराम साहू के दूसरे पुत्र है तो वो वो उनसे गर्मजोशी से मिले और कहने लगे, बेटा तुम्हारे खानदान को मैं जितने अच्छे से जानता हूँ शायद ही यहाँ कोई जानता होगा |तुम्हारे दादा जी के जैसा प्रभावशाली व्यक्ति मैं अपने जीवन में नहीं देखा |माँ लक्ष्मी की उनपर साक्षात् कृपा थी ,सुबह से शाम तक तुम्हारे घर पे अंग्रेज अफसर ,नवाबों

Single User Licensed To sh_sharma77@yahoo.co.in. Any further distribution is Illegal. Ref. www.educreation.in

और जमींदारों का आना-जाना लगा रहता था | एक वक्त था जब इस गांव की आधी ज़मीन तुम लोगो की ही थी |इन सब बातो को सुन कर श्याम खुश हो गया और उसका सीना गर्व से और भी चौड़ा हो गया |थोड़े ही समय में श्याम और सुलेमान मियाँ की घनिष्टता बहुत बढ़ गई ,अब श्याम सुलेमान मियाँ को अपना सबसे बड़ा हितैषी समझने लगा|

श्याम का घर से ज्यादा बाहर रहना उसकी माँ रमावती को ठीक नहीं लगता था |उन्होंने कई बार श्याम को समझाया भी, की पढाई - लिखाई,खेती -बारी पे ज्यादा ध्यान दो ,दोस्तों के साथ इधर उधर भटकने का कोई फायदा नहीं है |अपने काम से अगर वक्त बचता है तो अपने छोटे भाई और पिताजी के साथ गुजारा करो |पर इन सब बातो से श्याम के कानो पे जू भी नहीं रेंगता था |वो तो बस अपने दोस्तों के साथ अपनी दुनिया में मस्त था | कुछ ही समय में वो सुलेमान मियां का शागिर्द बन गया और हर दिन शाम में सुलेमान मियां के बैठक में शामिल होने लगा |एक दिन सुलेमान मियां ने श्याम से कहा बेटा तुम्हे अपने जमीं जायदाद पे ध्यान देना चाहिए ,श्याम ने कहा, क्या हुआ चाचा ,अब जमीं जायदाद है कहाँ ,मिला जुला कर थोड़ी बहुत खेती की ज़मीन बची है |सुलेमान मियां ने कहा ,पता नहीं तुम जानते हो की नहीं पर तुम्हारे बहुत से जमीनों पर दूसरे लोगो ने कब्ज़ा किया हुआ है |मस्जिद के बगल वाली गली में जो पहला ज़मीन का टुकड़ा है जिसमे जुम्मन मियां ने कब्ज़ा कर रखा है वो दरसल तुम्हारी ज़मीन है |तुम्हारे पिता जी ने भी जुम्मन मियां को जमीन खाली करने के लिए बोला था पर वो नहीं माने और ज़मीन खाली नहीं किया |अब तुम्हारे ज़मीन के आस पास बाजार आ गया है उस ज़मीन की कीमत अब चौगुनी हो गई है |तुम एक बार जुम्मन से बात करो ,तुम्हारी ज़मीन है अगर तुम्हारे पास आ जाएगी तो मुझे बहुत ख़ुशी मिलेगी |इस कार्य में अगर मेरी मदद की जरूरत पड़े

Single User Licensed To sh_sharma77@yahoo.co.in. Any further distribution is Illegal. Ref. www.educreation.in

तो बताना |श्याम के ख़ुशी का ठिकाना नहीं था |मानो जैसे उसे कोई खज़ाना मिल गया हो |वैसे भी वो ज़मीन का टुकड़ा सोने से कम नहीं था ,उसकी कीमत लाखो में थी |श्याम के मन में तरह - तरह के ख्याल आने लगे, की वो इस ज़मीन को बेच कर कोई अपना रोज़गार करेगा या फिर इस ज़मीन पे दुकाने बनवाएगा और उसे किराये पर लगाएगा |घर की आर्थिक स्थिति सुधर जाएगी और वो पहले की तरह फिर से धनवान बन जायेगा |अब सवाल ये था की जुम्मन मियां को वहाँ से हटाया कैसे जाये |श्याम साहू तरह -तरह की योजनाए बनाने लगा ,वकीलों और आस पास के दबंगो से राय- मशवरा करने लगा |सुलेमान मियां इन कामो में श्याम का पूरा सहयोग करते थे |

श्याम के इन हरकतों का पता जब सीताराम शाहू को लगा तो उन्होंने श्याम को बुलाया और कहा बेटा जो तुम कर रहे हो ठीक नहीं है जिस ज़मीन पर जुम्मन मियाँ रहते है वो हमारी है ये बात सत्य है पर वो ज़मीन तुम्हारे दादा जी ने उन्हें उनके सेवा भाव से खुश होकर दिया था |ये कही लिखित नहीं है पर सत्य है |अगर तुम उस ज़मीन के लिए कोई विवाद करोगे तो हमारे पूर्वज के आत्मा को बहुत दुःख होगा और हमारी जो इज़्ज़त ,प्रतिष्ठा है वो भी ख़त्म हो जाएगी |श्याम ने कहा पिता जी ,आज उस ज़मीन की कीमत लाखो में है और जो हमारे परिवार की आर्थिक स्थिति है वो आपसे छुपी नहीं है फिर भी आप कह रहे है की मैं वो ज़मीन सिर्फ इसलिए छोड़ दू की हमारे पूर्वजो के आत्मा को दुःख पहुंचेगा | रमावती ने सीताराम को सहयोग देते हुए कहा ,बेटा ,पिता जी जो कह रहे है सही कह रहे है अगर तुम्हे परिवार की इतनी चिंता है तो मेहनत करो और धन कमाओ ,पूर्वजो के संपत्ति के पीछे क्यों भाग रहे हो | रमावती के इस सवाल का जवाब श्याम के पास नहीं था वो उठा और वहा से चला गया |श्याम ने इन सब बातो का जिक्र सुलेमान मियाँ के पास किया |सुलेमान मियाँ ने कहा ,सीताराम जी को अब धन की क्या आवश्यकता है

Single User Licensed To sh_sharma77@yahoo.co.in. Any further distribution is Illegal. Ref. www.educreation.in

उन्होंने अपनी आधी से ज्यादा जिंदगी जी ली है पर तुम्हारे सामने तो पूरी जिंदगी खड़ी है लक्ष्मी खुद तुम्हारे घर आना चाहती है और तुम घर का द्वार खोलना नहीं चाहते ,ये बेवकूफी के सिवा कुछ भी नहीं है | ज़मीन की खबर उड़ते - उड़ते जुम्मन मियाँ तक पहुँच गई |जुम्मन मियाँ की उम्र 80 -85 वर्ष की होगी ,एक समय वो सीताराम साहू के पिता जी हरकिशन बाबू के सबसे विश्वासपात्र और बफादार आदमी थे| उनकी बफादारी से खुश होकर उन्हें रहने के लिए एक ज़मीन का टुकड़ा दिया था | बफादारी और ईमानदारी ऐसे गुण है जो किसी भी इंसान के अंदर हो तो वो प्रसंशनीय हो जाता है |इंसान तो इंसान अगर जानवरो में भी ये गुण आ जाये तो वो प्रसंशनीय हो जाता है |इतिहास गवाह है की आज भी हम उन हाथी और घोड़ो को उनके नाम से याद करते है जो अपने मालिक के लिए बफादार और ईमानदार थे |

जुम्मन मियाँ आज भी अपने मालिक के बेटे और पोते की बहुत इज़्ज़त करते है पर उनके बेटे आफताब और खालिद की सोंच थोड़ी अलग है |उनके कानो में जब ये ज़मीन वाली बात आयी तो उन्होंने अपने मूंछो पे ताव देते हुए कहा ,किस्मे इतनी हिम्मत है की हमे इस ज़मीन से हटा दे ,ये ज़मीन हमारी है | सुलेमान मियाँ इस विवाद में बढ़-चढ़ कर हिस्सा ले रहे थे |इसमें उनका क्या प्रयोजन था ये सिर्फ वही जानते थे |एक दिन उन्होंने जुम्मन मियाँ को अपने घर बुलाया ,श्याम साहू वहा पहले से मौजूद थे ,उम्र में बहुत बड़े होने के बावजूद जुम्मन मियाँ ने श्याम को झुक कर प्रणाम किया और उनके सलामती की दुआ की| ऊपर आसमान की तरफ देख कर उन्होंने अपने मालिक हरकिशन बाबू को याद किया ,उनके आखो में आंसू भरे हुए थे और होठ कप-कपा रहे थे |श्याम को देख कर वो कहने लगे आपके चेहरे में मालिक की छाया है आपको देख कर ऐसा लग रहा है जैसे मेरे सामने मालिक बैठे हो |सुलेमान मियाँ ने कहा जुम्मन मियाँ ,पूरी जिंदगी तुमने

Single User Licensed To sh_sharma77@yahoo.co.in. Any further distribution is Illegal. Ref. www.educreation.in

हरकिशन बाबू के ज़मीन पर गुजार दी अब इसे खाली कर दो ,जुम्मन मियाँ ने हाथ जोड़ते हुए कहा अब इस बुढ़ापे में मैं कहा जाऊंगा ,आपके दादा जी ने मेरा घर बसाया आप उसे मत उजारिये |यह कह कर वो अपने लाठी के सहारे खड़ा हुए और धीरे -धीरे वहा से चलने लगे |जुम्मन मियाँ अभी घर पहुंचे भी नहीं थे की किसी ने आफताब और खालिद को ये खबर दी की सुलेमान मियाँ के घर पर शयाम साहू और जुम्मन मियाँ का बहुत झगड़ा हो रहा है श्याम ने उन्हें बहुत बुरा भला कहा है और जोर का धक्का दिया है उनके पैरो में बहुत चोट लगी है |

इस बात को सुन कर आफ़ताब और खालिद के सर पर खून सवार हो गया और वो सुलेमान मियाँ के घर के तरफ निकल पड़े |अभी वो थोड़ी ही दूर गए थे की चौराहे पे उनकी मुलाकात श्याम साहू से हो गई |दोनों श्याम को देख कर रुक गए और उसे घूरने लगे |श्याम ने उनके इस बर्ताव को देख कर कहा, मेरे बाप -दादा के टुकड़े पर पलने वाला आज मुझसे आँखे मिला रहा है |श्याम के इस बात से आफ़ताब का गुस्सा बेकाबू हो गया और उसने एक ईट का टुकड़ा उठा कर श्याम पर वार किया, पर श्याम इस वार से बच गया |श्याम आफताब की तरफ तेजी से लपका और अपने मजबूत हांथो से उसे जकड़ लिया ,खालिद आफताब की मदद करने की कोशिश कर रहा था पर श्याम उन दोनों पर भारी पर रहा था |तीनो में जोरदार हाथापाई और गाली-गलोज शुरू हो गया था |श्याम के दोस्तों को जब ये पता चला तो वो लाठी -डंडा लेकर घटना स्थल पर पहुँच गए |अपने दोस्तों को देख कर श्याम की हिम्मत और बढ़ गई ,उसने आव -न -देखा -ताव अपने दोस्त के हाँथ से डंडा लेकर आफ़ताब के सर पर दे डाला |आफ़ताब अपने सर को पकड़ वही बैठ गया और थोड़ी ही देर में मूर्छित हो गया |उसके सर से बहुत खून बह रहा था ,खून देख कर श्याम और उसके दोस्त वहाँ से नौ -दो- ग्यारह हो गए | आस -पास के लोगो ने आफ़ताब को उठा कर अस्पताल ले गए ,डाक्टर ने कहा

Single User Licensed To sh_sharma77@yahoo.co.in. Any further distribution is Illegal. Ref. www.educreation.in

सर पे चोट ज्यादा लगी है ,जान का खतरा हो सकता है ज्यादा होश आने पे पता चलेगा |

यह घटना गांव में आग की तरह फ़ैल गई ,पुलिस घटना स्थल पर पहुँच कर लोगो से पूछ -ताछ करने लगी |श्याम के खिलाफ केस दर्ज कराइ गई और पुलिस श्याम को गिरफ्तार करने के लिए इधर -उधर ढूंढने लगी |कुछ ही दिनों बाद श्याम पुलिस के हाथो पकड़ा गया और झगड़ा करने के आरोप में उसे 5 साल की सजा सुनाई गई |सुलेमान मियाँ अपने नए नाटक के लिए नए किरदार की खोज में जुट गए |सीताराम साहू और रमावती इस घटना से बहुत अधिक प्रभावित हुए और शर्म से उनकी गर्दन झुक गई |धन संपत्ति तो बहुत पहले ख़त्म हो गई थी इस घटना ने उनकी बची -खुची इज्जत भी ख़त्म कर दी |शायद यही सुलेमान मियाँ का प्रयोजन था ,जिसमे उन्हें सफलता मिली |खालिद की जान बच गई ,पर सर पे चोट की वजह से उसकी यादास्त जाती रही |अब वो घर पे ही बैठा रहता है और पागलो की तरह बरबराता रहता है |जुम्मन मियाँ अपने बेटे की हालत देख कर खुदा से उसके ठीक होने की दुआ करते है और साथ -साथ अपने मालिक के पोते को भी माफ़ करने की भी गुजारिश करते है | कई बार आफ़ताब को देखने सीताराम साहू जुम्मन मियाँ के घर पर गए पर जुम्मन मियाँ ने उन्हें वही इज्जत दी जो पहले देते थे |वो कहते थे श्याम मेरे मालिक का पोता है उसकी सोंच कभी ऐसी नहीं हो सकती है उसकी उम्र अभी कम है वो किसी के बहकावे में आकर ये जुल्म कर बैठा |

घर में अब सिर्फ तीन लोग बच गए थे सीताराम साहू , रमावती और उनका सबसे छोटा पुत्र घनश्याम साहू |घनश्याम साहू अपने बड़े भाई श्याम से बिलकुल अलग है वो शरीर से मध्यम,अंतर्मुखी और बहुत शांति प्रिये लड़का है |सीताराम और रमावती उसे अपने से दूर जाने नहीं देते है वो डरते है की दो पुत्रों की तरह कही इसके साथ भी कोई अनहोनी न हो जाये | घनश्याम का

Single User Licensed To sh_sharma77@yahoo.co.in. Any further distribution is Illegal. Ref. www.educreation.in

सारा वक़्त घर में ही गुजरता है गांव मोहल्ले में उनका कोई साथी या मित्र नहीं है |वो घंटो घर के दरवाजे पे बैठ कर सामने से गुजरने वाले सड़क को और आने जाने वाले लोगो को देखता रहता है | घनश्याम की उम्र 15 -16 वर्ष की होगी पर धार्मिक पुस्तक और धार्मिक बातों में उसकी रूचि ज्यादा थी |बहुत ख़राब परिस्थिति होने के बावजूद भी सीताराम जी घनश्याम साहू पर पूरा ध्यान देते थे, की उसे किसी भी तरह की दिक्कत नहीं हो |घनश्याम को कभी गरीबी का एहसास नहीं हो इसलिए सीताराम साहू अपने पूर्वजो के सम्पनता के बारे में बताते थे और सुबूत के तौर पे अपने पिताजी की छड़ी दिखाकर कहते थे की आज के दौर में भी इतनी महँगी चाँदी की छड़ी खरीदना सब के बस की बात नहीं है |घनश्याम पर इन सब बातो का ज्यादा प्रभाव नहीं पड़ता था न ही जिज्ञासु होकर कोई सवाल करता था |सीताराम साहू बोलते थे और वो बस सुनता था |घनश्याम सुबह -सुबह उठ कर घर के दरवाजे पे बैठ जाता और वहाँ से गुजरने वाले भिक्षुक के गीत को ध्यान से सुनता था |

समय का पंछी उड़ता जाये, इस गांव उस गांव |
लिए हाथ पतवार मांझी, ढूंढे अपना नाँव||
हाँथ हवा में लहराते है, जमी पर नहीं पाँव|
हर तपते राही को मिल जाये तरुवर की छाँव||
कई बार बहारे आती है हर मौसम में कोयल गाती है |
जाने वाले चले जाते है यादें उनकी रह जाती है ||
जीवन एक तमाशा है आशा और निराशा है |
कोई सब कुछ हार कर जीत गया कोई जल में रह कर प्यासा है ||
(इस कविता की पहली पंक्ति मैंने अपने पिता जी (अरुण जी शर्मा) की कविता "मन नचिकेता से ली है
"मन नचिकेता पूछे मुझसे किधर बसा है इंद्रधनुष की छाव |
क्यों समय का पंछी उड़ता जाये इस गांव उस गांव" ||

Single User Licensed To sh_sharma77@yahoo.co.in. Any further distribution is Illegal. Ref. www.educreation.in

घनश्याम साहू का यु अकेले रहना, आध्यात्म की बाते करना रमावती को ठीक नहीं लगता था |वो जल्द से जल्द घनश्याम की शादी कर देना चाहती थी और एक सुयोग्य बधु की तलाश में थी |उधर सुलेमान मियाँ गांव में घूम -घूम कर ये बता रहे थे की श्याम ने जो किया वो ठीक नहीं किया |उसके किये की सजा सरकार तो देगी ही पर जुम्मन मियाँ उसे कभी माफ़ नहीं करेंगे |उसने एक बूढ़े की लाठी तोड़ दी |सुलेमान मियाँ के ऐसी बातो से मुस्लिम समाज का एक बहुत बड़ा हिस्सा उनसे हमदर्दी रखने लगा और उन्हें अपना नेता मानाने लगा |ये सब बातें उड़ते - उड़ते सीताराम और जुम्मन मियाँ के कानो में भी पड़ी,पर उन्होंने इसपर कोई प्रतिक्रिया नहीं दिखाई |जुम्मन मियाँ का व्यक्तित्व उन इतिहासकारो के लिए चिंतन का विषय है जो कहते है की इस्लाम खड़क और तलवार का धर्म है | घनश्याम इन सब बातों से दूर था उसकी अपनी दुनिया थी जिसमे वो खुश तो था परन्तु संतुष्ट नहीं था |एक दिन वो भिक्षुको के टोली के साथ हो लिया और घर छोड़ कर गांव के बाहर बने मठ में साधु -संन्यासियो के साथ रहने लगा |

एक -दो दिनों तक जब वो घर नहीं आया तब सीताराम साहू को ये पता चला की वो गांव के बाहर साधुओ के साथ मठ में रह रहा है , वो उसे वापस लाने के लिए मठ में पहुँच गए |सीताराम साहू ने जब घनश्याम को साधुओ के भेष में देखा तो उनके आँखे भर आयी |उन्होंने कहा बेटा तुम्हारे सिवाय हमारा कौन है वापस घर चलो ,तुम्हारी माँ का रो -रो कर बुरा हाल है |घनश्याम ने सबसे पहले अपने पिता जी के चरण स्पर्श किये और शांत स्वर में बोला पिताजी मैं जिस आनंद की खोज में वर्षो से था वो मुझे अब मिला है |जीवन का आनंद गृहस्त में नहीं वैराग्य में है जहाँ जीवन स्वछंद आकाश में विचरण करती है जिसकी कोई सीमा नहीं है |मेरा शरीर और आत्मा दोनों ही घर में कैद थी इसे अब आजादी

Single User Licensed To sh_sharma77@yahoo.co.in. Any further distribution is Illegal. Ref. www.educreation.in

मिली है |पुष्प लता को पुष्प के बिछरने का दुःख तो होता है पर इस बात की ख़ुशी भी होती है की उसकी लता का पुष्प किसी देव के चरणों की शोभा बनेगा|मैं भी ईश्वर को पाना चाहता हूँ यही मेरे जीवन का लक्ष्य है अगर आप मुझसे घर चलने की जिद्द करेंगे तो मैं आपके साथ चल दूंगा परन्तु एक कैदी की तरह |अगर आप अपने पुत्र को खुश देखना चाहते है तो मुझे वापस चलने को मत कहिये ,मेरी ख़ुशी यही है| सीताराम साहू अकेले घर आ गए रमावती ने दरवाजे पर ही रोक कर पूछा ,क्या हुआ घनश्याम मिला ,सीताराम साहू ने सर हिलाकर हां का इशारा किया और सामने रखी चौपाई पे बैठ गए ।उन्होंने कांपते हुए आवाज में कहा ,अब वो घर वापस आने को तैयार नहीं है मेरे लाख समझाने पर भी वो वापस घर नहीं आया ,पता नहीं साधुओ ने उसे क्या खिला दिया है संसार से उसका मन ही उचट गया है रमावती बिलकुल शांत हो गई ,उसके आँख से आंसू की एक बून्द भी नहीं टपकी ।दिमाग में सिर्फ यही प्रश्न आ रहा था हे ईश्वर ये तूने क्या किया, एक ही तो बचा था हमारे बुढ़ापे का सहारा वो भी तुमने मुझसे छीन लिया । रमावती को घनश्याम पे गुस्सा भी आ रहा था की जब आज इस बूढ़े दंपत्ति को अपने पुत्र के सहारे की सबसे ज्यादा जरुरत थी तो आज वो अपने माता -पिता को छोड़ कर चला गया| रमावती स्वार्थी नहीं है ,और कोई माँ हो भी नहीं सकती, वो चाहती है की बूढ़े माता पिता को छोड़ कर जाने के बदनामी से डर कर ही सही , घनश्याम घर वापस आ जाये ।

आज घर में एक अज़ब सा सन्नाटा था रमावती चूल्हे के पास बैठ कर कुछ पका रही है ,सीताराम साहू का खाना परोस कर उन्हें बुलाती है ।सीताराम साहू खाना खा रहे है और रामवती वही बैठी है ।सीताराम साहू ने शांत स्वर में कहा ,कोई बात नहीं है घनश्याम चला गया ,पर वो खुश तो है ।ईश्वर उसे लम्बी उम्र दे और हमेशा खुश रखे ।हम अपने स्वार्थ के लिए उसे यहाँ बुलाकर दुःख नहीं देंगे ।बोलते -बोलते सीताराम साहू की आँखे भर आई

Single User Licensed To sh_sharma77@yahoo.co.in. Any further distribution is Illegal. Ref. www.educreation.in

और वो रोने लगे ।पता नहीं राम कहा है कई साल गुजर गए उसका कुछ पता नहीं चला रमावती ने कहा निराश मत हो, जहाँ भी होगा अच्छे से होगा और एक दिन वो जरूर वापस आएगा। सीताराम साहू ने अपने आंसुओ को पोछते हुए कहा ,राम का स्वभाव बिलकुल पिताजी के स्वभाव की तरह था, हठी और तुनक मिजाजी ।ज्यादा तो याद नहीं है पर अब भी थोड़ा -थोड़ा याद है अगर उन्हें कोई वस्तु नहीं मिलती थी या इधर -उधर हो जाती थी तो वो चिल्लाने लगते थे , गुस्सा हो जाते थे रमावती ने कहा अगर आप श्याम पे थोड़ा ध्यान देते तो वो कभी गलत दिशा में नहीं जाता ।सीताराम ने सर हिलाकर हामी भरी और कहा हाँ तुम सही कह रही हो ।आज उसकी जो स्थिति हुई है उसका जिम्मेदार मैं भी हूँ ।इस बात - चीत में कब आधी रात गुजर गई पता ही नहीं चला ।सीताराम की पलके भारी होने लगी और थोड़ी ही देर में वो गहरी नींद में सो गए। स्वप्न में सीताराम के कानो में आवाज़ गूंज रही है बेटा सीताराम कहा हो ,यहाँ आओ,देखो मैं तुम्हारे लिए क्या लाया हूँ सीताराम के पिताजी एक हाँथ में चांदी की चमकती हुई छड़ी और दूसरे हाँथ में एक खिलौना लिए खड़े है ,सीताराम साहू जाते है और अपने पिता जी से खिलौना ले लेते है उसी वक्त सीताराम साहू के तीनो बेटे दौड़ते हुए आते है और कहते है पिता जी ये खिलौना मुझे दे दो ,रमावती दूर खड़ी बोल रही है इन्हे मत देना ये तोड़ देंगे ।सीताराम साहू अपने पिता जी और तीनो बच्चो को एक साथ देख कर अति प्रसन्न है ।अचानक उनकी नींद खुल गई ,रमावती बगल में सो रही है ,सवेरा हो गया है वो उठ कर बैठ जाते है और इधर -उधर देखने लगते है ।उनकी नजरे उन सब को ढूंढ रही थी जिसे थोड़ी देर पहले स्वप्न में देखा था ।पर वहाँ कोई नहीं था सीताराम साहू की नजर उस दीवार पे जाकर रुक गई जहाँ उनके पिता जी की छड़ी लटक रही थी ।

वर्षो गुजर गए, घनश्याम को ईश्वर मिले या नहीं पता नहीं परन्तु बहुत सारे भक्त जरूर मिल गए ।अब वो मठ के मठाधीश बन

Single User Licensed To sh_sharma77@yahoo.co.in. Any further distribution is Illegal. Ref. www.educreation.in

गए है और लोगो को ईश्वर के प्राप्ति का मार्ग बताते है ।राम साहू का कोई निश्चित पता नहीं चल पाया ,कोई कहता है की वो कलकत्ता में रहते है कोई कहता है की उन्हें बनारस में विदेशी महिला के साथ देखा है ।श्याम साहू सजा काट कर घर वापस आ गया है उनका ज्यादा वक्त घर के देख भाल में गुजरता है शादी के बाद अब वो शांत और समझदार हो गया है ।सीताराम साहू और रमावती उम्र के अंतिम पड़ाव पर है पर आज भी वो अपने पिता जी की छड़ी और उनकी स्मृति अपने पोते पोतियो को बताते है इससे बच्चो का मनोरंजन होता है और सीताराम साहू के शरीर में ऊर्जा का संचार ।

****

Single User Licensed To sh_sharma77@yahoo.co.in. Any further distribution is Illegal. Ref. www.educreation.in

छोटा भालू

घनघोर बारिश हो रही थी बादल गुस्से से गरज़ रहे थे और रह - रह कर बिजली चमक रही थी दिन के 2 -3 बज रहे होंगे पर चारो तरफ अँधेरा छा गया था। पेड़ पौधे झूम -झूम कर बारिश का आनंद ले रहे थे ।मैं अपने भाई बहन और कुछ दोस्तों के साथ ,छत पर बने एक कमरे में दरवाज़े के सहारे खड़ा था ।कमरे का थोड़ा सा ही हिस्सा खाली है पूरा कमरा उन वस्तुओ से भरा है जो घर से सेवानिवृत हो चुका है । हमलोग किसी तरह से अपने शरीर को भींगने से बचा रहे है पर बारिश के छिटो से हमारे पैर गीले हो गए है ।हम सब की निगाहे कमरे के खिड़की के तरफ है जहाँ से बगीचे में लगा अमरुद का पेड़ साफ़ दिखाई देता है ।बारिश के आंधी में अमरुद का पेड़ मदमस्त हाथी के तरह झूम रहा है ।हमलोग बड़ी जिज्ञासा से उस पेड़ पे चढ़े भगत को देख रहे है जो हमारे लिए अमरुद तोड़ने पेड़ पर चढ़ा है ।

दो -तीन साल पहले की बात है जब हम घर के सामने वाले मैदान में खेल रहे थे तो देखा की पिता जी अपने स्कूटर के पीछे एक लड़के को , जिसकी उम्र हमसे तीन -चार वर्ष ज्यादा ,पर कद हमारे जितनी होगी को लेकर घर जा रहे है ।एक अनजान बालक को देख कर मेरे अंदर उत्सुकता जागी और मैं खेल बीच में ही छोड़ कर घर आ गया और पिता जी के स्कूटर के पास खड़ा हो गया ।भगत स्कूटर के दूसरी तरफ चुप -चाप खड़ा होकर इधर -उधर देख रहा था ।पिता जी ने मेरे हाँथ में एक थैला देते हुए बोला माँ को बोलो मैं बुला रहा हूँ।मैं दौड़ता हुआ घर के अंदर गया, थैले को रसोई के सामने रखी चौकी पर रख कर माँ से बोला पिता जी बाहर बुला रहे है और वही पे खड़ा होकर माँ के बाहर जाने का इंतज़ार करने लगा ।माँ जैसे ही रसोई से निकल कर पिता जी के

Single User Licensed To sh_sharma77@yahoo.co.in. Any further distribution is Illegal. Ref. www.educreation.in

तरफ जाने लगी मैं भी उसके पीछे -पीछे चल दिया ।पिता जी के साथ वो लड़का कौन है मैं इस रहस्य हो जानने के लिए व्याकुल था और माँ इसमें मेरी मदद कर सकती थी इसलिए मैं उसके साथ -साथ था ।पिता जी ने माँ के तरफ देखते हुए कहा ,तुम हमेशा कहती थी की घर के काम काज से तुम परेशान हो जाती हो ,मैं घर के काम काज में तुम्हारी मदद के लिए इसे ले आया हूँ ।माँ ने भगत के तरफ देखकर कहा,कहाँ से ले आये हो इसे ।पिता जी ने कहा आज रेलवे स्टेशन गया था , हमेशा की तरह ट्रेन लेट थी इसलिए प्लेटफॉर्म पर बैठा था वही थोड़ी दूर पर ये बैठा रो रहा था मैंने पूछा क्यों रो रहे हो तो इसने कहा भूख लगी है ।मैंने इसे चाय और बिस्कुट खिलाई और पूछा की तुम्हारा घर कहा है उसने कहा स्थान का नाम पता नहीं सिर्फ कहता है मेरे गांव में ऊँचे -ऊँचे पहाड़ और घने जंगल है ।माँ ने कहा सकल से तो पहाड़ी लगता है ।फिर उसे अपनी तरफ बुलाया और पूछा क्या नाम है बेटा ,उसने थोड़ा घबराते हुए बोला भगत ।माँ ने उसे एक साबुन दिया और मेरे पुराने पैंट-शर्ट दिए और बोला बाहर के नल पे अच्छी तरह से नाहा लो और इन कपड़ो को पहन लो ।माँ ऐसा ही व्यवहार हम भाई -बहनो के साथ भी करती है जब हम कही सफर से आते है ।जिस रहस्य को जानने के लिए मैं परेशान था उसे जान कर अब मैं संतुष्ट हो गया था ।रसोई के सामने वाली चौकी पे बैठा कर माँ ने उसे भर पेट खाना खिलाया और छत पे जाने वाली सीढ़ी के निचे उसके सोने का इंतजाम किया ।इन सारी प्रक्रिया में मैं माँ के साथ -साथ घूम रहा था और अनावश्यक अपनी राय दे रहा था ।कुछ ही देर बाद मेरे भाई -बहन भी घर आ गए ,वो भगत को ऐसे घूर -घूर कर देख रहे थे जैसे वो किसी दूसरे ग्रह का प्राणी हो ।

बचपन की मित्रता, मिशरी और जल की मित्रता होती है |मिशरी को जल में घुलने में थोड़ा वक्त लगता है, परन्तु एक बार जब ये

Single User Licensed To sh_sharma77@yahoo.co.in. Any further distribution is Illegal. Ref. www.educreation.in

दोनों आपस में घुल जाते है तो इन्हे अलग करना असंभव हो जाता है और इसकी मिठास इंसान अपनी सारी उम्र महसूस करता है|
सुबह -सुबह रोज की तरह स्कूल जाने की तैयारी होने लगी ,मैंने देखा भगत माँ के साथ रसोई घर में है और हमारे नाश्ते के इंतज़ाम में उनकी मदद कर रहा है ।थोड़ी देर बाद वो मेरे लंच का डब्बा लेकर आया और बोला ये दिन का खाना है माँ ने कहा है स्कूल बैग में रख लेना ।ये हम दोनों की पहली संवाद थी ।स्कूल से आने के बाद हमारे खेल का कभी न ख़त्म होने वाला दौर शुरू होता था ।परन्तु पिता जी के डांट के डर से इसे ख़त्म करना पड़ता था ।ज्यादा तर भगत माँ के साथ रसोई में या किसी और काम में व्यस्त रहता था जिसके कारण हम भाई बहनो से उसकी ज्यादा बात- चीत नहीं हो पाती थी ।कई बार मैंने देखा की शाम में जब हम लोग मैदान में खेल रहे होते थे तो वो घर के बाहर सीढ़ियों पर बैठ कर हमलोगो को देखता रहता था परन्तु हमारे साथ कभी खेलने नहीं आता था ।जब माँ या पिता जी उसे बुलाते तो वो घर के अंदर जाता और वापस आकर वही सीढ़ियों पर बैठ कर मैदान में हो रहे खेल देखता रहता ।ये सिलसिला ज्यादा दिनों तक नहीं चला ,एक दिन उसके बचपन ने उसके परिपक्ता को हरा कर हमारे साथ मैदान में ले आया ।भगत देखने में हमारे ही कद का था पर हमसे ज्यादा मजबूत और समझदार । धीरे - धीरे खेल के मैदान में वो हमारे समूह का एक मुख्य स्तम्भ बन गया ।कोई भी खेल हो ,कब्बडी ,डेंगा-पानी ,लाले -लाल ,छुआ - छुई इत्यादि इन सब खेलो में वो हमलोगो से ज्यादा अच्छा खेलता ,जिसके कारण हमारे समूह की जीत सुनिश्चित रहती थी ।छुट्टी वाले दिन सवेरे से ही हम सारे भाई -बहनो के साथ वो भी खेल में लग जाता था ।पहले माँ के एक आवाज पे वो भाग कर उपस्थित होता था परन्तु अब वो भी कई आवाज के बाद एक धमकी भरे शब्द का इंतज़ार करता, फिर उपस्थित होता था ।माँ उसकी परिपक्ता को अपने घरेलु काम -काज में इस्तेमाल जरूर

Single User Licensed To sh_sharma77@yahoo.co.in. Any further distribution is Illegal. Ref. www.educreation.in

करती थी परन्तु उसके बचपन को कभी रोंदती नहीं थी ।पिता जी भी हमारे लिए कुछ खाने की चीज़ लाते तो भगत का भी उसमे हिस्सा होता था ।

जैसे -जैसे उम्र बढ़ती है आराम करने की इच्छा भी बढ़ती जाती है या फिर शरीर की जरूरत बन जाती है परन्तु बचपन में कभी भी आराम करने या सोने की इच्छा नहीं होती थी गर्मी की छुट्टी में लाख डांटने फटकारने पर भी हमे नींद नहीं आती थी हमलोग किसी छाये वाले जगह पर बैठ कर खेलते थे या फिर भगत अपने गांव की रोचक कहानियाँ हमे सुनाता था ।उसकी कहानियो में विशाल वृक्ष ,पहाड़ ,झरना ,जंगली जानवर या सुन्दर -सुन्दर फूल होते थे ।हम लोग उसकी कहानियो को बड़े ध्यान से सुनते थे क्यों की उसकी कहानियो में ज्यादा तर पात्र ऐसे थे जिसे हमलोगो ने कभी नहीं देखा था ।एक दिन मेरे पूछने पर की वो अपने गांव से यहाँ कैसे आया तो उसने बताया की उसके पिताजी उसे बहुत मारते थे क्यों की उसकी विमाता उसकी झूठी शिकायत करती थी ।किसी ने उसे बताया था की दो पहाड़ियों को पार करने के बाद एक जगह आती है जहा से एक लम्बी सी गाड़ी (ट्रेन) खुलती है जो शहर तक जाती है ।कई बार उसकी इच्छा हुई की वो घर से भाग जाये पर उसकी हिम्मत नहीं हुई ।एक दिन फिर उसके बाप ने उसे बहुत पीटाऔर उस दिन उसके सब्र का बांध टूट गया ,दिन रात जंगल और पहाड़ में चलते -चलते वो उस जगह पे पहुँच गया जहाँ से शहर के लिए गाड़ी जाती थी ।ऐसी लम्बी गाड़ी जिसमे सैंकड़ो खिडकिया थी उसने अपने जीवन में कभी नहीं देखा था बस लोगो से सुना था ।वो जल्दी से एक डब्बे में चढ़ गया,थोड़ी देर बैठा रहा ,फिर उसे नींद आ गई ,जब उसकी नींद खुली तो वो इस शहर में पहुँच गया था । समय तेज़ी से गुज़रता गया पता ही नहीं चला की दो -तीन वर्ष कैसे गुज़र गए ।हर साल की तरह इस साल भी बुआ जी आई ,उनके आने से घर का माहौल और भी खुशनुमा हो जाता है और हमारे खेल मंडली में

Single User Licensed To sh_sharma77@yahoo.co.in. Any further distribution is Illegal. Ref. www.educreation.in

खिलाड़ियों की संख्या बढ़ जाती है ।सुबह से शाम तक खूब मनमानी होती है तरह तरह के खेल खेले जाते है और खास बात डांट और पिटाई का खतरा बहुत कम हो जाता है ।भगत भी घर का काम जल्दी -जल्दी निबटा कर हमारे साथ खेल में व्यस्त हो जाता था ।

एक दिन जब मैं खेल कर घर पहुंचा तो घर का माहौल थोड़ा बदला हुआ था ।बुआ जी और फूफा जी एक कमरे में बैठे थे पिता जी और माँ बारमदे में बैठ कर धीरे स्वर में कुछ बाते कर रहे थे ।भगत वहाँ नहीं था , शायद घर का सामान लाने बाजार गया हुआ था |मैं कुछ और समझने की कोशिश करता उससे पहले माँ ने मुझे बुला कर पूछा , तुम्हे घर में कोई अंगूठी गिरी हुई मिली है मैंने बोला नहीं ,क्या हुआ ,माँ ने कहा बुआ जी के सोने की अंगूठी कही खो गई है कही दिखे तो बताना ।हम सब लोगो ने मिलकर घर का कोना -कोना छान मारा परन्तु अंगूठी कही नहीं मिली ।बुआ जी की सूरत रोनी सी हो गई थी कह रही थी अभी २-३ महीने पहले ही बनवायी थी बहुत महँगी थी ।पिता जी उन्हें सांत्वना दे रहे थे, मिल जाएगी ,कहा जाएगी ,घर में ही कही होगी ।थोड़ी देर बाद भगत भी दोनो हाथो में झोला लटकाये घर आ गया ।माँ ने उससे भी वही सवाल पूछा जो मुझसे किया था और उसका जवाब भी ना था ।मुझे ऐसा महसूस हुआ की इस घटना से सभी लोग दुखी थे पर भगत डरा हुआ था ।उसके डर का कारण मैं तब समझा जब अगले दिन फुआ और फूफा जी उसे डांट रहे थे और पूछ रहे थे की बता अंगूठी कहा छुपाई है ।माँ फुआ जी का समर्थन करते हुए नम्र आवाज में कह रही थी , अंगूठी कही देखी है तो लाकर दे दो ,तुम्हे कोई कुछ नहीं कहेगा ,पर लाख पूछने पर भगत का जवाब एक ही था उसने कोई अंगूठी नहीं देखी है ।आस -पास के लोगो में ये बात आग की तरह फ़ैल गई, की भगत ने सोने की अंगूठी चुराई है ।लोगो ने अपनी अपनी राय भी देनी शुरू कर दी ,किसी ने कहा की उसे सुनार के दुकान की

Single User Licensed To sh_sharma77@yahoo.co.in. Any further distribution is Illegal. Ref. www.educreation.in

तरफ जाते देखा था किसी ने कहा की वो बाजार में महँगी -महँगी मिठाईया खरीद कर खाता है और पता नहीं क्या -क्या ।लोगो ने पुलिस बुलाने की सलाह दी ,घर के लोग भी इसपर सहमत थे ।इन सब लोगो से दूर भगत सीढ़ी घर के निचे लगी अपने चौकी पर बैठ कर रो रहा था मैं उसके पास गया और पूछा की सब लोग कह रहे है की सोने की अंगूठी तुमने ली है ,क्या ये सत्य है । भगत ने मेरी तरफ देखा उसके आँख आंसुओ से भिंगे हुए थे और होठ सूखे हुए थे । उसके मुँह से कोई शब्द नहीं निकले पर उसने सर हिला कर ना का इशारा किया ।थोड़ी देर बाद उसे बरामदे पे बुलाया गया और सभी लोग उसे ऐसे घेर कर खड़े हो गए जैसे छोटे से मेमने को भेड़ियों के झुण्ड ने घेर रखा हो ।पिता जी अंदर वाले कमरे में बैठे थे पर माँ उसी भीड़ में मौजूद थी भगत को उनलोगो से बचाने के लिए ।बार -बार पूछने पर जब भगत का जवाब ना मिला तो फूफा जी को गुस्सा आ गया और उन्होंने एक जोर का तमाचा उसके कोमल गालो पे जर दिया ।माँ ने फूफा जी को सँभालने की कोशिश की ,इतने में वहाँ पिता जी आ गए और फूफा जी पर गुस्सा होने लगे ।पिता जी ने बोला जब ये कह रहा है की इसने अंगूठी नहीं ली है तो इसके साथ जोर जबरदस्ती क्यों कर रहे हो ।फूफा जी ने पलटवार करते हुए कहा ,जिसका नुकसान होता है दुःख उसे ही होता है बाकी लोग तो तमाशा देखते है ।सभी लोग फूफा जी को समझाने में लग गए पर उनका गुस्सा बढ़ता ही जा रहा था ।वो कह रहे थे इस घर में नौकरो की इज्जत मुझसे ज्यादा है अब मैं यहाँ एक पल भी नहीं रुकूंगा ।सारे लोग पिता जी को गलत कहने लगे , की उन्हें एक नौकर के कारण फूफा जी पर गुस्सा नहीं करना चाहिए था।पिता जी गलत थे या सही ये तो हमे पता नहीं पर भगत का बचाव कर के वो हम सब बच्चो के हीरो बन गए थे ।भगत के साथ जो हो रहा था उससे दुखी तो हम भी थे पर हम में इतनी हिम्मत नहीं थी की हम कुछ

Single User Licensed To sh_sharma77@yahoo.co.in. Any further distribution is Illegal. Ref. www.educreation.in

बोल पाते परन्तु पिता जी उसके बचाव मे आगे आये । ये हमारे क्रोध को शांत करने के लिए काफी था |
थोड़ी देर बाद घर में वैसा ही सन्नाटा छा गया जैसे मेला ख़त्म होने के बाद बाजार में सन्नाटा छा जाता है ।सारे लोग अपने -अपने कमरे में चले गए और पिता जी वही बरामदे में बैठ कर किताब पढ़ने लगे ।माँ रसोई में खाना बनाने लगी और हम सब बच्चे किताब -कॉपी लेकर एक कमरे में बैठ गए और पढाई का नाटक करने लगे ।मस्तिष्क में भगत के लिए तरह -तरह के ख्याल आ रहे थे ।रात के 10 -11 बज रहे होंगे पिता जी खाना खा रहे थे और माँ वही बैठी थी और पिता जी से कुछ बातें कर रही थी, मैं उनकी बातो को सुनने की कोशिश कर रहा था क्यों की उसमे आज के घटना का जिक्र हो रहा था, मेरी कान एका -एक तब खड़ी हो गई जब उनके वार्तालाप में भगत का नाम आया । माँ कह रही थी की भगत के कारण आज कितना बवाल हो गया सभी लोग ये समझते है की अंगूठी भगत ने ली है और आप उसे बचा रहे है ।सभी लोग कह रहे है की कल उसे पुलिस के हवाले करेंगे तभी वो सच बोलेगा ।माँ बहुत भावुक हो गई और बोली अगर पुलिस इसे ले गई तो बहुत यातना देगी ,अभी बच्चा है इसकी जिंदगी बर्बाद हो जाएगी ।पिता जी के चेहरे पे परेशानी और गुस्सा दोनों ही झलक रही थी ।माँ ने कहा एक बात कहूँ ,भगत को जहाँ से लाये थे वही छोड़ आओ, अब 14 -15 वर्ष का हो गया है अपने घर चला जायेगा ।पिता जी शांत होकर सारी बातें सुन रहे थे फिर धीरे से बोले शायद तुम ठीक कह रही हो अब उसका यहाँ रहना ठीक नहीं है ।कल ही उसे स्टेशन छोड़ आऊंगा ।भगत जा रहा है ये बात सभी भाई- बहनो में जंगल के आग की तरह फैल गई ।जब तक हमे नींद नहीं आ गई उसे रोकने के अलग -अलग तरकीबे बनाते रहे ।जब सुबह नींद खुली तो सबसे पहले सीढ़ी वाले घर में भगत को देखने गया पर वो वहाँ नहीं था फिर रसोई में जाकर देखा ,वो वहाँ रसोई का काम कर

Single User Licensed To sh_sharma77@yahoo.co.in. Any further distribution is Illegal. Ref. www.educreation.in

रहा था उसे देख कर मेरे दिल को अजब सी तसल्ली हुई ।मैंने माँ से पूछा की भगत यहाँ से जा रहा है क्या ,उन्होंने कहा हां ,वो अपने गांव जा रहा है उसके माता -पिता उसे बुला रहे है मैंने पूछा वापस कब आएगा,माँ ने कोई जवाब नहीं दिया और अपने काम में व्यस्त हो गई ।

दोपहर के 2 -3 बज रहे होंगे, पिता जी ने भगत को अपने कमरे में बुलाया और अलमारी से कुछ पैसे निकाल कर उसे दिए और कहा ये दस हजार रुपये है इसे संभाल कर रखना. आज शाम मै तुम्हे रेलवे स्टेशन पहुंचा दूंगा ,तुम अपने घर चले जाना । माँ ने भगत के लिए एक थैले मे खाना और पानी रख दी ।आज से पहले मैंने माँ को कभी इतना उदास नहीं देखा था ।शाम के चार -पांच बज गए थे ,भगत के जाने का वक्त हो गया था ।हम सारे भाई -बहन आज खेलने नहीं गए थे घर के सीढ़ियों पर बैठ कर अफ़सोस कर रहे थे हमारे साथ हमारा कुत्ता शेरू भी आज यही बैठा था शायद इसे भी पता चल गया था की आज हमारा एक साथी हमेशा के लिए जा रहा है ।जब भगत वहाँ से पिता जी के साथ स्कूटर पे निकला तो शेरू भौकता हुआ उसका पीछा तब तक करता रहा ,जब तक की वो आँखों से ओझल नहीं हो गया ।थोड़ी देर मे शेरू हाफ्ता हुआ वापस आ गया ,हताश भरी नजरो से वो हमे देख रहा था और हम सब उसे ।उस दिन हम खेलने नहीं गए ,छत पे घंटो घूमते रहे और बादलो की अजब -गजब आकृतियों को देख कर दिमाग मे तरह -तरह की कहानियाँ बुनते रहे ।घर मे कुछ लोग खुश थे ,कुछ दुखी और कुछ लोग उदासीन ।बचपन में हृदय कोमल होता है और अत्यंत सजिव |बच्चे हठी होते है क्यों की उन्हें अपने हृदये को बहलाने -फुसलाने की कला नहीं आती है, जैसे -जैसे वक्त गुजरता है, उम्र बढ़ती है इंसान इस कला में निपुण होता चला जाता है और धीरे -धीरे उसके हृदय की कोमलता ख़त्म हो जाती है |

Single User Licensed To sh_sharma77@yahoo.co.in. Any further distribution is Illegal. Ref. www.educreation.in

खेल के मैदान मे कुछ दिनों तक सारे बच्चे भगत मे बारे मे पूछते थे पर जैसे -जैसे वक्त बीतता गया हम सब अपने काम मे वयस्त हो गए और इस अस्त -व्यस्त जीवन मे भगत की यादें कही खो गई ।गर्मी की छुट्टिया ख़त्म हो गई ,फुआ जी ,फूफा जी और उनके बच्चे अपने घर चले गए ।हमारे स्कूल खुल गए छुटियो के दौरान जीवन मे जो अव्यवस्था आई थी वो अब व्यवस्थित हो गई ।गर्मी चली गई ,बरसात चली गई अब ठण्ड का मौसम आ गया था ।सुबह -सुबह उठ कर नहाना और स्कूल जाना एक सज़ा से कम नहीं थी पर इस सज़ा को काटने के सिवा हमारे पास कोई दूसरा रास्ता नहीं था ।

एक -दिन जब मैं स्कूल से घर पहुंच तो घर का माहौल थोड़ा बदला हुआ था |घर मे इधर -उधर घूमने और जाँच -पड़ताल के बाद ये पता चला की ,आज रसोई घर की नाली जाम हो गई थी चाची जी ने एक सफाई वाले को बुलाया था जब नाली की सफाई हो रही थी तो नाली के जाल मे बुआ जी की अंगूठी फंसी हुई मिली ,जो शायद हाँथ धोते वक्त उनके उंगलियों से निकल कर गिर गई होगी ।शायद वो अंगूठी उस नाली मे बैठ कर भगत के जाने का इंतज़ार कर रही थी और जब वो चला गया तो नाली से बाहर आ गई ।आज सारे घर वालो को ये पता चल गया की भगत सच बोल रहा था उसने अंगूठी नहीं चुराई थी ।पर अब अफ़सोस करने के सिवा और कोई दूसरा रास्ता नहीं था ।पिता जी और माँ को इस घटना ने बहुत प्रभावित किया ।इस घटना के बाद पिता जी ने किसी को घर के काम के लिए नहीं रखा ।

वक्त ,गाड़ी के पहिये की तरह बढ़ती रही, रास्ते में छोटे -मोटे कंकर पत्थर आते रहे पर जीवन की गाड़ी चलती रही ।वक्त के साथ -साथ परिवार की संरचना भी बदल गई ,कुछ अपने दूर हो गए कुछ अनजान लोग पास आ गए। खेल का मैदान छूट गया ,सारे मित्र रोजगार और महत्वाकांक्षा की खोज में वयस्त हो गए। कई वर्षो तक शेरू घर के दरवाजे पर आकर रोज हाजरी देता था

Single User Licensed To sh_sharma77@yahoo.co.in. Any further distribution is Illegal. Ref. www.educreation.in

पिछले कुछ महीनो से वो भी अनुपस्थित है । मुझे पूरा विश्वास है की वो ये घर भूल नहीं सकता जहाँ हम दोनों का बचपन साथ - साथ गुजरा ,शायद उसने इस जीवन से मुक्ति पा ली हो ।गर्मियों की छुट्टिया अब भी आती है पर मैं अपने काम में वयस्त रहता हूँ खेल के मैदान में बच्चो को खेलता हुआ देख कर मन प्रफुल्लित हो जाता है और अतीत की कल्पनाओ में गोते खाने लगता है ।गर्मियों के छुट्टियों के बाद बहन का अपने घर जाना और घर के बच्चो का उदास हो जाना मैं भी महसूस करता हूँ ।ऐसा प्रतीत होता है की सबकुछ पहले जैसा ही है बस पात्र बदल गए है ।

गर्मियों के बाद बारिश का मौसम आ गया ,आज सुबह से ही बारिश हो रही है कभी तेज़ कभी धीमी ।शाम के 5 -6 बज रहे होंगे ,धीमी -धीमी बारिश अभी भी हो रही है ।बाहर का वातावरण शांत है और समय से पहले अँधेरा छा गया है ।मैं बरामदे में बैठ कर चाय पी रहा था तभी कोई दरवाजे पर आकर खड़ा हो गया ।वो बिना कुछ बोले अपने सर को इधर -उधर घुमा कर देख रहा था ।बाहर अँधेरा था मैं उसकी शक्ल देख नहीं पा रहा था मैंने पूछा ,आप किसे ढूँढ रहे है मेरी आवाज सुन कर वो मेरी तरफ आया और मेरे सामने आकर रुक गया ।वो एक अधेड़ उम्र का आदमी था मैंने फिर पूछा आपको किससे मिलना है वो मुस्कुराते हुए बोला,मैं यहाँ बचपन में रहता था फिर कुछ सोंच कर बोला यहाँ एक साहब रहते थे ,अब नहीं रहते है क्या ।मस्तिष्क में कुछ यादे किसी कोने में छुपी रहती है उनकी कोई जरूत नहीं होती इसलिए कभी सामने नहीं आती पर ख़त्म भी नहीं होती ।वर्षो इंतजार करती है की कभी कुछ ऐसा हो की वो कोने से निकल कर सामने आये ।मेरे मुँह से अचानक निकल पड़ा भगत ,उसने सर हिलाकर हामी भरी ।मैंने उसे बैठाया और बरामदे से ही माँ को आवाज लगाई ,माँ यहाँ आओ देखो कौन आया है माँ भगत को देख कर पहचान नहीं पाई ,पहचानती भी कैसे अब उसकी उम्र 45 -50 की हो गई थी । चेहरे पर झुर्रियों ने पहरा जमा रखा

Single User Licensed To sh_sharma77@yahoo.co.in. Any further distribution is Illegal. Ref. www.educreation.in

था सर के बाल सफ़ेद ज्यादा थे और काले कम।,भगत का नाम सुनते ही माँ को अतीत की सारी घटनाये याद आ गई । माँ और भगत बरामदे में बैठे थे और मैं वक्त के पोटली से यादो का एक - एक दाना उन दोनों के सामने परोस रहा था ।भगत कुछ बोल नहीं रहा था पर मुझे ऐसा प्रतीत हुआ की वो किसी और के आने का इंतज़ार कर रहा है ।मैं समझ गया की वो पिता जी को ढूँढ रहा था ।मैं उसे पिता जी के कमरे में ले गया, वहाँ दीवार पर पिता जी की तस्वीर लगी थी ,भगत कमरे के चारो तरफ अपनी नजरे घुमा कर देख रहा था उसे याद आ गया था की 30 -35 वर्ष पहले वो रोज इस कमरे के कई चक्कर लगाया करता था जब पिता जी उसे किसी काम से बुलाते थे और वो दिन भी याद आया जब घर वालो के दवाब में आकर, इसी कमरे में उसे बुला कर अपने गांव जाने को कहा था ।मैंने कहा 8 -10 वर्ष हो गए पिता जी हम सब को छोड़ कर चले गए ।भगत के चहरे पर एक उदासी थी|ऐसा लग रहा था की वर्षो के बाद यहाँ आने का उसका मकसद पूरा नहीं हुआ |माँ ने कहा भगत वर्षो पहले जो तुम्हारे साथ यहाँ हुआ था उसका हम सब को दुःख है |तुम्हारे जाने के बाद वो अंगूठी मिल गई थी और सारे घर वाले को ये पता चल गया था की तुम सच बोल रहे थे तुमने कोई चोरी नहीं की थी |

भगत शांत होकर माँ की बातें सुन रहा था| थोड़ी देर रुकने के बाद उसने कहा ,जो हुआ वो होना ही था ,इसे कोई नहीं रोक सकता था | मेरे गांव में,मेरी विमाता के लाख कोशिश करने के बाद भी जब मैं अपने घर से नहीं निकला ,तो उसने एक तांत्रिक से मिल कर मुझपर जादू -टोटके करवाए ,उसका परिणाम ये हुआ की ,एक रात मेरे सपने में छोटा भालू आया और मुझे डराया - धमकाया और घर से निकल जाने को कहा ,अगले दिन कुछ ऐसी परिस्थिति बनी की मेरे नहीं चाहने पर भी मुझे अपना घर छोड़ कर जाना पड़ा |

Single User Licensed To sh_sharma77@yahoo.co.in. Any further distribution is Illegal. Ref. www.educreation.in

जिस दिन बुआ जी की अंगूठी खोई थी उसके 2 -3 दिन पहले भी वो छोटा भालू मेरे सपने में आया था और मैं डर गया था क्यों की मैं आप लोगो को छोड़ कर यहाँ से नहीं जाना चाहता था | पर उसकी मर्जी के आगे मैं और वक्त दोनों विवश हो जाते है |एक बार फिर उसने ऐसा कारण और माहौल बनाया की आप लोगो और मेरे न चाहने पर भी मुझे यहाँ से जाना पड़ा ||

3 -4 घंटे गुजारने के बाद भगत वहाँ से चला गया, कह रहा था नेपाल में रहता है और किसी बड़े व्यापारी का सहायक है | कई वर्ष गुजर गए,फिर भगत से कभी मुलाकात नहीं हुई | इतने वर्षो के बाद उसके वापस आने का तात्पर्य मैं नहीं समझ पाया ,हो सकता है वो ये बताने आया हो की लोगो के बुरा चाहने के बावजूद वो अपनी जिंदगी अच्छे से गुजार रहा है ,या फिर पिताजी के एहसानों का ऋण चुकाने आया हो | जिसे जहाँ प्रेम मिल जाता है वो वही का हो जाता है ,भगत के साथ मेरे घर वालो ने जो किया वो बहुत बुरा था , परन्तु ये बात भी सत्य है की जो प्रेम उसे इस घर के लोगो से मिला ,पहले कभी नहीं मिला था | नफ़रत की विशाल खाई होने के बावजूद ,शायद यही प्रेम उसे यहाँ आने के लिए मजबूर किया |भगत के स्वप्न और छोटे भालू में कितनी सच्चाई थी इसका तो पता नहीं, पर उसने जिस सहजता से सभी लोगो को ग्लानि मुक्त कर दिया ,ये अकल्पनीय है |

****

Single User Licensed To sh_sharma77@yahoo.co.in. Any further distribution is Illegal. Ref. www.educreation.in

सप्तर्षि के तारे

वेदों में जो सनातन धर्म का स्वरुप है वो आज के स्वरुप से बहुत भिन्न है |आर्यो ने वेदों की रचना की ,जिसमे देवी -देवताओ और इस ब्रम्हांड के उन गुप्त रहस्यों का वर्णन किया है जिसे पढ़ कर आज के आधुनिक वैज्ञानिक भी दांतो तले उंगलिया दबा लेते है |हमारे वेदों में कुछ खास देवी -देवताओ का वर्णन है परन्तु आज हिन्दू धर्म में करोड़ो देवी -देवता है |भगवान शिव आदि गुरु है जब इस ब्रह्माण्ड की संरचना हो रही थी उस वक्त भी वो थे और जब इस ब्रह्माण्ड का अंत होगा तब भी वो होंगे ,परन्तु वेदों में जो उनके स्वरुप का वर्णन मिलता है वो आज से बहुत भिन्न है |इसी प्रकार ऐसे कई विवरण है जिसका स्वरुप समय के साथ परिवर्तित होता रहा |इन सभी परिवर्तन में स्त्रियों का बहुत बड़ा योगदान रहा है |द्रविड़ या नीग्रो समुदाय की लड़कियों की शादी अगर आर्य समुदाय में हो गई तो वो अपने साथ अपनी धर्म का स्वरुप ,संस्कृति और और सामाजिक परंपरा भी साथ ले गई |इस प्रकार सभी समुदाय के स्वरुप में परिवर्तन होने लगा |प्राचीन काल में आर्य ,द्रविड़ ,नीग्रो , आष्ट्रिक, ये सभी समुदाय एक ही देश में रहते थे जो आज की भारत से कई गुना विशाल था ,इनकी संस्कृति अलग थी परन्तु मिलती -जुलती थी ये एक ही ईश्वर को मानते थे परन्तु अलग -अलग स्वरुप में ,और खास बात ,इतनी भिन्नता होने की बावजूद भी एक समुदाय ,दूसरे समुदाय में शादी -ब्याह करते थे जिससे विचारो और संस्कृति का आदान-प्रदान हुआ और ये सब एक हो गए |आज की परिस्थिति में अलग -अलग धर्मो और समुदायों की बीच खिंचा -तानी चरम पर है क्यों की इन धर्मो और समुदाय के ठीकेदारों ने अपना वर्चस्व बनाये

Single User Licensed To sh_sharma77@yahoo.co.in. Any further distribution is Illegal. Ref. www.educreation.in

रखने की लिए इन धर्मो और समुदाय की बीच शादी -व्याह प्रतिबंधित किया हुआ है |

मधुमास जंगली फूलो की भीनी-भीनी महक सरिता के फूलो की शैल माला को आलिंगन दे रही है ,नवीन पल्लवों के कोमल स्पर्श से वनस्पति पुलकित हो रहे है |संत राम की कुछ सप्ताह पहले शादी हुई है कुछ दिनों पहले तक घर अतिथियों से भरा था परन्तु अब सभी जा चुके है |घर में अभी तक रंगीन टोकरिया ,आम, केले के पत्ते और फूलो की माला बिखरी हुई है |वैसे तो शादी की लिए पुरे घर की सफाई और रंगाई हुई थी परन्तु जिस कमरे में संत राम की पत्नी रह रही है उसकी बात ही कुछ और है |कमरे की हर वस्तु अपने जगह पे पूरी तरह से सजा -धजा कर रखी हुई है |दीवारों पे हाथ से बनाई हुई कुछ तस्वीरें लटक रही है ये तस्वीरें हर आगंतुक को ये बताती है की नई दुल्हन (रचना)हस्त कला में निपुण है |कमरे में कुर्सियां व्यवस्थित ढंग से रखी है और टेबल पर हाँथ की कढ़ाई की हुई सुन्दर टेबल क्लॉथ बिछा है |खिडकियों पे रखी कृतिम फूलो की गुलदस्ते और सुन्दर -सुन्दर मिट्टियो की मूर्तियों कमरे की शोभा को और बढ़ा रही है |संत राम सबेरे पिताजी के साथ दुकान पे चला जाता है और शाम को वापस आता है|दिन भर रचना अपने कमरे की साफ -सफाई में लगी रहती है क्यों की अभी उसकी जिम्मेदारी सिर्फ अपने कमरे की है पुरे घर की जिम्मेदारी अभी संत राम की माता जी के पास है |संत राम की माँ अपने नई बहु को घर की काम -धाम में हाथ बटाने नहीं देती है कहती है घर का काम धाम करना तो स्त्रियों के भाग्य में ही लिखा होता है और सभी स्त्री को ये करना ही है |संत राम के माँ का ये मानना है कि शादी की मेहंदी जितने दिनों तक हांथो में रहती है पति की उम्र उतने वर्ष और बढ़ जाती है |घर का काम -काज करने से हांथो की मेहंदी जल्दी छूट जाएगी इसलिए वो रचना को घर के काम -काज से दूर रखती है|दोपहर में माँ खाना बनाती थी और संत राम का छोटा भाई बसंत खाना

Single User Licensed To sh_sharma77@yahoo.co.in. Any further distribution is Illegal. Ref. www.educreation.in

लेकर दुकान पर जाता था और वापस आते समय अपनी नई -नवेली भाभी के लिए बाजार से खाने की कोई अच्छी चीज ले आता और फिर भाभी -देवर बैठ कर खाते और खूब सारी बातें करते |बसंत 13 -14 वर्ष का सावंला रंग का साधारण शरीर का लड़का है विद्यालय में उसका दिमाग नहीं लगता है और दुकान पर उसका दिल ,ऊर्जा और फुर्ती की कोई कमी नहीं है परन्तु किसी काम की नहीं ,उसका बस एक ही काम है दिन-भर दोस्तों के साथ इधर -उधर भटकना |घर में सबसे छोटा है इसलिए थोड़ा वाचाल और तुनक मिजाजी है |

खट्टे -मीठे अनुभवों के साथ वक्त गुजरता गया ,रचना के हांथो की मेहंदी का रंग उतर गया ,अम्मा ने घर -गृहस्ति की जिम्मेदारी बहु को सौंप दी और अपना ज्यादा समय रामायण पाठ में गुजारने लगी | समय के आगे बढ़ने के साथ -साथ बसंत भी युवा अवस्था की ओर अग्रसर हो चला था |संत राम पिता जी से छुपा कर बसंत को कुछ पैसे दे देता था जिससे उसके अतरिक्त खर्च में कोई कमी नहीं आती थी और दोस्तों के बीच सम्मान भी बना रहता था | बसंत के कुछ काम -धाम नहीं करने पर उसके पिता जी बहुत चिंतित रहते थे और कभी -कभी गुस्से में उसे खरी -खोटी सुना भी देते थे |संत राम ,बसंत का बचाव करता और कहता कोई बात नहीं है इसके हिस्से का काम भी मैं कर दूंगा |आस पड़ोस वाले इन दोनों के प्रेम को देख कर राम -लक्ष्मण की उपमा देते थे |

बुढ़ापे में इंसान को न ज्यादा भूख लगती है न ज्यादा नींद आती है परन्तु जवानी इसके ठीक विपरित होती है खूब भूख लगती है और खूब नींद आती है |शाम के छः बज रहे होंगे ,बसंत बाहर से कही घूम कर आया है और रचना से बोला कुछ खाने को दो ,बहुत भूख लगी है|रचना ने थोड़े रूखे स्वर में बोला ,अभी कुछ नहीं है रात का भोजन तैयार होने में थोड़ा वक्त लगेगा |बसंत ,रचना के बातों को अनसुना करते हुए सीधा रसोई घर में पहुँच

Single User Licensed To sh_sharma77@yahoo.co.in. Any further distribution is Illegal. Ref. www.educreation.in

गया और बर्तनो को हिला -डुला कर देखने लगा |वैसे रचना का स्वभाव शांत और मधुर है परन्तु गृहस्त आश्रम में ऐसी परिस्थितिया आती है जो इंसान के वास्तविक स्वभाव को बदल देती है |आज रचना का स्वभाव थोड़ा चिरचिरा था |बसंत को रसोई में बर्तनो को उलटते -पुलटते देख कर उसे क्रोध आ गया और बोली "कहा न अभी भोजन बनने में समय लगेगा ...काम के न काज के दुश्मन अनाज के "|रचना के ये शब्द बसंत के कानों में तीर की तरह चुभी ,उसने पलट वॉर करते हुए कहा " भाभी अनाज के दुश्मन तो आप भी हो पर अपने बाप के अनाज की नहीं ,मेरे बाप और भाई के अनाज की "|बाप का नाम सुनते ही रचना का गुस्सा सातवें आसमान पर पहुँच गया उसने कहा "अपनी सीमा में रहिये ,उसे लांघने की कोशिश मत कीजिये ,बसंत ने तुरंत प्रतिउत्तर दिया " मेरी सीमा निर्धारित करने का अधिकार आपको किसने दिया "| वाक यूद्ध चल ही रहा था तभी अम्मा वहाँ आ गई और रचना का पक्ष लेते हुए बोली ,बहु ठीक तो कह रही है एक तो कुछ काम धाम नहीं करता और अगर कोई कुछ कह दे तो पूरा घर सर पे उठा लेता है |अम्मा ने सोंचा की बसंत को थोड़ी तकलीफ होगी और उसका दिमाग फालतू के कामो से हटकर दुकानदारी या पढाई -लिखाई में लगेगा ,परन्तु ऐसा हुआ नहीं ,बसंत जोर -जोर से चिल्लाने लगा ,तुम लोग मुझे बोझ समझते हो ,दिन -भर घर का छोटा -मोटा काम मुझसे करवाते हो , रिश्तेदारी निभाने के लिए हर जगह मैं जाता हूँ क्यों की और किसी के पास समय नहीं है ,घर के जलावन से लेकर राशन तक लाने के लिए सबको सिर्फ मैं याद आता हूँ ऐसा कहते -कहते वो घर से बाहर निकल गया |अम्मा ने रचना को समझाते हुए कहा ,बसंत घर में सबसे छोटा है बहुत लाड़-प्यार से पला है वाणी का थोड़ा करवा है परन्तु हृदय का बिलकुल साफ़ ,उसकी किसी बात का बुरा मत मानना |रचना को भी पश्चाताप हो रहा था की उसने बसंत को ऐसा क्यों बोल दिया |

Single User Licensed To sh_sharma77@yahoo.co.in. Any further distribution is Illegal. Ref. www.educreation.in

रोज की तरह रात के 9 बजे तक संत राम और उसके पिता जी दुकान से वापस आ गए ,थोड़ी देर में रचना ने सब के लिए खाना लगा दिया ,बसंत को अनुपस्थित देख कर संत राम ने पूछा बसंत कहा है ,आज वो खाना नहीं खायेगा क्या ,रचना के पास कोई उत्तर नहीं था वो अम्मा को देखने लगी और अम्मा ने पूरा वृतांत संत राम और उनके पिता जी को बता दिया |पिता जी ने कहा कोई बात नहीं है किसी दोस्त के यहाँ बैठा होगा ,थोड़ी देर में आ जायेगा |संत राम ने इस घटना के बारे में रचना से कोई बात नहीं की परन्तु रात भर सोया नहीं ,बसंत का इंतज़ार करता रहा |जब रात भर बसंत वापस नहीं आया तो घर में सभी लोग चिंतित हो गए |संत राम सुबह -सुबह घर से बाहर निकल गया और आस-पास के लोगो से बसंत के बारे में पूछने लगा ,बसंत के जिन मित्रो को वो जानता था उनसे भी मिला परन्तु बसंत का कुछ पता नहीं चला | मस्तिष्क में तरह -तरह के विचार आ रहे थे निराश और दुखी मन लिए वो घर वापस आ रहा था की रास्ते में उसे गणेश मिल गया ,जिसकी रेलवे स्टेशन पर फलो की दुकान है |संत राम के निराशा की वजह जानने के बाद उसने बताया की कल रात उसने बसंत को रेलवे स्टेशन पे देखा था ,उसने बसंत को आवाज भी लगाई परन्तु उसने मुड़ कर नहीं देखा या हो सकता है आवाज सुनी न हो |गणेश ने बताया उस वक्त प्लेटफार्म पे दिल्ली जाने वाली गाड़ी लगी हुई थी हो सकता है वो उसी गाड़ी में बैठ गया हो | घर में मातम का माहौल था रचना खुद को इन सब का जिम्मेदार मान रही थी और रो रही थी अम्मा उसे समझाने और चुप करने में लगी थी |संत राम और पिता जी दरवाजे पे रखे चौकी पे शांत बैठे थे |एका-एक संत राम ने कहा की कल मैं दिल्ली जाऊंगा और बसंत को ढूंढ कर लाऊंगा |पिता जी ने कहा दिल्ली महानगर है इस शहर के तरह 50 शहर समा जायेंगे ,तू वहाँ किसी को जानता भी नहीं है ,कैसे ढूंढेगा बसंत को |संत राम ने कहा इसके अलावा कोई उपाए भी नहीं है मुझे जाना ही पड़ेगा ,ईश्वर सब

Single User Licensed To sh_sharma77@yahoo.co.in. Any further distribution is Illegal. Ref. www.educreation.in

ठीक करेगा ,मैं बसंत को वापस लेकर ही आऊंगा |इतनी दूर दिल्ली जाना संत राम के लिए बहुत बड़ा निर्णय था , अभी तक अपने जीवन में सबसे लम्बी दुरी उसने अपने ससुराल की तय की थी जो उसके गांव से करीब 50 km दूर था |संत राम इस बात से अनभिज्ञ था की करोड़ो की आबादी वाले शहर में एक इंसान को ढूंढना ,जंगल में एक पत्ते को ढूंढने के बराबर है दूसरी बात बसंत दिल्ली गया है ये एक आशंका है हो सकता है वो कहीं और चला गया हो | इतनी सारी विषम परिस्थिति होने के बावजूद ,संत राम को ये पूरा विश्वास था की वो अपने भाई को ढूँढ लेगा | अलग -अलग लोगो ने अलग -अलग राय दिए ,कुछ ने कहा थोड़ा इंतज़ार करो वो खुद वापस आ जायेगा ,कुछ ने कहा किसी रिश्तेदार या सम्बन्धी के यहाँ बैठा होगा ,कुछ ने कहा हो सकता है बिना टिकट के ट्रेन में पकड़ा गया हो और पुलिस उसे जेल ले गई हो |संत राम का मष्तिस्क तर्क -वितर्क करने में लगा था परन्तु कोई हल नहीं मिल पा रहा था की वो क्या करे |अंत में उसने निश्चय किया की जिसने सबसे पहले उसे बसंत के बारे में जानकारी दी अर्थात गणेश की बात पर विश्वास करेगा और बसंत को ढूंढने दिल्ली जायेगा |अगले दिन कुछ कपड़े ,पैसे और बसंत की एक तस्वीर लेकर दिल्ली के लिए निकल पड़ा|

गीता का एक कथन "कर्म करो फल की चिंता मत करो "में पुरे जीवन का निचोड़ है ये इंसान को उस परिस्थिति से बाहर निकालता है जब वो अपने ही मस्तिष्क के विचारो के जाल में फंस जाता है |सुबह -सुबह ट्रेन दिल्ली रेलवे स्टेशन पहुँच गई , इतनी भीड़ -भार और इतना विशाल प्लेटफॉर्म देख कर संत राम आश्चर्यचकित था |लोगो के टक्कर से बचते -बचाते ,तीन -चार पुलों को पार कर वो स्टेशन से बाहर आ गया |यहाँ भी भीड़ कम नहीं थी बस फर्क इतना था की प्लेटफार्म में सभी लोग इधर -उधर भाग रहे थे यहाँ कुछ लोग सीढ़ियों या पेड़ के नीचे बैठ कर किसी का इंतज़ार कर रहे थे |ये है पहाड़ गंज ,पता नहीं किस

Single User Licensed To sh_sharma77@yahoo.co.in. Any further distribution is Illegal. Ref. www.educreation.in

ज़माने में यहाँ पहाड़ हुआ करता था और अगर था तो डाइनोसॉर की तरह विलुप्त कैसे हो गया |जिधर देखो या तो इंसान दिखते है या फिर दुकान |कभी -कभी सफ़ेद रंग वाली विदेशी महिला भी दिख जाती है जो अपने ऊपर भारी-भरकम गट्ठर लादे ,शांति के खोज में विदेशो से भटकते -भटकते हिंदुस्तान आ गए |संत राम के समझ में नहीं आ रहा था की वो कहा जाये ,किससे पूछे ,वो इधर -उधर देखता हुआ पैदल चल रहा था ,शायद चल नहीं रहा था भाग रहा था भीड़ से ,मोटर गाड़ियों के आवाज से ,धुएं से |चलते -चलते उसे कुछ साधु संत दिखे ,वह उसी ओर आगे बढ़ने लगा ,थोड़ी दूर चलने के बाद उसे श्री हरिहर उदासीन आश्रम दिखा ,ये जगह उसे कुछ ठीक लग रही थी ,वो वही रूक गया और एक किनारे में बैठ गया |वहाँ से साधु सन्यासी आ -जा रहे थे एक सन्यासी ने संत राम से उसके आने का कारण पूछा और सारा वृतांत जानने के बाद उसे आश्रम के अंदर ले गया |बाहर की भीड़ -भार और शोर -गुल देखने की बाद संत राम ने सोंचा नहीं था की इतनी शांत और स्वच्छ जगह भी यहाँ हो सकती है |संत राम वही स्नान ध्यान कर प्रसाद ग्रहण किया और वही जमीन पे बिछी चादर पे सो गया |शाम के आरती की घंटी की आवाज के साथ उसकी नींद खुली ,अब वो सोंच रहा था आगे क्या करना है कहा जाना है बसंत को कैसे ढूंढना है|थोड़ी देर सोंच विचार करने की बाद संत राम वही ऊँची चौकी पर बैठे एक सन्यासी के पास गया और अपनी पूरी व्यथा सुनाई |सन्यासी ने बड़े ध्यान से उसकी पूरी व्यथा सुनी और बोला ,घर का त्याग करना मूर्खता है तुम्हारे भाई ने गलत किया ,उसके इस कार्य से परिजनों को कितना दुःख हुआ होगा ये मैं समझ सकता हु ।कई वर्ष पहले मैंने भी ईश्वर के प्राप्ति के लिए घर और परिजनों को छोड़ कर सन्यासी बन गया था ईश्वर की प्राप्ति होगी या नहीं होगी पता नहीं परन्तु मेरे कारण मेरे माता-पिता को जो दुःख हुआ उसकी भरपाई मैं जीवन भर नहीं कर पाउँगा (घनश्याम साहू **,"चाँदी**

Single User Licensed To sh_sharma77@yahoo.co.in. Any further distribution is Illegal. Ref. www.educreation.in

की छड़ी")।सन्यासी ने कहा एक काम करो ,यहाँ से कुछ दुरी पर कई विश्विद्यालय है और वहाँ पर विद्यार्थियों और नवयुवको का जमावड़ा रहता है तुम्हारा भाई भी अभी युवा है शायद वहीं गया होगा । अगले दिन सुबह -सुबह संत राम आश्रम से निकल गया कुछ दूर पैदल चलने और कुछ लोगो से पूछने के बाद वो विश्विद्यालय की ओर जाने वाली बस में बैठ गया ।विश्विद्यालय के रास्ते में उसने पहली बार लाल किला देखा ।बचपन में उसने लाल किला के बारे में लोगो से सुना था ,किताबो में पढ़ा था ,तस्वीरों में देखा था कई कहानियाँ सुनी थी की किस तरह मुगलो ने हिन्दुस्तानियो पे जुल्म कर के इस किले का निर्माण करवाया और इसे बेशकीमती आभूषणों से सजाया और उन बेशकीमती आभूषणों को फारसी लुटेरा नादिर शाह लूट कर फारस ले गया| कई बार इस किले के लिए युद्ध हुई और हजारो लोगो की हत्याएं की गई ,शायद इन्ही लोगो के खून से इस किले का रंग लाल हो गया ।परन्तु आज उसने पहली बार हकीकत में उसे देखा ।विश्विद्यालय पहुँचने के बाद संत राम ने पैदल ही अपनी यात्रा प्रारम्भ कर दी ,बस स्टैंड के पास लगी दुकानों में जाकर वो बसंत की तस्वीर दिखता और उसके बारे में पूछता,सैकड़ो लोगो से पूछने के बाद भी उसे न के अलावा कोई जवाब नहीं मिला ।किरोड़ी मल,रामजस,हिन्दू हंसराज ,सेंट स्टीफेंस के पास से गुजरा और वहाँ चाये की दुकान पर बैठे ,राजनीती या अपने अध्यन के विषय पर चर्चा करते हुए छात्र और छात्राओं को बसंत की तस्वीर दिखाई ,पर कही से सकारात्मक जवाब नहीं मिला ,चलते -चलते शाम हो गई थी संत राम बहुत थक गया था वो पटेल चेस्ट भवन के सामने ईसाई धर्म के चर्च से सटे क्रिश्चन कॉलोनी के बाहर एक पेड़ के निचे बैठ गया |रात के करीब 9 - 10 बज रहे होंगे ,छात्र -छात्राओं का आना जाना थोड़ा कम हो गया था आस पास के दुकान वाले और ठेले वाले भी अपनी दुकान समेट कर घर जाने की तैयारी कर रहे थे |संत राम को ये

Single User Licensed To sh_sharma77@yahoo.co.in. Any further distribution is Illegal. Ref. www.educreation.in

जगह रात गुजारने के लिए ठीक लग रही थी वह सोंच रहा था की थोड़ा और समय गुजर जाये ,लोगो का आना -जाना और कम हो जाये ,तो यही पेड़ के निचे सो जाऊंगा |उसने देखा एक आदमी दूर खड़ा ,बड़े गौर से उसे देख रहा है और थोड़ी देर रुकने के बाद धीरे -धीरे उसकी तरफ आ रहा है उसने पैजामा और लम्बा कुरता पहन रखा था उसकी उम्र करीब 35 -40 की होगी ,वो पास आकर बोला,कोई परेशानी है क्या ,अगर बता सकते हो तो बताओ ,हो सकता है मैं तुम्हारी कुछ मदद कर सकूँ | संत राम थोड़ी देर असमंजस में रहा और उसे देखता रहा ,फिर उसने पूरा वृतांत उसे सुना डाला |उसने उसी वक्त उसे मुखर्जी नगर पुलिस स्टेशन ले कर गया और बसंत के गुमशुदा की रिपोर्ट लिखवाई और संत राम को लेकर अपने घर आ गया ,कहा आज रात यही विश्राम करो सुबह चले जाना|(अमित ,"**तीन कप चाय**")|संत राम ने खाना खाया और रात अमित के घर पे ही विश्राम किया |पुलिस में रिपोर्ट लिखवाने के बाद वो थोड़ा खुश था क्यों की बसंत के मिलने की संभावना बढ़ गई थी |सुबह -सुबह वह वहाँ से निकल गया , जाते समय अमित ने संत राम को दिल्ली के कुछ जगहों के नाम बताये जहाँ पर बसंत के होने की संभावना हो सकती थी और आश्वासन लिया की ,अगर किसी भी प्रकार की जरूरत पड़े तो वो बेहिचक यहाँ आ जाये |संत राम रोज की तरह वहाँ से पैदल ही चलने लगा और जहाँ भी मौका मिलता लोगो को बसंत की तस्वीर दिखता और उसके बारे में पूछता ,परन्तु हर शख्स का एक ही जवाब होता था नहीं ,मैंने इसे कही नहीं देखा है |चलते -चलते संत राम कमला नगर पहुँच गया ,वहाँ से 100 नंबर की बस ली और दिल्ली के दिल कहे जाने वाली जगह ,कनाट प्लेस पहुँच गया |कहते है इस जगह का नामकरण ब्रिटेन के शाही परिवार के सदस्य ड्यूक कनाट के नाम पर रखा गया था कई वर्षो के बाद इस जगह का नाम बदल कर भारत के शाही परिवार के एक सदस्य के नाम पर रख दिया गया "राजीव चौक "|यहाँ शाम के

Single User Licensed To sh_sharma77@yahoo.co.in. Any further distribution is Illegal. Ref. www.educreation.in

वक्त घांसो पर बैठे कई प्रेमी युगल जोड़िया दिख जाएँगी और दोपहर के वक्त उन्ही घांसो पे लेटे कई बेरोजगार |इन पार्को और सीढ़ियों पर घूम -घूम कर चाय और चना बेचने वालो का घर इन्ही बेरोजगारों और प्रेमी युगलो से चलता है क्यों की ये दोनों यहाँ चाय के सहारे घंटो गुजारते है |कही -कही पे ज्योतिषचार्य किसी गरीब ,बेरोजगार या परेशान व्यक्ति की हस्त -रेखा पढ़ते दिख जायेंगे | हस्त रेखा दिखाने वाले को भविष्य में कुछ मिले या नहीं परन्तु ज्योतिषचर्य को कुछ दक्षिणा जरूर मिल जाती है,जिससे उनका घर परिवार का खर्च चलता है |संत राम ने ऐसा दृश्य अपने जीवन में कभी नहीं देखा था ,ये अनुभव उसके लिए बिलकुल नया था वह हर बैठे या घांस पे लेटे व्यक्ति के पास जाकर देखता की कही बसंत तो नहीं है और उसे न पाकर, वह बसंत की तस्वीर दिखता और उसके बारे में पूछता |दिन भर वो राजीव चौक के इर्द -गिर्द घूमता रहा बसंत को ढूंढता रहा ,शाम तक कुछ नहीं पता चलने पर वो पैदल एक दिशा में चलने लगा ,चलते -चलते अँधेरा हो गया था और सामने उसे खुला मैदान , भव्य ईमारत और एक विशाल दरवाजा दिखा ,जिसे इंडिया गेट कहते है |इस गेट का निर्माण अंग्रजो ने अपनी विजय घोष और भारतीय को खुश करने के लिए बनवाया , जब करीब 70000 भारतीय, अंग्रेजो के तरफ से लड़ते हुए प्रथम विश्वयुद्ध में शहीद हो गए थे| इस शहादत का किसी ने हिसाब नहीं माँगा ,हां ,हजारो की संख्या में शनिवार और रविवार को लोग यहाँ मौज -मस्ती और पिकनिक मानाने जरूर आते है |संत राम घंटो इस खुले मैदान और खुले आकाश के निचे घूमता रहा और बड़े ध्यान से लोगो के बीच बसंत को ढूंढता रहा परन्तु वो कही नहीं दिखा |सुबह से शाम तक इधर -उधर घूमते -घूमते संत राम थक गया था और वही घाँस पर एक पेड़ के निचे लेट गया और थोड़ी ही देर में वो गहरी नींद में सो गया |एक -दो घंटे के बाद जब उसकी नींद खुली तो उसके कानो में दो -तीन लोगो के बातें करने की आवाज आ रही थी उसने करवट बदल

Single User Licensed To sh_sharma77@yahoo.co.in. Any further distribution is Illegal. Ref. www.educreation.in

कर देखा तो एक मजदूर सा अधेड़ उम्र का आदमी दो बच्चों के साथ बैठ कर पैसो का हिसाब- किताब कर रहा है संत राम उठ कर बैठ गया और उनकी तरफ देखने लगा ,तभी उनमे से एक बच्चे ने आवाज लगाई, भाई साहब समोसे खाओगे,सारी बिक गई ,थोड़ी सी बची है |संत राम वहाँ से उठ कर उन तीनो के पास पहुँच गया और उनसे समोसे लेकर खाने लगा और खाते-खाते उन्हें अपनी वृतांत भी सुनाने लगा |सारा वृतांत सुनने के बाद उस आदमी ने अपना परिचय दिया और बताया की ये दोनों बच्चे मेरे पुत्र है वैसे तो मैं अपनी दुकान दूसरी जगह लगता हु परन्तु शनिवार और रविवार को यहाँ बहुत भीड़ होती है इसलिए यहाँ चला आता हु यहाँ बिक्री अच्छी हो जाती है(रामू,"**बारिश की बुँदे**") |रामू ने संत राम को बताया की जहाँ वह रहता है वहाँ बहुत सारी कम्पनिया और फैक्ट्री है जहाँ हजारो मजदुर काम करते है हो सकता है तुम्हारा भाई भी उन्ही फैक्ट्रियों में काम कर रहा हो |बसंत को ढूंढने संत राम कही भी जा सकता था रात भर उसी पेड़ के निचे सोया और सुबह -सुबह नोएडा के लिए निकल पड़ा| अगर मशीन युग के बारे में कभी आपने सुना है तो यक़ीनन यहाँ देखने को मिल जायेगा |सुबह -सुबह स्त्री और पुरुष की भीड़ निकलती है काम पे जाने के लिए ,अधिकतर लोग पैदल या साईकल पे और सबके हाथ में दोपहर के खाने का डब्बा |यही नजारा शाम का होता है जब ये दिन भर का काम कर के , वापस अपने-अपने घर लौटते है |संत राम फैक्ट्रियों के बाहर बने गार्ड रूम में जाकर बसंत की तस्वीर दिखाता और उसके बारे में पूछता ,हर जगह से बस यही जवाब मिलता ,नहीं ये आदमी यहाँ काम नहीं करता है |यह प्रक्रिया सुबह से शाम तक चलती रही परन्तु बसंत का कुछ पता नहीं चला |संत राम बहुत थक गया था एक चाय की दुकान पर बैठ कर चाय पिने लगा और बातो -बातो में चाय वाले को भी अपनी कहानी सुनाई और बसंत की तस्वीर दिखाई ,चाय वाला थोड़ी देर तक तस्वीर को देखता रहा फिर

Single User Licensed To sh_sharma77@yahoo.co.in. Any further distribution is Illegal. Ref. www.educreation.in

बोला लगता है इसे कही देखा है ये शब्द संत राम पिछले सात दिनों तक भटकने के बाद पहली बार सुना था उसकी सारी थकान दूर हो गई थी और उसमे एक नई ऊर्जा का संचार होने लगा था संत राम ने तुरंत पूछा कहा देखा है चाय वाले ने अपने भवों को सिकोड़ते हुए कुछ सोंचा फिर बोला ,कुछ ठीक से याद नहीं आ रहा है |संत राम काफी देर तक वही बैठा रहा की शायद चाय वाले को कुछ याद आ जाये|रात के 10 बज गए थे चायवाला अपनी दुकान समेटने लगा था संत राम उठ कर खड़ा हो गया और बोला,चलता हूँ भाई ,कल फिर आऊंगा ,कुछ याद आये तो बताना और दुकान से आगे की ओर बढ़ गया ,अभी थोड़ी ही दूर गया था की चायवाले ने पीछे से आवाज लगाई ,आवाज सुन कर संत राम तेज कदमो से चल कर वापस दुकान पे आ गया |चायवाले ने कहा ,मुझे लगता है की तुम्हारा भाई यही आस -पास किसी फैक्ट्री में काम करता है 5 -6 दिन पहले वो यहाँ चाय पीने आया था उसके बाद वो नहीं आया |चाय वाले की ये जानकारी संत राम के उत्साह को और बढ़ा दिया |बसंत के खोज में संत राम इधर -उधर भटकता रहा ,न सोने का ठिकाना ,न खाने पीने का ठिकाना ,जो मिला खा लिया ,जहाँ जगह मिली सो लिया ,कभी हृदय निराशा से भर जाती थी तो कभी थोड़ी सी भी जानकारी एक नया आस जगाती थी |आज चाय वाले के उसकी ये उदासी थोड़ी कम कर दी थी अब उसे ये पक्का यक़ीन हो गया था की बसंत इसी शहर में है और कही आस -पास ही है |चाय वाले ने बताया की जहाँ तक मुझे याद आ रहा है तुम्हारे भाई के साथ एक और आदमी था उसने अच्छे कपड़े और जूते पहन रखे थे देखने में ठीक -ठाक लग रहा था शायद किसी फैक्ट्री का सुपरवाइसर हो | दुकान बंद हो गई ,संत राम वही पास के एक पार्क में जाकर सो गया |सुबह उठ कर फिर वही काम में लग गया ,लोगो को तस्वीर दिखाना और बसंत के बारे में पूछना |संत राम उसी जगह के आस -पास घूम रहा था क्यों की चाय वाले की जानकारी के

Single User Licensed To sh_sharma77@yahoo.co.in. Any further distribution is Illegal. Ref. www.educreation.in

अनुसार बसंत कही आस -पास किसी फैक्ट्री में काम करता है या किसी के पास रुका हुआ है|

एक दिन जब संत राम एक फैक्ट्री के सामने से गुजर रहा था तो पीछे से एक आदमी ने उसे आवाज दी ,वो रुक गया और पीछे मुड़ कर देखने लगा ,एक आदमी ने इशारे से उसे अपनी तरफ आने को कहा ,जब संत राम उसके पास पहुंचा तो सबसे पहले उसने उससे फैक्ट्री के अंदर चलने का आग्रह किया |फैक्ट्री के अंदर वो संत राम को भोजनालय में ले गया और संत राम के लिए भोजन मंगवाया और कहा पहले खाना खा लो फिर आराम से बातें करेंगे |कई दिनों से संत राम ने ठीक से खाना नहीं खाया था वो इस प्रस्ताव को ठुकरा नहीं पाया |खाना ख़त्म हो जाने के बाद उस आदमी ने संत राम से कहा ,मैं पिछले तीन -चार दिनों से तुम्हे यहाँ से आते-जाते देख रहा हूँ तुम्हे देख कर ऐसा लगता है की तुम बहुत परेशान हो ,क्या बात है अगर संभव हो तो मुझे बताओ |संत राम ने पूरी कहानी सुना डाली |वो आदमी थोड़ा मुस्कुराया और बोला ,परेशान मत हो ,तुम्हारा भाई मिल जायेगा |मैं इस फैक्ट्री के मालिक का सहायक हूँ मालिक जब भी यहाँ आते है मैं भी उनके साथ आता हूँ | आज वो यहाँ से जा रहे है तो मैं भी उनके साथ चला जाऊंगा |इस फैक्ट्री में मेरे रहने के लिए एक छोटा सा कमरा है जब तक तुम्हार भाई नहीं मिल जाता है तुम रात में सोने के लिए इसका इस्तेमाल कर सकते हो ,मैं गार्ड को बोल दूंगा वो तुम्हे आने -जाने से नहीं रोकेगा ,वैसे तुम्हारा भाई बहुत किस्मत वाला है कि उसे तुम्हारे जैसा भाई मिला है जो उसे ढूंढने के लिए हजारो किलोमीटर दूर से इस अजनबी शहर में आ गया है वरना इस दुनिया में तो बाप को भी अपने बेटे कि परवाह नहीं होती है भाई तो बहुत दूर है (भगत ,"**छोटा भालू**")|

संत राम को अनजाने शहर में जैसे ईश्वर मिल गया हो ,वो दिन भर बसंत को इधर -उधर ढूंढता और रात में आकर भगत के कमरे में सो जाता |कई दिन इसी प्रक्रिया में निकल गई ,संत राम हर सुबह

Single User Licensed To sh_sharma77@yahoo.co.in. Any further distribution is Illegal. Ref. www.educreation.in

एक उल्लास और आशा के साथ घर से निकलता और शाम को हाथ में निराशा लिए घर वापस आ जाता |संत राम को रोज फैक्ट्री आते-जाते देख कर एक दिन एक गार्ड ने पूछा ,भाई आप भगत जी के सम्बन्धी हो क्या ,संत राम ने कहा नहीं और उसे यहाँ आने का कारन बताया |गार्ड बहुत आश्चर्य चकित हुआ की एक आदमी पिछले 15 दिनों से अपने भाई के तलाश में इधर -उधर भटक रहा है |गार्ड ने कहा मेरा एक जानने वाला उत्तम नगर में रहता है वहाँ भी रोजगार के तलाश में इधर -उधर से आये हुए बहुत सारे लोग रहते है |कल रविवार है कल ही उससे मिलने चलते है |सुबह -सुबह दोनों उत्तम नगर के लिए निकल गए |

उत्तम नगर के लिए आँख का अँधा और नाम नयनसुख वाला मुहावरा चरितार्थ होता है चारो तरफ गन्दगी, भीड़-भार,प्रदुषण और नाम है उत्तम |बस से उतरने के बाद ,गंदे नाले के बगल से एक पतली सी सड़क गुजरती है उस सड़क पर दोनों पैदल चल दिए ,कुछ दूर चलने के बाद छोटे -छोटे घरो की बस्ती शुरू हो जाती है जिसमे अधिकांश घरो की दीवारे नंगी है इनपर कोई प्लास्टर नहीं है कच्ची सडको के किनारे रेड़ी वालो का जमावड़ा है |महिलाये नगर निगम के पानी के टैंकर से पानी भरने के लिए एक कतार में खड़ी है और बच्चे घर से बाहर कच्ची सड़क पर खेलने में व्यस्त है |चलते -चलते गार्ड एक घर के आगे रुक गया , घर के निचले महले में एक नाइ की दुकान थी और पहले मंजिल पर उसका मित्र रहता था वो वही से अपने मित्र को आवाज लगाई ,उसका मित्र छत से झांक कर उसे देखा और ऊपर आने का इशारा किया ,हम नाइ के दुकान के बगल से ,ऊपर जाने वाली सीढ़ी से उसके कमरे में पहुँच गए |अभी गार्ड का मित्र अकेला था परन्तु उसने बताया की उसके साथ चार लोग और रहते है जो अभी काम पे गए हुए है |गार्ड के मित्र ने हम लोग का स्वागत बड़े जोर -शोर से किया ,पहले गरमा -गरम चाय पिलाई ,थोड़ी देर बाद अपने हांथो से बना कर खाने में चावल ,दाल और

Single User Licensed To sh_sharma77@yahoo.co.in. Any further distribution is Illegal. Ref. www.educreation.in

आलू -गोभी की सब्जी खिलाई |इसी दौरान गार्ड ने मेरी पूरी कहानी अपने मित्र को बताई ,पूरी कहानी सुनाने के बाद वो निराश हो कर बोला,इस भीड़ में जो खो गया उसका मिलाना बहुत मुश्किल है इस महानगर में एक इंसान को कैसे ढूंढोगे |तुम्हारा भाई विवाहित है या अविवाहित ,संत राम ने बोला अविवाहित ,अभी उसकी उम्र 19 -20 की होगी |गार्ड के मित्र ने कहा तो फिर माता -पिता या तुमने कुछ कहा था संत राम ने थोड़ा संकोच करते हुए कहा ,घर में जहा चार बर्तन होती है वहाँ बर्तन टकराने की आवाज आती ही है |गार्ड के मित्र ने थोड़ा मुस्कुराते हुए कहा , घर में बर्तन के टकराने से जो आवाज आती है उससे कोई फर्क नहीं पड़ता परन्तु जब बर्तन के टकराने से कोई बर्तन टूट जाती है तो इससे बहुत फर्क पड़ता है |अगर तुम्हारा भाई जोश में अपने घर -बार को छोड़ कर यहाँ पैसे कमाने आया है तो ये शहर मिरगमरीचका है यहाँ धन दीखता तो है परन्तु मिलता नहीं है मैं भी यहाँ धन कमाने आया था ,वर्षो गुजर गए और आज जो स्थिति है वो तुम्हारे सामने है (मनोहर "**परचित-अपरचित"**)|

देर रात संत राम वापस फैक्ट्री आ गया ,आज वो बहुत निराश और अस्वस्थ भी महसूस कर रहा था |सुबह जब संत राम की नींद खुली तो वो बिस्तर से उठने में असमर्थ था उसका पूरा शरीर ज्वर से काँप रहा था और सर दर्द से फटा जा रहा था वो फिर सो गया |अबकी बार जब उसकी नींद खुली तो शाम हो चुकी थी उसने खिड़की से झांक कर देखा , फैक्ट्री के मजदुर अपना काम ख़त्म कर के वापस घर जा रहे थे | ज्वर ने संत राम के शरीर को इतना कमजोर कर दिया था की वो कमरे से निकल कर खाना और दवा लाने में भी असमर्थ था वो पास में रखे पानी के बोतल से पानी पिया और फिर बिस्तर पे लेट गया |आँखों के सामने तरह -तरह के चल चित्र आ रहे थे कभी बसंत ,कभी पत्नी ,कभी अम्मा

Single User Licensed To sh_sharma77@yahoo.co.in. Any further distribution is Illegal. Ref. www.educreation.in

और कभी बाबूजी |धीरे -धीरे उसकी आँखे बंद होने लगी और वो गहरी नींद में सो गया |तीन दिन हो गए थे संत राम ,बसंत को ढूंढने कही बाहर नहीं गया ,फैक्ट्री के अंदर ही भोजनालय में खाना खाता और कमरे में जाकर सो जाता |वो निराश और हताश भी हो गया था उसकी मानसिक और शारीरिक स्थिति दोनों ही ख़राब हो गई थी जो पैसे वो लेकर आया था वो पैसे भी अब ख़त्म हो चले थे |उसके मस्तिष्क में अब नकारात्मक सोंच उत्पन्न होने लगी थी उसे ऐसा महसूस होने लगा था की वो यहाँ से अकेले ही वापस घर जायेगा ,इन सब के बावजूद दिल कह रहा था की थोड़ी और कोशिश कर लो |आज संत राम थोड़ा स्वस्थ महसूस कर रहा है शाम को वो अपने कमरे से बाहर निकला और घूमते -घूमते चाय वाले के पास पहुँच गया और एक चाय लेकर पिने लगा |शाम का वक्त था दुकान पर काफी भीड़ थी फैक्ट्रियों से निकल कर लोग चाय पी रहे थे और थोड़े तरो-ताज़ा होकर घर जाने की तैयारी कर रहे थे |संत राम घंटो दुकान पर बैठा रहा और इधर -उधर देखता रहा |जब वो जाने के लिए उठा तो चाय वाले की नजर उसपे पड़ी,उसने पूछा क्या बात है बहुत दिनों से इधर आये नहीं ,संत राम ने कहा ,तबियत ख़राब हो गई थी इसलिए कमरे पर ही रहता था |चाय वाले ने कहा मैं तुम्हे ही ढूंढ रहा था संत राम ने कहा क्या बात है चाय वाले ने कहा तुम्हारे भाई को जिस आदमी के साथ मैंने देखा था वो दो -तीन दिन पहले यहाँ आया था संत राम की दोनों काने खड़ी हो गई और अपलक उसकी तरफ देखने लगा |चाय वाले ने कहा मैंने उसे तुम्हारे बारे में बताया ,उसका नाम अश्वनी है (अश्वनी ,"**अधूरी शाम** "),इस कागज पर उसने अपना पता लिख दिया है और तुम्हे मिलने को कहा है |एक ही पल में संत राम की सारी निराशा आशा में बदल गई ,पिछले चार -पांच दिनों में ज्वर ने उसके शरीर का जो नुकसान किया था चाय वाले की बात सुन कर सब की भरपाई हो गई |संत राम ने चाय वाले से कागज के टुकड़े पर लिखे पते की जानकारी ली और

Single User Licensed To sh_sharma77@yahoo.co.in. Any further distribution is Illegal. Ref. www.educreation.in

दूसरे दिन ही सबेरे -सबेरे महरौली पहुँच गया |बस से उतरते ही संत राम के सामने क़ुतुब मीनार था जो अपने ऊंचाई के लिए जाना जाता है परन्तु अब ये नोएडा और गुरुग्राम के बहुमंजिले इमारतों के सामने बौना सा दिख रहा था |हजारो मंदिरो -मठो को तोड़ कर,सैकड़ो पुस्तकालयों में आग लगाकर ,हजारो निर्दोष लोगो के क़त्ल के बाद जिन बादशाहो ने अपनी कामयाबी का परचा लहराने के लिए इस ईमारत को बनवाया था अगर आज वो होते तो उन्हें बहुत दुःख होता कि आज क़ुतुब मीनार का कद बौना कैसे हो गया |संत राम अश्वनी का पता पूछते हुए ,पतली -पतली गलियों से गुजरता हुआ सब्जी मंडी के पास पहुँच गया ,कागज के टुकड़े पर लिखे पते के हिसाब से अश्वनी का घर यही आस पास है |थोड़ी दूर इधर -उधर भटकने के बाद अंततः वो अश्वनी के घर पे पहुँच गया |संत राम ने अश्वनी को अपना परिचय दिया और यहाँ आने का कारण बताया|अश्वनी ने संत राम को आदर सम्मान के साथ बिठाया और चाय -पानी के लिए पूछा |अश्वनी ने मुस्कुराते हुए कहा आपका यहाँ तक पहुँचाना एक चमत्कार के सिवाए कुछ भी नहीं है वैसे मैं चमत्कार में विश्वास नहीं करता हूँ परन्तु आपको देख कर अब विश्वास करना पड़ेगा |अपने परिवार के लिए समर्पण में मेरा पूरा विश्वास है और आपने इस विश्वास को और अधिक बल प्रदान किया है आपसे मिलकर मुझे बहुत ख़ुशी हुई कि आप जैसे लोग अभी भी समाज में है ,बोलते -बोलते अश्वनी अपनी भावनाओ पे काबू नहीं रख पाया और उसकी आंखे भर आई |थोड़ी देर शांत रहने के बाद अश्वनी ने कहा ,करीब एक महीने पहले बसंत मुझे ट्रेन में मिला था कुछ टिकट चेकर उससे टिकट मांग रहे थे उसके पास टिकट नहीं था टिकट न होने पर उन लोगो ने बसंत को जुर्माना देने के लिए कहा परन्तु उसके पास जुर्माना देने के लिए पैसे भी नहीं थे फिर क्या था उन लोगो ने उसकी खूब झार-फटकार लगाई और साथ चलने को कहा ,मैं भी ट्रेन के उसी डब्बे में था और ये सारा नजारा देख

Single User Licensed To sh_sharma77@yahoo.co.in. Any further distribution is Illegal. Ref. www.educreation.in

रहा था |बसंत के चहरे को देख कर मैं ये समझ गया था कि ये किसी मुसीबत का शिकार है ,टी.टी ने उसे दो चार थप्पड़ भी मारा था जिससे वो बहुत डरा हुआ था |मैंने टी.टी से बात कि और उसका जुर्माना भर दिया और उसे अपने साथ ले आया |जब मैंने बसंत से बिना टिकट के ट्रैन में यात्रा करने का कारण पूछा तो थोड़ा संकोच करते हुए उसने सबकुछ बता दिया |मैंने उसे कई बार घर वापस जाने के लिए कहा पर उसने मेरी बात नहीं मानी ,थोड़ा ज़िद्दी प्रवृति का लड़का है |संत राम ने इधर -उधर देखते हुए पूछा अभी वो कहा है अश्वनी ने कहा काम के लिए पहले उसे मैं अपनी कंपनी में ले गया परन्तु वहाँ कोई बात नहीं बनी,इसके बाद आस पास के कई फैक्ट्रियों में कोशिश कि पर कही जगह खाली नहीं थी |अंत में मेरा एक जानने वाला यही पास के सब्जी मंडी में व्यापार करता है वही बसंत को पैसे के हिसाब -किताब में रखवाया है |सुबह जाता है और शाम के 7 -8 बजे तक वापस आ जाता है सप्ताह में सातो दिन का काम है कोई छुट्टी नहीं होती है इसलिए आज रविवार को भी काम पे गया हुआ है शाम में आ जायेगा |संत राम के ख़ुशी को शब्दों में व्यक्त करना मुश्किल है |संत राम ने अपने दोनों हांथो को जोड़ कर अश्वनी को धन्यवाद दिया और बोला,मैं जीवन भर आपके इस एहसान का ऋणी रहूँगा | शाम के 6 -7 बज गए थे , संत राम पास के एक दुकान से कुछ मिठाईया ले आया और अश्वनी से कहा अगर आप बुरा न माने तो आज का खाना मैं बनाऊ ,अश्वनी ने कहा जैसी आपकी मर्जी |अश्वनी अकेला रहता था और अपना खाना पीना खुद बनाता था |संत राम रसोई में खाना बनाने की तैयारी करने लगा ,संत राम को अच्छा खाने और अच्छा खाना बनाने का बहुत शौक़ था ,अपने घर में भी जब वो खुश होता तो अपनी पत्नी या माँ को रसोई से बाहर कर देता और खुद खाना बनाने में लग जाता और बसंत उसकी इस कार्य में मदद करता |संत राम रसोई में था तभी उसके कानो में बसंत की आवाज आई,वो अभी -अभी आया था

Single User Licensed To sh_sharma77@yahoo.co.in. Any further distribution is Illegal. Ref. www.educreation.in

और बरामदे में बैठ कर अश्वनी से बातें कर रहा था |शायद अश्वनी ने बसंत को संत राम के बारे में कुछ नहीं बताया था थोड़ी देर बाद वो बसंत को लेकर रसोई घर में आ गया , संत राम की आंखे आंसुओ से भरी हुई थी ,बसंत संत राम को देख कर भौच्चका रह गया ,वो क्या प्रतिक्रिया करे उसे समझ नहीं आ रहा था वो अपने सर को झुका कर संत राम के सामने शांत खड़ा हो गया ,संत राम ने उसे गले से लगा लिया ,दोनों के आँखों से अश्रु धारा बहने लगी |उस रात तीनो ने साथ खाना खाया और ढेर सारी बातें की ,अगले दिन सुबह -सुबह दोनों अपने घर के लिए रवाना हो गए |

इस शहर में संत राम की मुलाकात जिन लोगो से हुई उसकी उसने कभी कल्पना भी नहीं की थी सबने अपनी -अपनी तरह से उसकी मदद की |ये सारे पात्र एक दूसरे से कोसो दूर है परन्तु एक घटना ने इन सब को एक सूत्र में बांध दिया ,ठीक उसी सप्तर्षि के तारों की तरह जो एक दूसरे से कोसो दूर है परन्तु सदियों से एक साथ है और इसी साथ रहने के वजह से हर शाम कोई न कोई माँ इसे आकाश में ढूंढती है और अपने बच्चो को दिखाती है देखो ये है सप्तर्षि के तारे|

****

Single User Licensed To sh_sharma77@yahoo.co.in. Any further distribution is Illegal. Ref. www.educreation.in

सप्तर्षि के तारे

शैलेश कुमार शर्मा का जन्म स्थान पटना(बिहार) ,महेन्द्रू ,चौधरी टोला है। इनकी शिक्षा –दीक्षा दिल्ली से हुई और वर्तमान में ये यही सूचना तत्र(आईटी) के क्षेत्र में कार्यरत है। लेखन के साथ –साथ इनकी रूचि संगीत में भी रही है और इन्होने भारतीय शास्त्रीय संगीत में संगीत विशारद की उपाधि भी हांसिल की है। ये अपनी पुस्तक शैलेश कुमार के नाम से लिखते है।

लेखक से संपर्क के लिए :
sh_sharma77@yahoo.co.in

Also available as an eBook
FICTION
ISBN 978-93-88719-36-0
9 789388 719360 >

EDUCREATION
PUBLISHING
www.educreation.in

Single User Licensed To sh_sharma77@yahoo.co.in. Any further distribution is Illegal. Ref. www.educreation.in